* ओ३म् *

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

2622

सन्देश ग्रन्थमाला का तृतीय पुष्प

भारतीय संस्कृति और गाय

गावः सर्वे सुखप्रदाः
(गायें सबको सुख देने वाली हैं)

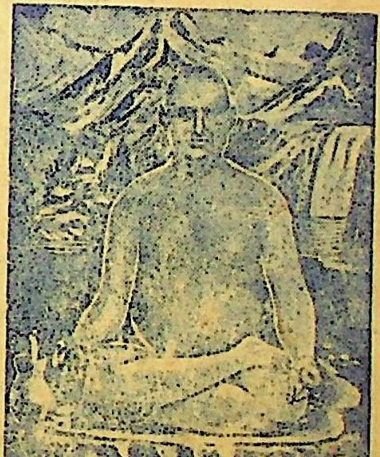

गावो विश्वस्य मातरः
(गायें विश्व की मातायें हैं)

"गावः प्रतिष्ठा सर्वभूतानाम्"

लेखक :

नैष्ठिक ब्रह्मचारी बलदेव जी महाराज

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल

जिला मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) भारत

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

मूल्यम् १-३०

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विशेष धन्यवाद

संसार के प्राय. सभी काम पैसे से पूरे होते हैं। इस पुस्तक-माला का प्रकाशन भी बिना द्रव्य [illegible] भव था। संदेश-ग्रन्थमाला के प्रकाशन के लिये अनेक धर्म-प्रे[illegible] [illegible]ुभावों से हमें सहयोग प्राप्त हो रहा है—इसी कारण से यह [illegible]वपूर्ण कार्य हम प्रारम्भ कर सके हैं। कुछ महानुभाव इस संदेश ग्रन्थ माला के १०१) शुल्क देकर आजीवन सदस्य बन चुके हैं और कुछ महानुभाव सात्विक दान देकर इस पुण्य-कार्य में हाथ बटा रहे हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ श्री मान्यवर चौधरी ओङ्कार सिंह जी अध्यक्ष 'उद्यान विज्ञान विभाग' लखावटी कालिज ने १०१) पवित्र दान दे कर सहायता की है। आप धर्म में विशेष श्रद्धा रखते हैं और आप का सारा ही परिवार कर्तव्य-पालन में आदर्श-रूप है। धार्मिक कार्यों में इस परिवार का अनुपम अनुराग अनुकरणीय है।

इस पावन सहयोग के लिए मैं इनका अत्यधिक आभारी और विशेष धन्यवाद करता हूं। भक्त-वत्सल भगवान से इनकी सुख शान्ति की कामना करता हूं। श्री चौधरी ओङ्कार सिंह जी के साथ-साथ अन्य लखावटी-परिवार का भी आभारी हूं और सब का विशेष धन्यवादी हूं।

—बलदेव नैष्ठिक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

❀ ओ३म् ❀

न्देश ग्रन्थमाला का तृतीय पुष्प

भारतीय संस्कृति और गाय

श्री इलमच

पू

गावो विश्वस्य मातरः

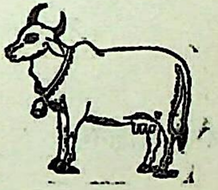

लेखक :

ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक
वैदिक योगाश्रम,
शुक्रताल (मुजफ्फरनगर)

[मूल्य १-३

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

इतो जयेतो वि जय, संजय जय, स्वाहा ।" अथर्व०

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्थ—इधर जय पा, उधर विजय पा, कमाल की विजय प्राप्त कर, सर्वत्र विजयी हो । शाबाश !

प्रथम संस्करण	२ भव था । ियां
सृष्टि संवत्	१९७२९४९०७०
दयानन्दाब्द	१४५
विक्रमाब्द	२०२६
दिसम्बर	१९६९

सर्वं स्वत्वं सुरक्षितम्

मूल्यम् १-३०

झंकार प्रेस,
मुजफ्फरनगर
में मुद्रित ।

पुस्तक प्राप्ति-स्थानम्—
वैदिक योगाश्रम, पो० शुक्रताल
जिला मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।
Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
तन्निमित्तो वरं त्यागो विनाशे नियते सति॥

वैदिक योगाश्रम, शुक्रताल

के

साहित्य प्रकाशन निधि के आजीवन सदस्य

१–श्री इलमचन्द जी आर्य, रसूलपुर १०१)

२–श्री महाशय फूलसिंह जी सरपंच, निरगाजनी १०१)

३–श्री चौ० पद्म सिंह जी, बसेड़ा १०१)

४–श्री प्राणनाथ जी लाम्बा, रामराज १०१)

५–श्री मास्टर रघुवीर सिंह, जी मदीना दांगी (रोहतक) १०१)

६–श्री चौ० आसाराम जी, रसूलपुर १०१)

७–श्री रोहतास सिंह जी, भोकरहेड़ी १०१)

८–श्री चौ० अमरसिंह जी, भोकरहेड़ी १०१)

९–श्री मोहकम सिंह जी, निरगाजनी १०१)

१०–श्री बलजीत सिंह जी प्रधान, चून्सा १०१)

११–श्री धर्मवीर जी सुपुत्र चौ० जगत सिंह जी, आर्य सत्संग मण्डल, बसेड़ा १०१)

१२–श्री संसार सिंह जी, बसेड़ा १०१)

१३–श्री समय सिंह जी; बसेड़ा १०१)

१४–श्री रणवीरसिंह जी S.D.O., टण्ढेड़ा, सुपुत्र चौ० जिले सिंह १०१)

१५–श्री महाशय होशियार सिंह जी, शोरों १०१)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	प्रष्ठ संल[illegible]
१	गोमाता को प्रणाम	
२	महत्वपूर्ण सन्देश	
३	वेद में गाय का महत्त्व	
४	वेद में गौ-वध निषेध	
५	वेद में गौ-महिमा	
६	वेद में गौ-शाला का वर्णन	
७	गो-पालन में सावधानी	
८	गो-दान से भारी लाभ	
९	राजा का कर्त्तव्य	
१०	मातृ-भूमि में गौओं का निवास हो	
११	उपनिषदों में गाय का स्थान	
१२	छान्दोग्योपनिषद् की एक कथा	
१३	सत्यकाम की कथा	
१४	राजा जनक ने महर्षि याज्ञवल्क्य को एक हजार गौएं दान में दीं	
१५	वाजश्रवस ऋषि का सर्वमेध यज्ञ	
१६	महाराजा दिलीप की गो-सेवा	
१७	भगवान राम और गौ	
१८	ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा कामधेनु की स्तुति	
१९	शंकर जी द्वारा सुरभि स्तवन	
२०	मनुस्मृति में गाय की महिमा	

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
२१	मांस का निषेध	३५
२२	महाभारत में गाय का महत्त्व	३५
२३	महाभारत में गौ–वध निषेध	३६
२४	अज्ञातवास के लिये वन में जाते हुए सहदेव की घोषणा	३७
२५	महर्षि का मूल्य–गौ	३८
२६	गाय को दान में देना धर्म और बेचना पाप	४०
२७	भगवान कृष्ण और गोमाता	४५
२८	पुराण और गौ	४७
२९	पद्म पुराण-गौशाला कैसी हो ?	४८
३०	बौद्ध धर्म और गौ माता	५१
३१	भगवान बुद्ध और गौ माता	५१
३२	धनञ्जय सेठ और गोदान	५४
३३	सम्राट अशोक के समय में गाय	५५
३४	गुप्त वंश और गाय	५६
३५	शातवाहनों के गौ सम्बन्धी लेख	५७
३६	जैन धर्म और गौ धर्म	५८
३७	ईसाई धर्म और गौ रक्षा	६०
३८	गाय और इस्लाम	६२
३९	बाबर और गाय	६५
४०	हुमायूं को गो-मांस से घृणा	६५
४१	अकबर का गौ-प्रेम	६६
४२	जहांगीर और गौ-पालन	६९
४३	बहादुर शाह और गाय	६९
४४	बादशाह हैदर अली का गाय प्रेम	७०
४५	कबीर और गाय	७०

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
४६	शिवाजी की गो-भक्ति	७१
४७	सिक्ख सम्प्रदाय में गो-रक्षा	७१
४८	विदेशियों की दृष्टि में गाय	७२
४६	अंग्रेजों का गौ-संहार और महर्षि दयानन्द का शुभ आगमन	७८
५०	महर्षि का गोवध रुकवाने का प्रयत्न	७६
५१	गोकरुणा निधि का निर्माण	८२
५२	ऋषि का ईश्वर को उपालम्भ	८४
५३	ऋषि वचनामृत	८४
५४	महात्मा गांधी और गौ-रक्षा	८५
५५	महामना मदनमोहन जी मालवीय का गौ-प्रेम	८७
५६	श्री विनोबा भावे के विचार	८७
५७	गोविन्द वल्लभ जी पन्त का सन्देश	८७
५८	डा. राजेन्द्र प्रसाद की गौ के प्रति श्रद्धा	८८
५६	कांग्रेस और गौ-रक्षा	८८
६०	काग्रेस और गौ-वध	८६
६१	गो-मेध का सच्चा अर्थ	६०
६२	स्वर्ण भूमि श्मशान बन जायेगी (पद्य)	६३
६३	गो-गीत (पद्य)	६३
६४	आयुर्वेद और गौ माता—गो-दुग्ध अमृत है	६४
६५	गो दुग्ध के दश गुण	६५
६६	धारोषण के गुण	६७
६७	गो-दुग्ध चिकित्सा	१००
६८	गो-घृत चिकित्सा	१०२
६६	गोमय चिकित्सा	१०६

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
७०	गो-मूत्र के लाभ	१०८
७१	गाय की दही का उपयोग	११२
७२	तक्र की महिमा	११४
७३	एक अद्भुत योग—पंच-गव्य	११६
७४	दूध घी का भाव—प्राचीन काल से आज तक	११७
७५	गो–गरिमा (गद्य)	११६
७६	बन्दे–गो मातरम् (पद्य)	१२१
७७	भारतीय संस्कृति और गो माता की रक्षा का अभियान	१२१
७८	वैदिक योगाश्रम शुक्रताल का परिचय	१३१

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वैदिक योगाश्रम, शुक्रताल,

का

मासिक पत्र

"संस्कृति संदेश"

धर्म की जागृति के लिये आश्रम से

संस्कृति-सन्देश

नामक मासिक पत्र

प्रकाशित होता है।

इसका लक्ष्य है

राष्ट्र का उत्थान और भ्रष्टाचार उन्मूलन

पत्र का वार्षिक मूल्य

केवल ५-०० रुपये मात्र है

आप भी

संस्कृति-संदेश

के ग्राहक बनें

तथा अपने मित्रों को भी इसका ग्राहक बनायें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

—: गौ माता को प्रणाम :—

—: ० :—

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः।
बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नमः॥

यया द्यौर्यया पृथिवी ययाऽऽपो गुपिता इमाः।
वशां सहस्रधारां ब्रह्मणाच्छावदामसि॥
(अथर्व वेद १०।१०।१,४)

हे अवध्य गौ! उत्पन्न होते समय नमस्कार और उत्पन्न होने पर भी तुम्हें प्रणाम! तुम्हारे शरीर, रोम और खुरों को बार-बार प्रणाम। तुम्हारे द्वारा द्यौ (द्युलोक), पृथ्वी लोक और अन्तरिक्ष लोक की रक्षा होती है, पवित्रता होती है—इसलिए आपको प्रणाम। आप सहस्र धाराओं से माता के समान हमें दुग्धामृत का पान कराती हैं—अतः हम सब मिलकर आपका स्तवन करते हैं। बार-बार प्रणाम करते हैं—

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्यः एव च।
नमो गोवत्सेभ्यश्च नु पवित्राभ्यो नमो नमः॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

महत्वपूर्ण सन्देश

भारत कृषि प्रधान देश है। यही कारण है कि गोवंश की उन्नति भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अङ्ग है। धार्मिक दृष्टि से भारतीय संस्कृति में गाय हमारी माता के समान है। परन्तु आज भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान की ओर मानव प्रगतिशील है। इस कारण से वह सब धर्म प्रथाओं को यह कहकर टाल देता है कि मनुष्य की सब आवश्यकताओं को विज्ञान पूरी कर रहा है, फिर यह धर्म की दुहाई क्यों! परन्तु इन बेचारे भौतिक चश्माधारियों को यह पता नहीं कि धर्म किसे कहते हैं और विज्ञान किसे! केवल विज्ञान की रट लगा रखी है और मनचाही कर रखी है। प्रिय भौतिकवादियो! विज्ञान और धर्म का चोली-दामन के समान परस्पर घनिष्ठ सन्बन्ध है। धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक सभी दृष्टियों से गाय का प्रमुख स्थान है।

आज सब वैज्ञानिक मुक्त-कण्ठ से स्वीकार कर चुके हैं कि "Cow milk is the root of beauty."

गाय का दूध सौन्दर्य प्रदान करता है।

दूध ही एक मात्र पदार्थ है जो सब पौष्टिक द्रव्यों से परिपूर्ण है और जिसे हम पूर्ण भोजन कह सकते हैं।' (रोसेनो)

गो दूध में १०१ पदार्थ उचित रूप में सम्मिलित हैं।

आज हमने बम्ब बनाना, राकेट बनाना, आलीशान मकान बनाना और पैसा कमाने के तरीकों को ही विज्ञान का नाम दे रखा है। इस निरे भौतिकवाद ने ही भारत का सत्यानाश कर डाला। एक समय था जब इस देश में दूध की सरिताएं बहती थीं। तब सब बलवान और सतेज होते थे, परन्तु आज दूध और घी के अभाव में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
भारत की आयु सब देशों से कम हो गई, स्वास्थ्य नष्ट हो गया, चेहरे मुर्झा गये, उठते बैठते अंधेरी छाने लगी और भारत की नैया मृत्युपथ की ओर दिन रात प्रस्थान करने लगी है। सड़कें बनीं, पुल बने, बांध बंधे, कोठियां बनीं, रेल गाड़ियां भी बन गईं—परन्तु जिस मनुष्य के लिये ये सब चीजें बनीं वह विगड़ गया। शोक ! वह न बना !

अब हमें अपनी रक्षा के हेतु गोरक्षा-क्रान्ति के अभियान को सफल करना होगा। हमारे राष्ट्र का जीवन गो माता पर अवलम्बित है। गोमाता सुखी तो राष्ट्र सुखी, गौ की हत्या तो राष्ट्र की भी हत्या। महर्षि वशिष्ठ के वे शब्द जो लाखों वर्ष पहले इक्ष्वाकु वंश के सौदास राजा को कहे गये थे, हमें स्मरण रखने की आज महती आवश्यकता है—

गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गवास्ततो वयम्॥

अर्थ नित्य मैं गौओं को देखूं और गौएं मेरी ओर देखें। गौएं हमारी हैं और हम गौओं के हैं। गौएं हैं—इसी से हम भी जीवित हैं।" गौएं न हों तो हम लोग भी नहीं हैं—यह बात भारत की वर्तमान आर्थिक, राजनीतिक, आयु-आरोग्य-बल-तेज सम्बन्धी सर्वविधि दुर्गति से सबके सामने स्पष्ट है। वास्तव में गौमाता सुखों की खान है। अमृतवर्षा करके सबको आनन्द विभोर करती है। 'गावो विश्वस्य मातरः' समस्त विश्व की माता गाय है। अतः वेद के शब्दों में, हे मात ! हम आप से प्रार्थना करते हैं—'मया गावो गोपतिना सचध्वम्' (अथर्व०) हे गो माताओ ! मुझ गोपति से सदा आलिङ्गन करो।

भारत में गाय एक साधारण दूध देने वाला पशु ही नहीं माना जाता अपितु करोड़ों भारतीय इसे माता के नाम से पुकारते हैं। केवल भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी विधर्मी भी गाय को एकमात्र अपनी पूजा का स्थान समझते हैं। भारतीय संस्कृति में तो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गौ को अत्यन्त महत्वपूर्ण और अतीव आदरणीय समझा जाता है और सृष्टि के प्रभात से ही उसे यह स्थान प्राप्त रहा है। संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद से लेकर अद्य पर्यन्त के समस्त साहित्य के अन्दर गाय अपना विशिष्ट स्थान रखती है। गोरक्षा में आस्था न रखने वाला हिन्दू हिन्दू नहीं कहला सकता, इस प्रकार की दिव्य भावना भारतीयों के मस्तिष्क में भरी हुई थी और है। उसी का परिणाम आज भी हमें अपने घरों में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। वह क्या ? जिस समय भोजन बनता है उस समय गृहदेवियां गौ के लिए प्रथम रोटी निकालना अपना पवित्र और धार्मिक कर्तव्य समझती हैं। भारत की साधारण जनता और सब महापुरुष गौ की सेवा और रक्षा करते आये हैं। गो सेवा के कारण हमारा राष्ट्र बलवान और बुद्धिवान् था। आज गोवंश के ह्रास के कारण से ही देश का स्वास्थ्य गिरता जा रहा है।

गौ हमें दूध देती और माता के समान हमारा पालन-पोषण करती है। अमृत पिला कर पीढ़ी दर पीढ़ी योग क्षेम सिद्ध करने में हमें समर्थ बनाती है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त, अपने दूध, घृत, दही, मूत्र, गोबर, हाड़, चर्म इत्यादि से मनुष्य समाज का अमित उपकार करती है। भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण भी गाय का अत्यधिक ऋणि है। गाय के पुत्र बैल हमें अन्न उत्पन्न करने के लिए अवश्य चाहिएं। बैल हमारी जीविका का आधार स्तम्भ है। वास्तविकता यह है कि गाय के बिना हमारा राष्ट्र एक मिनट भी जीवित नहीं रह सकता।

आज पाश्चात्य संस्कृति ने इस पावन देश का सत्यानाश करके रख दिया है। हम विदेशियों की भोगवादी सभ्यता में बुरी तरह से फंस चुके हैं हमारी त्याग-तप की सब पावन मर्यादाएं नष्ट भ्रष्ट हो रही हैं। आधुनिक सभ्यता के चक्कर में देश के नवयुवक और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नवयुवतियां अपने चरित्र से पतित हो चुके हैं और रंगरेलियों में मस्त हैं। देश के भावी निर्माता बालक इन्द्रियों और विषयों के गुलाम होकर अवारा हो चुके हैं। फैशन के अतिरिक्त इन्हें और कुछ भी अच्छा नहीं लगता। जिधर देखो उधर शृङ्गार—फैशन का बाजार गर्म है। गोमाता, आर्यत्व, आस्तिकता, धर्म, सदाचार, त्याग तप, शिखा-सूत्र आदि ऋषियों की पावन परम्पराएं लुप्त कर दी गई हैं। परन्तु जिस आधुनिक सभ्यता के बट्वे को इन्होंने अपनाया है—वह अन्दर से खोखला है। एक विद्वान इन्हीं की भाषा में लिखता है—

"Our young men and women have adopted this western civilization like a gifted purse without seeing it. This is a goudy purse but empty inside."

अर्थात् आधुनिक सभ्यता को हमारे नवयुवक नवयुवतियों ने इस प्रकार से बिना देखे धारण किया है मानों इन्हें कोई इनाम का बट्वा मिला हो। आगे विद्वान लिखता है कि यह आधुनिक सभ्यता का बट्वा ऊपर से तो तड़कीला भड़कीला और रोचक है–परन्तु यह बट्वा अन्दर से बिल्कुल खाली है।

आज का नवयुवक बाल बना कर, मुख पर क्रीम, पाऊडर, सैंट स्नो लगा कर, ओठों पर लिपस्टिक पोत कर, हाथ में घड़ी बांध कर, तन पर पैंट-बूशर्ट सजाकर, पैरों में जुराब बूट पहन कर जब बाजार की प्रदर्शनी में अपनी सुन्दरता को दिखाने चलता है तो लोग कहते हैं कि माडल बहुत सुन्दर है। परंतु समझदार लोग यह भी कहते हैं कि माडल ऊपर से तो सुन्दर और आकर्षक है परन्तु अन्दर से बिल्कुल खाली है। आज के नवयुवक के अन्दर न बल है, न शक्ति है, न सदाचार है और न किसी में आस्तिकता है। कपड़े निकालने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पर बाबू जी का निचोड़े हुए नीबू के समान चेहरा, अस्थि-पिञ्जर-मात्र पीला दुर्बल शरीर निकलता है। ऐसा हो भी क्यों न! बीड़ी सिगरेट, सांग, सिनेमा, थियेटर, डांस, रेडियो के गाने, मद्य, मांस, अण्डे, चाय, मिर्च मसाले, और काम वासना का दूत फैशन इनके प्यारे विषय हैं। इस प्रकार युवक वर्ग कामी और विषयी होकर भ्रष्टाचार की ज्वाला में जल रहा है। करोड़ों की जवानियां जल गईं, करोड़ों की जल रही हैं और करोड़ों की जलेंगी। पता नहीं देश-वासियों को कब होश आयेगी!

हमने कभी यह सोचने का कष्ट नहीं किया कि जिन विदेशियों की नकल हम करने लगे हैं–वे क्या हैं ? क्या उनको शांति है? क्या वे सदाचारी हैं? हमारे से उनका कौनसा आदर्श उत्तम है ? वैदिक संस्कृति के सामने उस संस्कृति की कोई सत्ता है क्या? पाश्चात्य संस्कृति के वारे में चीन का नेता सनयात सेन कहता है कि "पाश्चात्य सभ्यता द्वारा संसार में शांति स्थापित नहीं हो सकती और न किसी देश की वास्तविक उन्नति हो सकती है क्योंकि उस सभ्यता के अन्तस्तल में हिंसा तथा स्वार्थ की लहरें उठा करती हैं और यही लहरें आगे चल कर देश के सत्यानाश का कारण होती हैं।"

पाश्चात्य संस्कृति की पोल वहां के विद्वानों ने स्वयं खोल कर रखदी है। अमेरिका के प्रसिद्ध जज लिंड्से कहते हैं कि "चौदहवें वर्ष में पहुंचने से पहले ही दस में से एक अमेरिकन अविवाहिता लड़की गर्भवती हो जाती है।"

पैरिस के बारे में भी कहा गया है "वहां ७५ हजार वेश्याएं रजिस्टर्ड हैं और इससे कई गुणा अन-रजिस्टर्ड हैं।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जंजीवार का बीशप "अब" लिखता है—

London is glorious city but is terribly in the hands of Satan."

अर्थात् "लन्दन देखने में तो सुन्दर नगर है परन्तु दुराचार रूपी शैतान के हाथों में बुरी तरह फंसा हुआ है।"

ट्रूथ नामक प्रसिद्ध समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था कि "इंगलैंड में हर वर्ष ३७ हजार बच्चे नाजायज तौर पर पैदा होते हैं जिनका न कोई बाप है और न कोई मां।"

इंगलैंड के लोगों ने अपने विषयी होने का रिकार्ड तोड़ दिया है। अब वहां दुनिया का एक नया कानून और बनवाया गया है कि— "पुरुष पुरुष से विवाह कर सकता है।"

यह है पाश्चात्य सभ्यता का कच्चा चिट्ठा। कोई बताये इससे हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं ? भारत के लोग व्यर्थ अंग्रेजी सभ्यता के पीछे पागल हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति के बारे में जर्मनी का प्रसिद्ध विद्वान मैक्समूलर लिखता है कि—

If there is a paradise in the world, it is neither in heaven nor on the surface of the water, but I should point ont India ! India !! India!!!

"यदि कहीं संसार में स्वर्ग है तो न वह क्षीर सागर में है, न चौथे आसमान पर और न सातवें आसमान पर है। वह तो केवल भारत भूमि के अन्दर है।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विदेशी विद्वान वाल्टेयर लिखता है कि—

For this valuable gift the west will remain grateful to the east."

"वैदिक संस्कृति अति मूल्यवान् उपहार है। इसके लिए पश्चिम सदा के लिए भारत का ऋणी रहेगा।"

डाक्टर जेम्स जिकन Path to the Peace पुस्तक के ६०वें पृष्ठ पर लिखता है—

"वैदिक आदर्शों पर चलने से ही संसार पुनः सुख-धाम बन सकता है।"

विदेशी विद्वान तो भारतीय संस्कृति के आगे नतमस्तक हो रहे हैं और ये भारतवासी पागल अन्धे होकर उधर भाग रहे हैं। इन्हें यह पता नहीं वहां से लोग लुट पिट कर और निराश होकर भारत की शरण आ रहे हैं। लार्ड मैकाले ने भारत में जिस अंग्रेजी शिक्षा को हमें दास और अपने लिए क्लर्क बनाने के लिए चालू किया था अब उसको उखाड़ फेंकने का समय आ गया है। उन्होंने कहा था—

I want a class form Indian in blood and colour but English in taste and opinion.

अर्थात्—"मैं भारत में ऐसा वर्ग बनाने जा रहा हूं जो ऊपर रंग रूप से तो भारतीय होगा—परन्तु अन्दर से वह अंग्रेज होगा।" वास्तव में मैकाले की योजना पूरी हुई। आज हम भारतीय नहीं हैं। हमें मूर्ख बनाया गया और आज भी बनाया जा रहा है। परन्तु अब समय आ गया है कि इस दूषित प्रणाली के विरुद्ध एक जन-क्रान्ति की जाय और इसे समूल उखेड़ कर फेंक दिया जाये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

संस्कृति राष्ट्र का प्राण होती है। संस्कृति के परित्याग का कुपरिणाम राष्ट्र का विनाश होता है। आज कुछ लोग चांदी के टुकड़ों के लिए, अपनी गद्दियों को सुरक्षित रखने के लिये या विदेशियों को खुश करने के लिए या अपने स्वार्थों के लिये, अपनी वासनाओं की तृप्ति के लिए, अथवा अपने फैशन के लिए अपनी संस्कृति की बलि चढ़ा रहे हैं और गोहत्या जैसा अदम्य अपराध कर रहे हैं। इससे बढ़कर अपनी भारतीय संस्कृति का अपमान और क्या होगा ? देश में गोहत्या के जघन्य अत्याचार को देखकर खून खौलने लगता है ! गोमाता की करुणामयी चीख को सुनकर हृदय विदीर्ण होता है। गो के दूध मूंहे बच्चे को तड़प-तड़प कर जान देते हुए देख कर मूर्छा आती है। इस भयंकर रक्त-पात को देख कर भुजायें फड़कने लगती हैं और एक क्रान्ति का सन्देश देती हैं। देश के इन गद्दारों को, गोमाता के हत्यारों को जनता कभी क्षमा नहीं करेगी।

ओ भोले लोगो ! क्या तुम्हें यह पता नहीं कि जिस चमड़े के थैले (Leather Bag) को आप बगल में दबाये फिरते हैं, वह गाय के गर्भस्थ बच्चे को मार कर बनता है ? जिस सूटकेस से तुम अपनी शोभा बढ़ा रहे हो वह नवजात बछड़े की कोमल खाल से बनता है। जिस मुलायम बूट को तुम पहने हुए फिरते हो वह गाय पर उबलते हुए पानी को डालकर और उस बेचारी को रुदन करती हुई हजारों कोड़ों की मार से तड़पा २ कर तैयार होता है। बूट, चप्पल, बक्स, हन्टर आदि जिस खाल से बनते हैं वह सब खाल इसी प्रकार गौ-बैल-भैंस आदि प्राणियों से आर्तनाद करते हुए प्राप्त होती है। उस वर्णन को लेखनी लिख नहीं सकती। एक हृदयहीन व्यक्ति ही उसे सुन सकता है, देख सकता है और सहन कर सकता है। परन्तु आज

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कल यह सब कुछ सम्भव हो रहा है। क्योंकि बनावटी सभ्यता की जंजीरों में जकड़ कर सबको नपुंसक बना दिया गया है। सरकार ने इसे कानून का चोला पहना दिया है। मांस खाना आज प्रगतिशीलता की परिभाषा बन चुका है। जो मांस से घृणा करते हैं उन्हें जंगली, असभ्य और Out af date कहा जाता है।

ऋषियों की सन्तानो ! राम कृष्ण के पुजारियो !! क्या हमने अंग्रेजों की फांसी के तख्तों को इसी लिए हंसते-हंसते चूमा था कि स्वतन्त्रता मिलने पर हमारी वैदिक संस्कृति की लाश पर भोग-वादी संस्कृति अपना नग्न नृत्य करेगी ? क्या इसलिये जेलों की यातनायें सही थीं कि गोमाता की निर्मम हत्या करके पाश्चात्य सभ्यता की स्थापना होगी ? जो स्वतन्त्रता हमने बड़े-बड़े बलिदान देकर प्राप्त की आज उसका संहार किया जा रहा है। हमने राम-राज का स्वप्न देखा था परन्तु आज सर्वत्र राक्षस-राज की तूती बोल रही है। हमारी स्वतन्त्रता चारों ओर से खतरे में है। सर्वत्र पापाचार और हाहाकार है।

अतः देश वासियो, आओ ! अपने देश, जाति, धर्म, वेद और गोमाता को बचाओ। भारतीय संस्कृति के बिना देश की रक्षा नहीं हो सकेगी। हमारी स्वतन्त्रता चिरस्थायी नहीं रह सकेगी। रामराज की स्थापना नहीं हो सकेगी और गोमाता की रक्षा भी नहीं हो सकेगी। इसलिए वैदिक संस्कृति के पावन सन्देश को ग्राम-ग्राम नगर-नगर, प्रान्त-प्रान्त, घर-घर, गली-कूंचे, बन जंगल सर्वत्र फैला दो। इस सन्देश के फैलाये बिना देश का निर्माण नहीं हो सकता।

देश प्रहरियो ! जागो और संसार को जगाओ। नव-क्रान्ति का ऐसा शंखनाद करो जिसको सुनकर देश-द्रोही लुटेरे भयभीत हो उठें। वैदिक सभ्यता की ऐसी ज्वाला जलादो जिसमें

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पाश्चात्य सभ्यता एवं पापाचार भस्मसात् हो उठे। बहुत सो लिये—अब उठने और कुछ करने का समय आ गया है। वह व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होगा जो वैदिक संस्कृति की रक्षा के हेतु अपना बलिदान देगा। भारतमाता, गोमाता, वेदमाता तुम्हारा आह्वान कर रही हैं। देखो, कौन मैदान में आता है! कौन अपना सर्वस्व नयौछावर करता है! कौन इस अत्यावश्यक सन्देश को भूमंडल पर फैलाता है! कौन घर फूंक तमाशा करता है! कौन ज्वाला में कूदने का साहस करता है! कौन ब्रह्मचर्य का तप तपने आगे आता है! यह ज्वलन्त प्रश्न है। देखें कौन इसका उत्तर देता है! उत्तर की प्रतीक्षा में—

—ब्र० बलदेव नैष्ठिक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेद में गाय का महत्त्व

वेद वह गङ्गोत्तरी है जहाँ से भारतीय संस्कृति की गङ्गा प्रवाहित हुई है। वेद संसार के पुस्तकालय की सबसे पुरानी पुस्तक है। संसार के सब ऋषि महर्षि वेद के अभिमुख नत-मस्तक होकर वेद को स्वतः प्रमाण मानते आये हैं। सब विद्वानों की एक ही घोषणा है, कि वेदों का पढ़ना पढ़ाना, सुनना और सुनाना आर्यों का परम धर्म है। हमारे सनातन परम धर्म वेद में गाय की कितनी महिमा भरी पड़ी है!

ऋग्वेद में गाय को माता कहा है और आदेश दिया है कि उसे कभी मारना न चाहिए।

ओं माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्रनु वोचं चिकितुषे जनाय, मा गामनागां अदितिं वधिष्ट॥

यह प्रमाण ऋग्वेद ८।१०१।१५ का है। इस मन्त्र का अर्थ है कि गौ ब्रह्मचारियों की माता है अर्थात् गौ के दूध से रुद्र ब्रह्मचारियों का पालन-पोषण होता है। (३६ वर्ष तक आचार्य कुल में विद्या पढ़ने और ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले विद्वान को "रुद्र ब्रह्मचारी" कहा जाता है—क्योंकि उस समय ३६ वर्ष की तपस्या से दुष्ट राक्षस व्यक्तियों को रुलाने में वह समर्थ हो जाता है)। वसु ब्रह्मचारियों के लिए दुहिता के समान है अर्थात् पौष्टिक भोजन देने योग्य है। (२५ वर्ष तक तप करने वाले विद्यार्थी को वसु की पदवी मिलती है। आदित्य ब्रह्मचारियों के लिये गाय बहिन के समान है। अर्थात् जैसे भाई का बहिन से प्रेम होता है उसी प्रकार ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वाले के लिए गौ दया का पात्र और प्रेम-भाजन है। गाय अमृत का केन्द्र है। गौ वध के योग्य नहीं है। गौ कभी पाप नहीं करती—अपराध रहित है, भोली-भाली है।

इस वेद की ऋचा के अन्दर ईश्वर का आदेश है कि गाय अमृत का केन्द्र है और ब्रह्मचारियों की तो माता के समान है एवं बहिन के समान है—उसे कभी भी काटना न चाहिए।

वेद में अनेक स्थानों पर गौ-वध निषेध

वैदिक कोष में गाय के नौ नाम हैं परन्तु उनमें से तीन नाम—अघ्न्या. अही, अदिति, अहिंसार्थक हैं। ये तीनों नाम यह कह रहे हैं कि गाय की हिंसा नहीं करनी चाहिए। गौ का अघ्न्या नाम स्वयं पुकार-पुकार कर कह रहा है कि गौ पवित्र है और उसकी हिंसा कभी नहीं होनी चाहिए। वेदों में अघ्न्या शब्द अनेक बार आया है। इससे स्पष्ट है कि वेद में गौवध निषिद्ध है। यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के प्रथम ही मन्त्र में लिखा है:—

अघ्न्याः ··· यजमानस्य पशून् पाहि। यजु०

अर्थ—हे पुरुष! तू इन पशुओं की रक्षा कर और गाय आदि उपकारक पशुओं को कभी मत मार॥

अथर्व वेद काण्ड-६, सूक्त ५६-मन्त्र ३—

हेतिं दूरं नयतु गोभ्यः॥

अर्थ—गायों से शस्त्र दूर हो जावें—अर्थात् गाय को मारने के लिए कोई गाय के समीप शस्त्र भी न ले जावे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कितना कठोर आदेश वैदिक युग में था ! जो गाय आदि पशुओं को मारता था उसके लिए बहुत सख्त दण्ड का विधान था।

गो-घातक को दण्ड

ओं यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तंत्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥
अथर्व वेद १।१६।४।

यदि तू हमारी गौ को जान से मारता है, यदि तू हमारे घोड़े को तथा पुरुष का वध करता है तो हम तुम्हें सीसे की गोली से बींध देंगे कि जिससे तू हमारे वीरों का नाश न कर सके।

यहां पर गो-घातक को गोली से उड़ा देने का स्पष्ट विधान है। अथर्व वेद में आगे एक स्थान पर तो गाय का पैर से अपमान करने पर भी पाप लिखा है और बताया गया है कि भगवान् उस व्यक्ति को धराधाम से नष्ट कर देता है जो गाय को पैर से मारता है।

ओं यच्च गां पदा स्फुरति प्रत्यङ् सूर्यं च मेहति ॥
अथर्ववेद १३।१।५६

जो गाय को पैर से मारता है या पैर से ठोकर मार कर अपमान करता है, सूर्य भगवान् के सम्मुख मुख करके मल-मूत्र का त्याग करता है, उसका मैं जड़ से सर्वनाश कर देता हूं कि जिससे वह फिर भूतल पर छाया न कर सके।

हमें कभी भी भूलकर गाय का अपमान न करना चाहिये। गाय हमारी माता के समान है। जिस प्रकार से माता को कभी पैर से नहीं मारा जाता और अहर्निश उसकी सेवा की जाती है—उसी प्रकार गैया मैया की सेवा ही करनी चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"गो-स्वामी गायें अवश्य रखें"

ओं संसिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावोमयि गोपतौ॥
अथर्ववेद काण्ड २, सूक्त २६, मंत्र ४।

अर्थ-मैं अपने वीरों में गौओं का दूध सींचता हूं और उन में घी से बल और प्रेम सींचता हूं। हमारे वीर पूर्ण हो गये। मुझ गोस्वामी के पास गौएं अटल रहें॥४॥

भावः—गौ के दूध में वीरता को देने वाली, बल को बढ़ाने वाली और प्रेम का संचार करने वाली शक्ति है। प्रत्येक पुरुष को गोस्वामी बनने की—सदा गौ रखने की प्रेरणा की गई है।

"गाय से ही अन्न प्राप्त होता है।"

ओं आ हरामि गवां क्षीरमाहार्ष धान्यं रसम्।
आहृता अस्माकं वीरा आपत्नीरिद्मस्तकम्॥
अथर्व० का० २, सू० २६, मं० ५।

अर्थ—मैं गौओं के दूध को, अन्न और रस को प्राप्त करता हूं। दूध से हमें वीर प्राप्त हुए हैं, पालक-बुद्धि और घर प्राप्त हुए हैं।

भावः—गौओं के द्वारा ही खाद और बैल को प्राप्त कर अन्न को बढ़ाया जा सकता है। फलों को उत्पन्न किया जा सकता है। वीरों को, पालक-बुद्धि को तथा गृह को बनाया जा सकता है।

वेद में गौ-महिमा

ओं गावो भगो गाव इन्द्रोम इच्छाद् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः
इमा या गावः स जनास इन्द्रम इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम्॥
अथर्व० ।४, सू० २१—मं० ५।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्थ—गौएं ऐश्वर्य हैं और गौएं ही परम ऐश्वर्य हैं, वे
चाहें। गौएं ही प्रथम सोम (ब्रह्मचर्य काल) के भोजन की साधन
हे लोगो ! ये गायें ही ऐश्वर्य हैं। मैं इस ऐश्वर्य को हृदय से और
से चाहता हूं।

भावः—संसार में गौ से बढ़कर कोई ऐश्वर्य नहीं। ब्रह्म
के ब्रह्मचर्य का पोषक गो-दुग्ध ही है। गोपति को हृदय से गौ
ऐश्वर्य की कामना करनी चाहिए॥

गायें स्वास्थ्यवर्धक हैं

ओं यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित् कृणुथासुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो वृहद्वो वय उच्यते सभासु॥
अथर्व० ४।२१।६॥

अर्थः—हे गौओ ! तुम कृश—दुबले को मोटा बनाती हो,
भद्दे रूप वालों को दर्शनीय बनाती हो, वाणी को कल्याणी ब
हो। सभाओं में तुम्हारी बड़ी आयु कही जाती है। घरों को कल्य
कारक बनाती हो।

भावः—निर्बल को मोटा बनाने वाली गायें ही हैं—इसमें
को क्या सन्देह हो सकता है ? भद्दे रूप वाले लोग प्रतिदि
दुग्ध सेवन से दर्शनीय बनते ही हैं। वाणी भी मधुर बनाने
सामर्थ्य गाय में है। घर पवित्र बनता है। सभाओं में गा
महिमा होती रहती है। इस वाक्य को लिखकर तो वेद ने
कर दिया है ! वेद का भाव कितना गम्भीर है। हम सबको
कि बड़ी अथवा छोटी २ सभाओं में गाय की स्तुति करें-कभी भी
की निन्दा न करें। जो गाय की निन्दा करता है—वह वेद विरुद्ध
के कारण से महापापी है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation Chandigarh

वेद में गोशाला का वर्णन

ओं सं वो गोष्ठेन सुषदा संरय्या संसुभूत्या ।
अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि ॥
अथर्व—का० ३, सू० १४, मं० १

अर्थः—अच्छी रहने के लिए गोशाला, योग क्षेम के लिए धन, उनकी सब प्रकार की ऐश्वर्य सामग्री, नामकरण के दिन रखा गया उनका सुन्दर नाम होना चाहिए ।

भावः—यदि रहने का स्थान उत्तम न हो, उनके लिए खाने-पीने और ओढ़ने पहिनने की उत्तम सामग्री न हो और सुन्दर नाम न हो तो गौ का मन अपनी ओर आकर्षित नहीं किया जा सकता । और वह प्रेम से प्रसन्न होकर सात्विक मधुर दूध नहीं दे सकती । गोरक्षा के लिए कुछ स्थिर कोष भी सुरक्षित रहना चाहिए । गौओं को सूर्य के प्रकाश में अवश्य घुमाना चाहिए ।

ओं संजग्माना अबिभ्युषिरस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः ।
बिभ्रतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन ॥३।१४।३॥अ०।

अर्थः— गोशाला में भ्रमण करने का स्थान अच्छा हो । निर्भय विचरने वाली, खाद पैदा करने वाली, अमृत रूप मीठा रस-दुग्ध धारण करने वाली गौएं निरोग होकर हमारे पास आ जायें ।

भावः— गौशाला में स्थान ऐसा हो कि जहां किसी प्रकार का भय गौओं को न होवे । गौओं से प्रेम के साथ वर्तना चाहिए । भयभीत और क्रोधित गौओं का दूध हानिकारक होता है । गायें अमृत रस धारण करती हैं । परन्तु अपवित्र स्थान में रहने से वही अमृत विष-मय होकर रोग उत्पन्न करता है । इसलिये पूर्ण सावधानी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

से गौशालायें विशाल और स्वच्छ होनी चाहिएं। गौओं का गोवर खाद के लिए अत्युत्तम होता है—इसलिए उसे खाद के लिए ही रखना चाहिए। उन्हें रोगी न होने दिया जावे। और भोजन ऐसा दिया जावे जिससे दूध अमृतमय मधुर हो।

ओं इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत।
इहैवोत प्रजायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ॥४॥अ०

अर्थः—गौएं यहीं आवें, यहीं शक्तिशाली और पुष्ट बनें। यहीं सन्तान पैदा करें। मुझे उनका सब प्रकार विज्ञान हो।

भावः—गौवें रात को गौशाला से बाहर न रहें। उन्हें शक्तिशाली और पुष्ट भोजन दिए जावें। सन्तान उत्पत्ति के समय में (दिनों में) बाहर न रहें। सन्तान उत्पत्ति के विषय में गौपति को सब विज्ञान होना आवश्यक है।

ओं मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पोषयिष्णुः।
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवाजीवन्तोरुपवः सदेम ॥

अथर्व ३।१४।६॥

अर्थः—मैं गोपालक हूं। मुझसे तुम सेवा प्राप्त करो। यह तुम्हारा घर है। यहीं तुम्हारे पोषण करने वाले हैं। धन की वृद्धि हो। तुम जीओ और जिलाओ। हम तुम्हारे समीप ही रहते हैं।

भावः—गोपति को गो-सेवक बनना चाहिए। उनके सेवक बाहर नहीं, गोशाला में ही रहें। धन की वृद्धि के साथ-साथ उनके भी परिवार की वृद्धि होनी चाहिए। जैसे अपने जीवन के साधन उत्तम हैं, वैसे ही उनके भी होने चाहिएं। गोपति भी इस प्रकार से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रहे मानो उनके पास ही है। इस प्रकार सब लोग गौओं का पालन करके हृष्ट पुष्ट हों।

सब नसलें गोशाला में हों

ओं आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इहस्युरिन्द्राय पूर्वी रुषसो दुहानाः ॥
अथर्व० का० ४, सू० २१, मं० १ ॥

अर्थः—सब ओर से गौएं आई हैं। कल्याण किया है। हमारी गोशाला में रहें और बोलें। सन्तान वाली और अनेक रूप वाली यहां हों। स्वामी को प्रथम उषा में दूध देने वाली हों।

भावः—गौशाला में सब देशों की गौवों की नसलें आनी चाहिएं, उनके रंग कई प्रकार के हों, जिससे यह परीक्षा हो सके कि किस नसल की और किस रंग की गौ के दूध में क्या-क्या गुण हैं। दूध उषा काल में ही निकालना चाहिए।

नोटः—कपिला-श्यामा आदि अनेक रंगों की विशेष गायें होती हैं। उन सब नसलों का प्रकरण अलग आगे आयेगा।

गोपालन में सावधानी

ओं प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परिवो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु ॥
अ० का० ७, सू० ७५, म० १ ॥

अर्थः—तुम उत्तम सन्तान वाली, सुन्दर घास चाहने वाली, सुन्दर जल भण्डार में सुन्दर जल पीने वाली हो। तुम्हारे ऊपर चोर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अथवा पाप भावना वाले का अधिकार न हो। शत्रु को दण्ड देने
रक्षक की तलवार सब ओर से ऐसे दुष्ट पुरुषों से तुम्हें अलग रखे

भावः—गौओं की चरागाह स्वच्छ और सुन्दर हो, उनका
पीने का स्थान सुन्दर और स्वच्छ हो, उनके साथ पवित्र भावना
व्यवहार हो, दुष्ट पुरुषों को उनके समीप न आने दिया जावे।

गोदान से भारी लाभ

ओं स य एवं विद्वान् मांसमुपसिच्योपहरति। अ० ६।७।७
ओं यावद् द्वादशाहेनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्धेतावदेनेनावरु
अ० ६–७–८।

अर्थः—जो यज्ञ के महत्व को जानने वाला गौ के मांस
बढ़ाकर भेंट करता है वह जितना भली भांति सम्पन्न द्वादशाह
से फल प्राप्त करता है उतना ही इस यज्ञ से प्राप्त करता है।७।८

भावः—इस मन्त्र में गौ के मांस को बढ़ाने का अर्थ उसे
ताजी करके दान करने से है। अर्थात् कमज़ोर गाय के दान से
लाभ नहीं होता। हमारे देश में पहले गाय दान करने की बड़ी
थी। राजा जनक आदि अनेक नृपों ने हजारों गायें दान
थीं। विवाह संस्कार में भी गोदान करते ही रहते थे। गोदा
श्रेष्ठदान कहा जाया करता था।

आगे भी गोदान की महिमा वेद कह रहा है—

स य एवं विद्वानुदकमुपसिच्योपहरति। अ० ६।७।६

प्रजानां प्रजननाय गच्छति प्रतिष्ठां प्रियः प्रजानां
भवति य एवं विद्वानुदकमुपसिच्योपहरति॥ ६।

अर्थः—जो यज्ञ की महिमा को जानने वाला उदक (रज)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गौ की प्रजनन शक्ति को बढ़ाकर भेंट करता है, सन्तान की उत्पत्ति के लिए, वह प्रतिष्ठा पाता है। सन्तान का प्यारा होता है जो रज शक्ति को बढ़ाकर भेंट करता है।

भावः—जिस प्रकार पुरुष के वीर्य को बढ़ाने के पदार्थ संसार के वनस्पति वर्ग में है इसी प्रकार स्त्री के रज को बढ़ाने के भी हैं।

जो गौ रज को बढ़ाने वाले पदार्थ खायेगी उसकी सन्तान बढ़ेगी। और जो स्त्री ऐसी गौ का दूध पीयेगी, पौष्टिक दूध पीने से उसकी सन्तान बढ़ेगी।

जो लोग इस प्रकरण का अर्थ गौ मारकर अतिथि को उसका मांस खिलाना करते हैं, हम उनसे पूछना चाहते हैं कि क्या मरी हुई गौ की भी सन्तान वृद्धि की, और उसके दूध से अपनी सन्तान वृद्धि की कामना की जा सकती है ?

हम वेद का अर्थ करने वाले विद्वानों से प्रार्थना करेंगे कि वे वेद के आर्ष अर्थात् वेद के ही आधार पर वेदार्थ का ज्ञान किए बिना, केवल लौकिक साहित्य के आधार पर अर्थ न करें। ऐसा करने से महान अनर्थ हुआ है और होने की सम्भावना है।

दूध दुहने का तरीका

ओं उपह्वये सुदुधां धेनुमेतां सुहस्तो गोधु गुत दोहदेनाम्।
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नो ऽभीद्धो धर्मस्तदुषु प्रवोचत॥
अ० का० ६।सू०१०।मं०४॥

अर्थः—इस भली प्रकार दुही जाने वाली गौ को मैं बुलाता हूं। अच्छे हाथ वाला (कोमल हाथ वाला) गौ का दुहने वाला इसे दुहेगा। यज्ञ का रचाने वाला हमारा श्रेष्ठ यज्ञ रचाये। धर्म की वृद्धि हुई है-ऐसा वह ठीक कहे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भाव:—जो लोग कठोर अंगुलियों से या अंगूठे से स्तन दबाते हैं–वे अच्छे दुहने वाले नहीं कहलाते। गौ के स्तन को कोमल हाथ से दबाने वाला और पहले उससे उसी हाथ से प्रेम कर फिर उसके नीचे बैठने वाला ही दुहने वाला सुहस्त कहलाता है। गौ का दूध यज्ञ के द्वारा धर्म वृद्धि के लिए है।

राजा का कर्त्तव्य

ओं अघायतामपि नह्यामुखानि सपत्नेषु वज्रमर्पयैतम्।
इन्द्रेणदत्ता प्रथमा शतौदना भ्रातृव्यघ्नीयजमानस्य गातुः॥
अ०१०।६॥

अर्थः—पाप करने वालों के मुखों को बांधदे। शत्रुओं पर वज्र का प्रहार कर। राजा की दी हुई, जिसके दूध में सैंकड़ों प्रकार के भोज्य पदार्थ हैं, यह मुख्य गौ, वेद गान करने वाले यजमान के शत्रुओं की नाशक है।

भाव:—राजा का धर्म है कि सब जगत के कल्याण के लिए यज्ञ रचाने वाले यज्ञमान को श्रेष्ठ गौ का दान करे। उसके कर्मचारी पापियों (गौ-घातकों) का मुख बंध कर दें। गौ यजमान के वीरों को अपने दूध घी से शक्तिशाली बना कर उनके द्वारा उसके शत्रुओं का नाश करने वाली हो।

मानव मात्र को गौ-रक्षा करनी चाहिये

ओं देवाः पितरो मनुष्या गन्धर्वाप्सरसश्च ये।
ते त्वा सर्वे गोप्स्यन्ति सातिरात्रमतिद्रव ॥अ० १०।९।९॥

अर्थः—विद्वान लोग, पालक लोग, मनन करने वाले लोग

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पृथिवीपति लोग, आकाशचारी वायु आदि देव ये सब तेरी रक्षा करेंगे तू अतिरात्र से आगे बढ़ जा ॥६

भावः-विद्वान लोग गोपाल विद्या से, पालक लोग शारीरिक श्रम से, मनन करने वाले अपनी विचारधारा से, पृथिवीपति लोग बड़ी बड़ी गोचर भूमि छोड़कर, वायु आदि देव गौ के दूध और घी से हुए यज्ञ के द्वारा वृष्टि से, यज्ञ रूप गौ की रक्षा कर सकते हैं।

हृदयरोग और पाण्डुरोग लाल रंग की गौ के दूध से दूर करो।

ओं अनु सूर्यमुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परिदध्मसि। अथर्व १।२२।१॥

अर्थ-सूर्योदय के होते ही तेरा हृदय-दाही रोग और पाण्डुरोग दूर हो जाय, लाल वर्ण की गौ के रंग से तुझे हम घेरे रखते हैं।

भावः—उपर्युक्त मन्त्र से यह भाव निकलता है कि लाल रंग की धेनु के दूध, दही और घी आदि के सेवन से हृदय रोग और पाण्डु रोग दूर होते हैं।

मातृभूमि में गौवों का निवास हो

ओं यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु॥
अथ० १२।१।५

अर्थः—पुराने समय के हमारे पूर्वज जिस भूमि में पराक्रम दिखा चुके हैं, जिस भूमि में ऊंचे पद पर अधिष्ठित लोगों ने शत्रुओं को जीता था तथा जो गौओं, घोड़ों एवं पक्षियों को विशेष स्थान देने वाली है, वह हमारी मातृभूमि ऐश्वर्य एवं तेज प्रदान करे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ऊपर मन्त्र में भारतभूमि को गौओं के लिए विशेष सुखदायक बताया गया है।

हम बहुत गौओं की सेवा करें

"......ध्रुवाऽस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वी..."

(यजुर्वेद अ० १ म० १)

अन्वय—(अस्मिन् गौपतौ बह्वीर्गावो ध्रुवाः स्यात (म०दयानन्द)

हे सविता देव ! आपके साम्राज्य में मुझे गोपति बनना है। मैं केवल एक गौ का ही पालक या स्वामी न बनूं। मेरे गोष्ठ (गोशाला) में उत्तमोत्तम प्रकार की, मधुर एवं अमृत दूध देने वाली अनेकों गायें निश्चय से ही होवें। हम सब गोपति हों। गौ ही हमारा जीवन है। गौ ही हमारा धन है। गौ ही हमारा ऐश्वर्य है। गौ ही हमारा सर्वस्व है। अतः भगवन् ! आपसे बार बार प्रार्थना है—

(अस्मिन् गोपतौ बह्वीर्गावो ध्रुवाः स्यात्")

इस गोपति-गोपाल के समीप बहुत सी गौएं स्थिर रूप से निश्चल रूप से, निश्चय रूप से होवें।

संसार के इतिहास की सर्व प्रथम पुस्तक वेद है—जिसको विद्वान प्रमाण कोटि में मानते हैं—उसी में से ये प्रमाण लिखकर इतिहास के क्रम से अन्य प्रमाण लिखे जावेंगे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उपनिषदों में गाय का स्थान

उपनिषद् शास्त्र का काल बहुत प्राचीन है। सत्ययुग से भी पहले इनका प्रचलन था। लाखों वर्ष से उपनिषद् का ज्ञान मानव को अमृत पिला रहा है। मुख्य रूप से उपनिषद् का लक्ष्य ब्रह्म-प्राप्ति है। मानव संसार में संतप्त होकर उपनिषद् के अमृत-महासागर में गोता लगाकर शान्ति प्राप्त कर सकता है। मैक्समूलर, पाल ड्यूसन, दाराशिकोह तथा शौप्नहॉर जैसे विदेशी विद्वानों ने भी उपनिषदों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। हमारे इस प्राचीन ऋषियों के साहित्य में भी गौओं का सुन्दर वर्णन मिलता है। संक्षेप से दो तीन स्थलों का वर्णन यहां किया जायेगा।

छान्दोग्योपनिषद् की एक कथा

(छा० चतुर्थ प्रपाठक, द्वितीय खण्ड:)

राजा जानश्रुति ब्रह्मविद्या की खोज में सयुग्वा रैक्व मुनि के समीप पहुंचते हैं और निवेदन करते हैं—

"रैक्वेमानि षट्शतानि गवामयं निष्कोऽयमश्वतरीरथोऽनु म एतां भगवो देवता शधियां देवतामुपास्स इति।

अर्थ:—हे ऋषे रैक्व ! यह छः सौ गायें, यह माला और यह अश्वतरी रथ आप ग्रहण करें और आप जिस देव की उपासना करते हैं उसी का उपदेश मेरे लिए करें।

ऋषि रैक्व ने उत्तर दिया:—"हारे त्वा तवैव सह गोभिरस्त्विति"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

—ये मोती माणिक आदि के हार गौओं सहित तुम्हीं को बने रहें।

परन्तु जानश्रुति फिर एक हजार गायें प्रस्तुत करके बोला—

"तदुह पुनरेव जानश्रुतिः पौत्रायणः सहस्रं गवां निष्कमश्व-तरीरथं दुहितरं तदादाय प्रतिचक्रमे।"

अर्थः—हे ऋषे ! ये हजार गायें, यह अश्वतरी रथ और य मेरी कन्या आपको भेंट की जाती है-मुझे ब्रह्मविद्या को दीजिए।

राजा की विनम्रता और अधिकारीपन को देखकर रैक्व मुनि बोला—यह धन-माया का राग मुझे प्रभावित नहीं कर सकता था मैं तुम्हें इसलिए उपदेश दूंगा कि नारी को शास्त्रों में माता की पूज्य दृष्टि से देखा जाता है—अतः इसका तिरस्कार नहीं करना चाहिए गोमाता भी संसार में पूज्या मानी जाती है। यह कह कर उपदेश दिया।

इस कथानक से यह स्पष्ट होता है कि पहले भारत में गा बहुत होती थीं और गायों का दान किया जाता था।

अब छान्दोग्योपनिषद् में से एक दूसरा कथानक लि जाता है।

सत्यकाम की कथा

सत्यकाम को गायों की सेवा से ब्रह्म-तेज मिला

जाबाला का पुत्र सत्यकाम गौतम गोत्रोत्पन्न हारिद्रुमत ऋषि समीप जाकर बोला कि मैं आपके समीप रहकर विद्या पढ़ना चाह हूं। गुरु ने आदेश दिया कि पहले परीक्षा देनी होगी, और वह यह कि ये आश्रम की चार सौ क्षीण दुर्बल गायें जंगल में चराने के लि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ले जाओ। जब ये एक हजार हो जावें तो लौट आना फिर शिक्षा पढ़ायेंगे। सत्यकाम गायें लेकर बन में चला गया। कई वर्ष तक जंगल में रहा। १००० (एक सहस्र) गायें होने के उपरान्त गुरुकुल की ओर चल पड़ा। जिस समय आचार्य-कुल के द्वार पर आया तो दूर से ही गुरु जी बोल उठे "ब्रह्मविदिववै सौम्य भासि" छा० प्र० ४ ख० ६। हे ब्रह्मचारिन्! निश्चय से तुम ब्रह्मवित् पुरुष की नाईं सुशोभित हो रहे हो।"

सत्यकाम ने सिर झुकाकर कहा, "हां गुरुदेव जी, गायों के और आपके आशीर्वाद से यह पुण्य फल मुझे मिला है।"

इस इतिहास के कथानक से स्पष्ट सिद्ध होता है कि गायों की सेवा करने से ब्रह्म-तेज प्राप्त होता है। प्राचीनकाल में किस श्रद्धा एवं निष्ठा से गायों की सेवा की जाती थी—यह हमें इस दृष्टांत से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

राजा जनक ने महर्षि याज्ञवल्क्य को एक सहस्र गौएं दान में दीं

(अ० ३, ब्राह्मण १)

यह आख्यायिका बृहदारण्यक उपनिषद् की है। एक बार राजा जनक ने ब्रह्मवादियों का एक बहुत बड़ा सम्मेलन आहूत किया। इस अधिवेशन का लक्ष्य था कि संसार भर के विद्वानों में कौन सब से बड़ा विद्वान् और ब्रह्मनिष्ठ है। राजा जनक ने घोषणा की कि—

कः स्विदेषां ब्राह्मणानामनूचानतम इति सह गवां सहस्रमवरुरोध दश दश पादा एकैकस्याः शृङ्गयोराबद्धा बभूवुः॥

(अ० ३, ब्राह्मण १, मं० १)

अर्थ—इन ब्रह्मवेत्ताओं में प्रवचन करने में सब से बढ़कर कौन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है ? जो विजयी होगा उसी ब्रह्मवादी को मैं एक सहस्त्र गौएं दान दूंगा। उनमें से प्रत्येक के सींग में दश-दश पाद सुवर्ण बंधे हुए होंगे। इस नोबल प्राइज की घोषणा को सुनकर महर्षि याज्ञवल्क्य सामने आये और उन्होंने अपने ब्रह्मचारी सामश्रवा को आदेश दिया 'हे सौम्य सामश्रवा ! तू इन गायों को हांक ले जा।' जब वह उन्हें ले चला तब सारे विद्वान् भड़क उठे। उन्होंने उनसे पूछा, 'याज्ञवल्क्य ! हम सबमें क्या तुम ही सबसे बड़े ब्रह्मनिष्ठ हो ?' उन्होंने कहा, 'ब्रह्मनिष्ठों को तो हम नमस्कार करते हैं। हम तो गौओं की कामना वाले हैं। आश्रम में १०००० ब्रह्मचारी विद्या अध्ययन कर रहे हैं। उन्हें दूध की आवश्यकता है।' इतना कहने पर एक के बाद दूसरा विद्वान आगे आया और शास्त्रार्थ छिड़ गया। होता, अश्वल, भुज्यु, उषस्त ऋषि, कहोल मुनि, अरुणि, उद्दालक, गार्गी प्रभृति अनेक विद्वानों एवं विदुषियों से याज्ञवल्क्य का शास्त्रार्थ होता है। सारी सभा में ऋषि याज्ञवल्क्य विजयी हो गये और वे सब गायों को अपने आश्रम में ले गये।

इस इतिहास की अतीव प्राचीन घटना से कई बातें स्पष्ट होती हैं। प्रथम तो यही कि पुरातन काल में भारत में भारी संख्या में गोपालन होता था। दूसरे नम्बर पर यह भी पता चलता है कि ऋषियों के आश्रम बहुत विशाल और कृषि के लिए पर्याप्त भूमि वाले होते थे। यदि याज्ञवल्क्य के आश्रम में काफी भूमि न होती तो राजा जनक का इतनी विशाल संख्या में गोदान निरर्थक हो जाता।

वाजश्रवस ऋषि का सर्व मेध यज्ञ

(कठोपनिषद्—प्रथम अध्याय—प्रथमा वल्ली)

उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ।
तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥१॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह एक ऐतिहासिक वार्ता है कि मुक्ति की इच्छा रखने वाले वाजश्रवस ऋषि ने अपने सब धनादि पदार्थ को यज्ञ द्वारा दे डाला अर्थात सर्वमेध नामक यज्ञ किया। (सर्वमेध यज्ञ का विधि विधान यह है कि सन्यास धारण करने वाला मनुष्य सर्वमेध नामक यज्ञ करे और उसी यज्ञ में सब पदार्थों को दे डालना चाहिए)। इस वाजश्रवस का एक नचिकेता पुत्र भी था। जिस समय सर्वमेध यज्ञ की दक्षिणायें ब्राह्मण लोग ले जा रहे थे, उसी समय यह भी ध्यान से देख रहा था। नचिकेता ने बूढ़ी गायों को दान में जाते देखकर श्रद्धा से कहा—

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।
अनन्दा नाम ते लोकांस्तान्स गच्छति ता ददत्॥१।१।३

अर्थः—बूढ़ी कमजोर गायों के दान से दाता को आनन्दरहित लोकों की प्राप्ति होती है। बूढ़ी गायों के दान से उत्तम फल की प्राप्ति नहीं होती।

यह कह कर नचिकेता ने अपने को समर्पण करने के लिए पिता से आग्रह किया।

इस दृष्टान्त से यह शिक्षा मिलती है कि दान में स्वस्थ गायों को ही दिया जाना चाहिए। उसका ही फल शास्त्र में उत्तम कहा है।

ये चार दृष्टान्त हमें सन्देश दे रहे हैं कि भारतीय संस्कृति में पुरातन काल से ही गौ सेवा की परम्परा चली आ रही है। सत्यकाम की मस्ती हमने देख ही ली। दण्ड-कमण्डलु और कंधे पर एक डोरी डालकर आगे-आगे चल पड़ा और पीछे-पीछे ४०० गायें। गुरु की गायों का गोपाल बन में गया और वर्षों वहीं रहा। इसका नाम है श्रद्धा एवं विश्वास।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chandigarh

महाराजा दिलीप की गो सेवा

मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान् श्री राम के पूर्वज महाराज दिलीप के चरित्र से सभी लोग परिचित हैं। उन्होंने अपने कुल-गुरु महर्षि वसिष्ठ की बच्छिया नन्दिनी की रक्षा के लिए सिंह को अपना शरीर अर्पण कर दिया। उसकी हिंसा को सहन नहीं किया।

महाकवि कालिदास दिलीप की गो सेवा का वर्णन अपने रघुवंश महाकाव्य में करते हैं।

स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासन बन्धधीरः।
जलाभिलाषी जलमाददानां छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्॥

अर्थः – जिस समय गायें खड़ी होती हैं तो दिलीप खड़ा हो जाता है, जब गायें चलती हैं तो नृप चल पड़ता है, जब गायें बैठती हैं तो दिलीप आसन लगाकर बैठ जाता है, जब गायों को पिपासा होती है तो उनको स्वच्छ जल पान कराता है। इस प्रकार से भूपति छाया की भांति गायों के पीछे-पीछे रहता है।

यह है वास्तविक गो-सेवा। गौओं का सेवक दिलीप कभी गौओं के आगे चलता, कभी बीच में, और कभी पीछे। कभी गायों को पुचकारता जाता, कभी गायों को सुहलाता जाता, कभी कुआं आने पर पानी पिलाता जाता और कभी हरी-हरी घास आती तो वहां चराता जाता। इस प्रकार अपनी रानी सुदक्षिणा के साथ साथ गौ पूजा करते करते नृप का समय व्यतीत हो रहा था। इस गो-आराधना से राजा को पुत्र का वरदान प्राप्त होता है।

इस प्रकार का वर्णन पद्मपुराण में भी लिखा मिलता है। गो-सेवा भारतीय संस्कृति का प्रतीक रहा है। भारतवर्ष के राजा कितनी निष्ठा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

से गो सेवा करते आये हैं हमें यह शिक्षा दिलीप के उदाहरण से ग्रहण करनी चाहिए। जिस देश के राजा ऐसे गो-भक्त हों उस समय की प्रजा कितनी गोभक्त होगी यह विचारणीय विषय है। परन्तु दुःख से कहना पड़ता है कि आज भारत के स्वामी गो-सेवा की महिमा नहीं समझते इसीलिये प्रजा भी गो-सेवक नहीं रही।

भगवान् राम और गौ

गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है—

'विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार'

श्री रामचन्द्र जी इस भूतल पर गो-हित एवं मानव-हित के लिए पैदा हुए थे। श्री राम का बाल्य जीवन गौओं और गोवत्सों के संसर्ग में बीता। अध्यात्म रामायण में बताया गया है—

अङ्गणे रिङ्गमाणं तं तर्णका ननु सर्वतः ॥
दृष्ट्वा दशरथो राजा कौसल्या तदा ।...॥
शिक्यस्थं पातयामास गव्यं च नवनीतम् ।
बाल० ३।४६, ४७, ५४॥

आशय यह है कि "भगवान् राम आंगन में गो-वत्सों के पीछे पीछे सब ओर घूमते थे। यह देख कर राजा दशरथ और कौसल्या प्रसन्न होते थे। एक बार श्री रामने छीके पर रक्खे हुए दूध, दही और मक्खन को नीचे गिराकर अपने भाइयों को बांटा था।"

नरमांस-भोजी तथा यज्ञ-विध्वंसी राक्षसों के नष्ट करने में भी गोहित निहित था।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

राघवेन्द्र भगवान् रामचन्द्र की जीवन झांकी का वर्णन करते हुए देवर्षि नारद जी ने कहा है—

"गवां कोट्यस्युतं दत्त्वा विद्वद्भ्यो विधिपूर्वकम् ।"
(वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड अ० १।१।६४)

भगवान् राम ने दस सहस्र करोड़ (एक खर्ब) गौएं विद्वानों को विधिपूर्वक दान की थीं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी जब बन जाने लगे, तब उनके पास त्रिजट नाम के एक दरिद्र ब्राह्मण ने याचना की। भगवान् राम ने विनोद में उनसे कहा—'विप्रवर, आप अपना डंडा जितनी दूर फेंक देंगे, यहां तक की सारी गायें आपको मिल जायेंगी।' ब्राह्मण ने बड़े जोर से घुमाकर डंडा फेंका। ब्राह्मण के हाथ से छुटा हुआ वह डंडा सरयू जी के उस पार हजारों गायों के गोष्ठ में जा कर गिरा। भगवान् श्री राम ने त्रिजट का सम्मान करके वहां तक की सारी गायें उस ब्राह्मण के आश्रम में भेज दीं।

स शाटीं परितः कट्यां संभ्रान्तः परिवेष्ट्यताम् ॥
आविध्य दण्डं चिक्षेप सर्वप्राणेन वेगितः ॥
स तीर्त्वा सरयूपारं दण्डहस्तस्य कराच्च्युतः ।
गोव्रजे बहुसाहस्रे पपातो ज्ञणसंनिधौ ॥
(वा०रा० अयोध्याकाण्ड २।३२।३५—३८॥

इन श्लोकों का भाव पहले कहा जा चुका है।

इस प्रकरण से पता चलता है कि रामायण काल में गायें बहुत बड़ी संख्या में पाली जाती थीं। अनेकों स्थानों पर वर्णन मिलता है कि महाराजा दशरथ के महल में जहां और बहुत बहुमूल्य पदार्थ थे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हाँ अमूल्य गौएं भी बहुत थीं। यही कारण है रामायणकाल को म आज भी आदर्श रूप देते हैं। राष्ट्र को राम-राज्य बनाने के लिए ो-पालन अत्यावश्यक है। इन प्रमाणों से यह अनुमान किया जा कता है कि रामायण-काल में गोमाता का कितना आदर था। इससे ौओं की प्रतिष्ठा की पूर्ण अभिव्यक्ति हो जाती है। इस प्रकार गवान् श्री राम के गो-हित का ध्यान करते हुए रामभक्त सदा गो-हित ा ध्यान रखते हैं। सच्चा रामभक्त बनने के लिए हमें भी गौ-सेवा रनी चाहिए।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा कामधेनु को स्तुति

त्वं माता सर्व देवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम् ॥
त्वं तीर्थं सर्व तीर्थाणां नमस्तेऽस्तु सदानघे ॥
(स्कन्दपुराण, ब्रह्म० धर्मारण्य० १०)

हे निष्पापे ! तुम सब देवताओं की माता, यज्ञ की कारण-रूपा ौर सम्पूर्ण तीर्थों की तीर्थ-रूपा हो। हम सदा तुम्हें नमस्कार करते हैं।

शंकर जी द्वारा सुरभि स्तवन

सृष्टिस्थिति विनाशानां कर्त्र्यै मात्रे नमो नमः ॥
या त्वं रसमयै र्भावैराप्याययसि भूतलम् ।
देवानाञ्च तथा संघान् पितृणामपि वै गणान् ॥
सर्वै ज्ञात्वा रसाभिज्ञैर्मधुरास्वाददायिनी ।
त्वया विश्वमिदं सर्व बल स्नेह समन्वितम् ॥
त्वं माता सर्व रुद्राणां वसूनां दुहिता तथा ।
आदित्यानां स्वसा चैव तुष्टा वाञ्छित सिद्धिदा ।
त्वं धृतिस्त्वं तथा पुष्टिस्त्वं स्वाहा त्वं स्वधा तथा ।
ऋद्धिः सिद्धिस्तथा लक्ष्मीर्धृतिः कीर्तिस्तथा मतिः ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कान्तिर्लज्जा महामाया श्रद्धा सर्वार्थसाधिनी ॥

(स्कन्द० नागर० २५८।३०–३४ श्लोक)

अर्थ:—सृष्टि, स्थिति और विनाश करने वाली माता ! तुम्हें बार बार नमस्कार है। तुम रसमय भावों से समस्त पृथ्वी तल, देवताओं और पितरों को तृप्त करती हो। रसाभिज्ञ सभी से तुम परिचित हो, मधुर स्वाद देने वाली हो। सम्पूर्ण चराचर विश्व को तुम्हीं ने बल और स्नेह का दान दिया है। देवि ! तुम रुद्र ब्रह्मचारियों की माता, वसुओं की पुत्री, आदित्यों की स्वसा और सन्तोषमयी वाञ्छित सिद्धि देने वाली हो। तुम्हीं धृति, पुष्टि, स्वाहा, स्वधा, ऋद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी, धारणा, कीर्ति, मति, कान्ति, लज्जा, महामाया, श्रद्धा और सर्वार्थ साधने वाली हो।

यह स्तुति अपने समय के बहुत बड़े विद्वान् एवं राजा शिव महाराज कर रहे हैं जिनकी राजधानी कैलाश थी। पुरातन समय में राजा महाराजा कितनी गो सेवा करते थे और गो-महिमा उनके हृदय में कैसे ओत-प्रोत थी यह इन प्रमाणों से समझा जा सकता है।

इस गोसेवा से शंकर जी का नाम वृषभध्वज एवं वृषकेतु पड़ गया। देवताओं ने मिलकर श्री शंकर जी को "पशुपति" की उपाधि भी दी।

मनुस्मृति में गाय की महिमा

गोपः क्षीरभृतो यस्तु स दुह्याद्दशतो वराम् ।
गो स्वाम्यनुमते भृत्यः सा स्यात् पालेऽभृते भृतिः ॥

(मनु० अ० ८–२३१)

गो स्वामी की अनुमति से ग्वाले को दस गाय में एक गाय का दूध लेने का अधिकार है। यह ही उसका वेतन होगा।

इस श्लोक से पता चला कि पहले गो स्वामी होते थे और गायें रखते थे। वेतन में भी गाय का दूध ही दिया जाता था।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

संस्कृत में चरवाहे को गोप कहते हैं। गोप का सीधा अर्थ गौओं की पालना करने वाले से है। भारत में गाय से मानव का कितना व्यापक सम्बन्ध था !

मांस का निषेध

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रय विक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः।
(मनु० ५—५१)

अर्थात् मांस खाने वाले को ही हिंसा का पाप नहीं लगता किन्तु उसमें मारने वाला, वेचने वाला, खरीदने वाला, पकाने वाला आदि सभी सम्मिलित हैं।

इस प्रकार से जो गोवध को शास्त्र-सम्मत बतलाते हैं—वे इस मनु वचन से शिक्षा ग्रहण करें।

मनुजी महाराज ने तो अनेक स्थान पर यहां तक लिख दिया है कि "गोशाला में लघुशंका करने वाला पापी होता है। कभी भी गौ की तरफ मुख करके पेशाव न करें।"

ऋषियों के मस्तिष्क में गाय को बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त था। वे माता का भाव रखते थे। यह प्रमाण अतीव प्राचीन काल का है। कई विद्वानों का मत है कि मनुस्मृति सृष्टि के आदि की पुस्तक अर्थात् वेद के बाद की दूसरी पुस्तक है। "ब्राह्मण की गौ चुराने वाले, बांझ गाय को हल में जोतने वाले और हरण करने वाले के लिए राजा को चाहिए कि उसका आधा पैर कटवा दे।" मनु. ८।३२५॥

महाभारत में गाय का महत्व

महाभारत का युग आज से साढ़े पांच हजार वर्ष पूर्व का युग था। उस समय भी देश में गायें देश के धन के रूप में मानी जाती

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

थीं। अकेले नन्द के यहां नौ लाख गायों का धन था। श्री कृष्ण गोपाल ही कहलाते हैं। विराट के यहां बहुत गायें विद्यमान थीं। महाभारत में लिखा है—

गावः श्रेष्ठाः पवित्राश्च पावना जगदुत्तमाः।
ऋते दधिघृताभ्यां च नेह यज्ञः प्रवर्तते॥

पयसा हविषादध्ना शकृता मूत्रचर्मणा।
अस्थिभिश्चोपकुर्वन्ति बालैः शृङ्गैश्चभारत।
गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत॥

गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।
मातरः सर्वभूतानां गावः सर्व सुख प्रदाः॥

अर्थः—गौएं सर्व श्रेष्ठ तथा पवित्र, पूजा करने योग्य और संसार भर में सबसे उत्तम हैं, क्योंकि दही, घृत आदि गव्य के बिना संसार में कोई यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता। हे अर्जुन! गौएं दूध से, घृत से, दही से, गोबर से, मूत्र और चर्म से तथा हड्डियों, बालों और सींगों से भी हमारा उपकार करती हैं। हे पार्थ! मैं गोधन के तुल्य संसार में और कोई धन नहीं मानता क्योंकि गौएं सदा लक्ष्मी की मूल हैं। इनमें पाप का मूल (निवास) नहीं है। इसीलिए ये प्राणिमात्र के लिए माता के समान समस्त सुख देने वाली हैं।

महाभारत में गौ वध निषेध

अघ्न्या इति गवां नाम क एता हन्तुमर्हति।
महच्चकाराकुशलं वृषं गां वालभेत्तु यः॥

(महा० शान्ति० अ० २६…

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्थः—"गौओं का नाम अघ्न्या है। इनको कौन मार सकता है! जो गाय अथवा बैल को मारेगा वह बहुत बुरा कार्य करेगा।" वेद में जो बात कही है—वही यहां पर अघ्न्या शब्द से दोहराई गई है।

अज्ञातवास के लिए बन में जाते हुए सहदेव को घोषणा

पञ्चानां पाण्डुपुत्राणां ज्येष्ठो राजा युधिष्ठिरः।
तस्याष्टशत साहस्रा गवां वर्गाः शतं शतम्॥
अपरे शत साहस्रा द्विस्तावन्तस्तथापरे।
तेषां गो संख्य आसां वं तन्तिपालेसि मां विदुः॥
(महा· विराटपर्व० ६।६–१०।)

जिस समय पाण्डव विराट के यहां गये उस समय सहदेव ने अपने को पाण्डवों का 'तन्तिपाल' नामक गोऽध्यक्ष बतलाकर कहा—'पाँचों पाण्डवों में सबसे बड़े युधिष्ठिर महाराज के यहां गायों के हजार-हजार तथा लक्ष-लक्ष के वर्ग थे। जिनमें प्रत्येक को मिलाकर आठ लाख गायें थीं। चालीस कोस में जितनी गायें थीं—उन सबका ब्यौरा मुझे रहता था। उत्तम लक्षणों वाले ऐसे बैलों की भी मुझको पहचान है, जिनका मूत्र सूंघने मात्र से बन्ध्या स्त्री को भी गर्भ रह जाता है। अतः मेरा नाम अरिष्टनेमि है।'

पाण्डव कितने गौ सेवक थे

महाराज युधिष्ठिर इतने बड़े गो-सेवक थे कि जब दुर्योधन को पाण्डवों के अज्ञातवास का पता नहीं लगा तब भीष्म पितामह ने उनसे महाराज युधिष्ठिर की निवास भूमि के लक्षण बतलाते हुए कहा—

'गावश्च बहुलास्तत्र न कृशा न च दुर्बला।
पयांसि दधि सर्पींषि रसवन्ति हितानि च॥
(महा० विराट० २८।२२)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'जहाँ युधिष्ठिर रहते होंगे, वहाँ गायों की संख्या बहुत होगी, गायें सब कृष एवं दुर्बल न होकर खूब हृष्ट पुष्ट होंगी। तथा उनके दूध, दही और घी भी बड़े सरस तथा हितकारक होंगे।'

महाराजा विराट के यहाँ लाखों गायें थीं। जिस समय कौरवों ने स्वयं आकर इनका हरण किया तब अर्जुन ने जो उस समय बृहन्नला बना हुआ था, गायों की रक्षा की। सब गायों को छुड़ा कर वापिस विराट के दरबार में गायों का प्रवेश अर्जुन ने कराया।

(महा० विराट पर्व)

इस इतिहास के आलोड़न से पता लगता है कि महाभारत काल में भारत में बड़ी संख्या में गायें पाली जाती थीं।

महर्षि का मूल्य—गौ

महाभारत के अनुशासन पर्व में एक कथा इस प्रकार है—

महर्षि च्यवन अभिमान, क्रोध, हर्ष और शोक का त्याग करके तपस्या में विराजमान थे। एक बार वे पानी में ध्यान निमग्न थे। मल्लाहों ने गङ्गा जी में जाल डाल दिया। जब जाल खींचा गया तो जल-जन्तुओं से घिरे हुए महर्षि जी भी खिंच आए। जाल में महर्षि को देखकर मल्लाह डर गए और उनके चरणों में सिर रखकर प्रणाम करने लगे। जल के बाहर आने से और स्थल का स्पर्श होने से मत्स्य कलपने लगे। इस पर च्यवन भी लम्बे-लम्बे सांस लेकर कहने लगे कि ये प्राणी जीवित रहेंगे तो मैं भी जीवित रहूंगा, अन्यथा इनके साथ ही मर जाऊंगा। मुनि की बात से मल्लाह डर गये और उन्होंने काँपते हुए जाकर सारा समाचार महाराज नहुष को सुनाया।

मुनि की सङ्कटमय स्थिति जानकर राजा नहुष अपने मन्त्री और पुरोहित को साथ लेकर तुरन्त वहाँ गये। अपना परिचय देकर राजा ने कहा—'मुनिवर, आज्ञा कोजिए, मैं आपका कौनसा प्रिय कार्य करूं!

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

महर्षि च्यवन ने कहा 'राजन्, इन मल्लाहों ने आज बड़ा परिश्रम किया है। अतः आप इनको मेरा मूल्य चुका दीजिए।' राजा ने तुरन्त ही मल्लाहों को एक हजार स्वर्णमुद्रा देने के लिए कहा।

इस पर च्यवन ऋषि बोल उठे—'एक हजार स्वर्ण-मुद्रा मेरा उचित मूल्य नहीं हैं।"

इस पर राजा ने एक लाख मुद्रा देने को कहा। इस पर भी ऋषि ने वही उत्तर दिया। फिर राजा ने एक करोड़ मुद्रा, अपना आधा राज्य और बढ़ते-बढ़ते सारा राज्य देने के लिए कहा। परन्तु ऋषिवर राजी नहीं हुए।

महर्षि का वचन सुनकर राजा बड़ा दुःखी हुआ। इसी समय एक दूसरे ऋषि ने राजा को संकेत किया कि 'एक ब्राह्मण का मूल्य संसार में कभी नहीं आँका जा सकता। ठीक इसी प्रकार गोधन भी अमूल्य धन शास्त्रों में कहा है। अतएव इनकी कीमत में आप एक गाय दे दीजिए।'

महर्षि का वचन सुनकर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने तुरन्त ऋषिवर च्यवन को यही सन्देश सुना दिया। महर्षि च्यवन प्रसन्न हो गये। च्यवन ने कहा—'राजेन्द्र ! आपने मुझे उचित मूल्य देकर खरीद लिया है। मैं इस संसार में गायों के समान दूसरा कोई धन नहीं समझता।'

'कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम् ॥२७॥
अमृतं ह्यव्ययं दिव्यं क्षरन्ति च वहन्ति च।
अमृतायतनं चैताः सर्वलोक नमस्कृताः ॥३०॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इत्येतद् गोषु मे प्रोक्तं महात्म्यं भरतर्षभः।
गुणैकदेश वचनं शक्यं पारायणं न तु ॥३४॥
(महा० अनु० ५१।२७,३०,३४)

वीरवर ! गायों के नाम और गुणों का कीर्तन करना, सुनना, गायों का दान देना और उनके दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है।

गायें विकार-रहित दिव्य अमृत धारण करती और अमृत-आधारा ही हैं। समस्त लोक उनको नमस्कार करते हैं। राजन् ये जो मैंने गायों का महात्म्य कहा है सो केवल उनके गुणों के एक अंश का दिग्दर्शन-मात्र है। गौओं के सम्पूर्ण गुणों का वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।'

यह उपदेश सुनकर राजा नहुष ने गौ सेवा की प्रतिज्ञा की और अपने नगर को लौट आए। महर्षि अपने आश्रम को लौट गये।

इस कथानक से गो महिमा स्पष्ट भासित हो रही है। राज्य से भी बढ़कर ऋषि ने एक गाय का मूल्य समझा। ऋषि गोमाता का मूल्य जीवन से भी अधिक समझते थे।

गाय को दान में देना धर्म और बेचना पाप

यज्ञादि की दक्षिणा में ब्राह्मणों को राजा सहस्रों गायें दान देते थे। राजा नृग ने अनेक बार दश-दश सहस्र तथा लक्ष-लक्ष गायें ब्राह्मणों को दी थीं। राजा जनक ने एक सहस्र गायें महर्षि याज्ञवल्क्य को दी थीं। अभिमन्यु के विवाह के पश्चात् महाराजा युधिष्ठर ने ब्राह्मणों को हजारों गायें दान में दी थीं। महाभारत में लिखा है—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ब्राह्मणेभ्यो ददौ वित्तं यदुपाहरदच्युतः ।
गोसहस्राणि रत्नानि वस्त्राणि विविधानि च ॥
(महा० विराट० अ० ७२)

'युधिष्ठिर ने हजारों गायें, रत्न और वस्त्र ब्राह्मणों को दान में भेंट किये।' प्राचीन ग्रंथों में लिखा है—"दानानामपि सर्वेषां गवां दानं प्रशस्यते।" अर्थात् सब दानों में गाय का दान सर्वश्रेष्ठ है। और भी देखिये—

सुवर्णश्रृङ्गैस्तु विराजितानां, गवां सहस्रस्य नरः प्रदानात्।
प्राप्नोति पुण्यं दिविदेवलोकमित्येवमाहुर्दिवि देवसंघा॥
(महाभारत)

अर्थात् स्वर्ण से सुशोभित सींगों वाली एक हजार गायों के दान करने से मनुष्य देव लोक को प्राप्त करता है—ऐसा सब विद्वानों का मत है।

अमृतं वै गवां क्षीरमित्याह त्रिदशाधिपः।
तस्माद् ददाति यो धेनुममृतं स प्रयच्छति॥
(महा० अनुशासन० अ० ६६)

अर्थात् गायों का दूध ही अमृत है ऐसा महाराज इन्द्र ने कहा है। अतः जो धेनु का दान करता है वह मानो अमृत का दान करता है।

गावः शरण्या भूतानामिति वेदविदो विदुः।
तस्माद् ददाति यो धेनुं शरणं संप्रयच्छति॥

अर्थ—गाएं प्राणियों को शरण देती हैं, उनका दूध आदि से पालन पोषण करती हैं, ऐसा वेदज्ञ विद्वानों का मत है। अतः जो गाय का

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दान करता है, मानो वह शरणार्थी मनुष्य को शरण देता है।

एक बार युधिष्ठिर जी ने भीष्म जी से पूछा कि महाराज दानों में श्रेष्ठ दान कौनसा है ? उत्तर में भीष्म जी कहते हैं—

हिरण्यदानं गोदानं पृथिवीदानमेव च ।
एतानि वै पवित्राणि तारयन्त्यपि दुष्कृतम् ॥

'स्वर्ण दान, गोदान और भूमि दान ये तीनों श्रेष्ठ हैं, यह पापी का भी उद्धार करते हैं।' युधिष्ठिर जी फिर प्रश्न करते हैं कि भूमि आदि का दान तो सब नहीं कर सकते, अतः जिस वस्तु का सब दान कर सकें या जिस दान का वेद में विधान हो, उसका मुझे उपदेश करें। भीष्म जी कहते हैं—

तुल्यनामानि देयानित्रीणि तुल्यफलानिच्च ।
सर्वकामफलानीह गावः पृथ्वी सरस्वती ॥

अर्थात् गौ का दान करना चाहिए—इसके तीनों अर्थ हो सकते हैं—गाय, भूमि और विद्या। इन तीनों के दान को श्रेष्ठ माना जाता है। जो गुरु शिष्य को विद्या दान करता है वह भी गाय और भूमि दान के तुल्य फल को प्राप्त करता है। 'तथैव गाव प्रशंसन्ति न देयं ततः परम्" इस प्रकार गायों की सभी प्रशंसा करते हैं इनसे बढ़कर और कोई दान नहीं है।

विदुर जी ने धृतराष्ट्र से कहा था—

असद्वृत्ताय पापाय लुब्धायानृतवादिने ।
हव्यकव्यव्यपेताय न देयागौः कथञ्चन ॥

अर्थात् 'पापी, लोभी, मिथ्याभाषी और यज्ञादि न करने वाले राक्षस को कभी गाय नहीं देनी चाहिए।' आजकल गायें किसी को

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बिना विचारे दे दी जाती हैं और फिर उनका मांस-चर्मादि के लिए वध होता है। यह शास्त्र विरुद्ध है। "न वधार्थं प्रदातव्या" वध के लिए गायें नही देनी चाहिएं।

प्राचीन भारत में गायें बेची नहीं जाती थीं। पातञ्जल महाभाष्य में लिखा है—"गाव उत्कालितपुस्कावाहाय च विक्राय च स्त्रिय एवाव-शेष्यन्ते" अर्थात् गायें बेची नहीं जाती थीं। बधिया किये हुए बैल ही बोझ भार वहन के लिए और बेचने के लिए होते थे। महाभाष्य का टीकाकार नागेश भट्ट लिखता है—"प्रायेण बलीवर्दा एव वाह्यन्ते विक्रीयन्ते च" प्रायः बैल ही भार वाहन और विक्रय के लिये होते हैं।

एक बार देवराज इन्द्र ने ब्रह्मा जी से प्रश्न किया—

जानन् यो गामापहरेद्विक्रीयाच्चार्थकारणात्।
एतद्विज्ञातुमिच्छामि क्व नु तस्य गतिर्भवेत्॥

"जो मनुष्य जान कर गौ को हरता है या धन के लिए बेचता है, उसकी क्या गति होती है मैं यह जानना चाहता हूं।' तब ब्रह्मा जी बोले—

ये दोषा यादृशाश्चैव द्विजयज्ञोपघातके।
विक्रये चापहारे च ते दोषा वै स्मृताः प्रभो॥

(महा० अनु० अ० ७४, श्लो० ५)

अर्थः—'जो दोष या पाप ब्राह्मण के यज्ञ को नष्ट करने में होते हैं, वे ही गौ को बेचने या हरण करने में भी होते हैं'। इस प्रकार प्राचीनकाल में गाय बेचना भारी पाप समझा जाता था। गाय ही क्या, उसके दूध का बेचना भी पाप समझा जाता था। "क्षीर विक्रयिणश्च ते वै निरयगामिनः" अर्थात् जो दूध बेचने वाले हैं वे नरक में गिरते हैं। अब भी कहावत है—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"जिसने दूध बेच दिया उसने पूत बेच दिया"

एक बार राजा दशरथ ने अश्वमेध यज्ञ किया, यज्ञ के निर्वि समाप्त होने पर राजा दशरथ ने होता के लिये पूर्व दिशा का रा अध्वयु के लिये प्रतीची दिशा, ब्रह्मा के लिये दक्षिण दिशा, उद्गाता लिए उदीची दिशा का राज्य दक्षिणा में दे दिया, तो ऋषियों ने क "न भूम्या कार्यमस्माकं नहि शक्ताः स्म पालने" हे राजन् ! ह भूमि का क्या करेंगे, हम तो पालने में असमर्थ हैं। हमें तो—

मणिरत्नं सुवर्णं वा गावो वा यद्गा समुद्यतम्।
तत्प्रयच्छ नृपश्रेष्ठ धरण्या न प्रयोजनम्॥
(बाल्मीकि रामायण—सर्ग १४२—४८॥

अर्थात् 'हे राजन् ! भूमि से हमें क्या प्रयोजन ? हमें तो ग सुवर्णादि धन प्रदान करो।' तब राजा दशरथ ने उनको गायों का द सहस्र समूह भेंट किया।

'गवां शतसहस्राणि दश तेभ्यो ददौ नृपः ॥१४२।४६।

'दश सहस्र गायें दक्षिणा में दीं'।

इसी प्रकार दशरथ ने पुत्रों की उत्पत्ति के पीछे ब्राह्मणों के लि हजारों गायें भेंट में दीं।

इस प्रकरण से पाठक महानुभाव समझ गये होंगे कि प्राची भारत में गौ बेची नहीं जाया करती थीं अपितु दान में दी जाती थी बेचना पाप था। मारने के लिये कोई गाय को खरीद नहीं सकता थ गोवध बड़ा भारी पाप समझा जाता था।

(महाभारत अनु० अ० ७४ श्लो० ३-४ में स्पष्ट लिखा है—
विक्रयार्थं हि यो हिंस्याद्भक्षयेद्वा निरङ्कुशः।
घातयानं हि पुरुषं येऽनुमन्येयुरर्थिनः॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

घातकः खादको वापि तथा यश्चानुमन्यते ।
यावन्ति तस्या रोमाणि तावद्वर्षाणिमज्जति ॥

अर्थः—विक्रय के लिए गोहिंसा करे या स्वयं खाये तथा जो मारने वाले का अनुमोदन करे उन सभी का, जितने गौ के शरीर पर रोम होते हैं उतने वर्ष तक दुःख सागर में बेड़ा गर्क हो जाता है।'

महाभारत काल में गोवध नहीं होता था—इसी कारण से तो महाभारत के समय गायें छयानवे करोड़ थीं और मनुष्य १६ करोड़ थे। परन्तु अब मनुष्य ४० करोड़ हैं और गायें केवल दो करोड़ शेष रह गई हैं। अनुपात से पहले एक मनुष्य के भाग में ६ गायें आती थीं किन्तु अब २० मनुष्यों के भाग में एक गाय आती है। पहले प्रत्येक मनुष्य यथाशक्ति गायें पालता था। राजा महाराजा तो लाखों करोड़ों गाएं पालते थे। स्वयं भगवान् कृष्ण ने गाएं चराईं। अब आगे उनका वर्णन किया जाता है।

भगवान् कृष्ण और गोमाता

भगवान् कृष्णचन्द्र का गायों से अतीव प्रेम था। वे बाल्य-काल से ही गायों की सेवा में रत रहे हैं। कवियों ने कैसे मनोहर पद गाए हैं—

'गोविन्द गैयन को अति प्यारो।
मुरली मधुर बजावत, गावत लीन्हें गाय सहारो॥'

बाल्यकाल में श्री कृष्ण जी स्वयं दूध निकालते थे।

'दे मैया री दोहनी, दुहि लाऊं गैया।
माखन खाय बल भयो, तोहि नन्द दुहैया॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सेंदुर काजरि धूमरी धौरी मेरी गैया।
ग्वालन के संग दुहत हौं, दुझौ बल भैया।
सुर निरखि जननी हंसी. तब लेत बलैया ॥'

श्री गोपाल जी स्वयं गायें चराने जाते हैं।
"मैया री ! मैं गाय चरावन जैहों।
तू कहि महरि नन्द बाबा सों, बड़ो भयो न डरैहौं।'

सूरदास जी के और भी कितने ही ऐसे पद हैं जिनसे ऐसे भाव प्रकट होते हैं—

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।
भोर भये गैयन की पीछे सांझ परे घर आयो।

गायों की पालना से ही श्री कृष्ण का नाम गोपाल पड़ा था। श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत की भूमि को गायों के लिए छुड़ा दिया था। उस भूमि में गायों की पूजा की गई अर्थात् उस पावन पर्वत-स्थली में गौओं का वर्धन हुआ। इसीलिए वह स्थान भी पूजा के योग्य हो गया। श्री मद्भागवत में आता है—

धेनूनां रुक्मश्रृङ्गीणां साध्वीनां मौक्तिकस्रजाम्।
पयस्विनीनां गृष्टीनां सवत्सानां सुवाससाम्॥
ददौ रूप्यखुराग्रणां क्षौमाजिनतिलैः सह।
अलंकृतेभ्यो विप्रेभ्यो बद्वं बद्वं दिने दिने ॥(भा. १०।७०।८-९)

भगवान श्री कृष्ण प्रति दिन सन्ध्या, तर्पण और गुरुजन-पूजन करने के उपरान्त पहले पहल ब्यायी हुई, दुधार, बछड़ों वाली, सीधी, शान्त; वस्त्रालङ्कारों से सुसज्जित तेरह हजार चौरासी गायों का दान किया करते थे।

श्री कृष्ण के जन्मोत्सव पर नन्द ने २० लाख गायें ब्राह्मणों को दान भी दीं (भा० १०।५।३)

गोहित के लिये आजीवन कृष्ण ने संघर्ष किया है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पुराण और गौ

पुराणों में गायों की बड़ी महिमा लिखी हुई है—

ब्रह्मपुराण में लिखा है—
मनुष्यैस्तृण तोयाद्यै र्गावः पाल्याः प्रयत्नतः ।
देयाः पूज्याश्च पोष्याश्च प्रतिपाल्याश्च सर्वदा ॥

अर्थः—'तृण और जल से मनुष्य को सदा गायों का पालन करना चाहिए। वे सदा देने योग्य, पूजा के योग्य पोषण के योग्य और पालन के योग्य हैं।' आगे भी—

दक्षिणोत्तरगैः प्रह्वै र्गन्तव्यं च पदातिभिः ।
गावः कृशतराः पाल्याः श्रद्धयापितृमातृवत् ॥ ब्रह्मपुराण।

'जूता या पादुका पहन कर उनके पास जाना उचित नहीं है। रोगी या दुबली-पतली गायों का माता पिता की तरह पालन करना चाहिए।'

इस आदेश को हमें अतीव ध्यान से याद करना होगा। आज तो गाय को पैर की ठोकर से उठाते हैं।

'देवी पुराण में गो परिचर्या'

गोपालको गवां गोष्ठे यस्तु धूमं न कारयेत् ।
मक्षिकालीन नरके मक्षिकाभिः स भक्ष्यते ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गोष्ठ (गोशाला) में रहकर जो गोपाल धुआं नहीं करता, अं मक्खियों से भरे हुए नरक में मक्खियां खाती हैं।

गायों की रक्षा के लिए गोशालाएं बननी चाहिएं। वर्षा ऋतु या प्रातः सायं मक्खी मच्छरों के समय में धुआं होना चाहिए। अर्था गाय का हर समय हर तरह से ध्यान रखना चाहिए।

पद्मपुराण में गौओं के लिए लिखा है—

तस्माद्गवां प्रचारं तु मुक्त्वां स्वर्गान्नहीयते।
यश्छिनत्ति द्रुमं पुण्यं गोप्रचारं छिनत्त्यपि॥
तस्यैकविंशपुरुषाः पच्यन्ते रौरवेषु च।
गोचारघ्नं ग्रामगोपः शक्तो ज्ञात्वा तु दण्डयेत्॥

(पद्मपुराण सृष्टिखण्ड अ० ५९ श्लोक ३९-४०)

गोचरभूमि छोड़ने वाला कोई भी स्वर्ग से भ्रष्ट नहीं होता जो मनुष्य गोचर भूमि को रोक लेता है, और पवित्र वृक्षों को का डालता है, उसकी २१ पीढ़ी रौरव नरक में गिरती हैं। जो व्यक्ति गौओं के चरने में बाधा डालता है, ग्रामरक्षक को चाहिए कि उ दण्ड दे।

इन श्लोकों में स्पष्ट गोचर भूमि छोड़ने का विधान है।

पद्मपुराण—गौशाला कैसी हो ?

गोष्ठं च कारयेत्तस्य किञ्चिद् विघ्नविवर्जितम्।
सदा गोमय मूत्राभ्यां विघसैश्च विवर्जितम्॥
न मलं निक्षिपेद्गोष्ठे सर्वदेव निकेतने।
आत्मनः शयनीयस्य सदृशं कारयेद् बुधः॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

समं निर्वापयेद् यत्नाच्छीतवातरजस्तथा ।
प्राणस्य सदृशे पश्येद् गां च सामान्य विग्रहम् ।।
(पद्म पु० सृ० ४८ ।१११–११३)

गौओं के लिये एक ऐसा गोष्ठ बनाना चाहिए जिसमें कुत्ते, मक्खी. मच्छर, डांस, चोर आदि का कोई भी विघ्न न हो। गोबर, गोमूत्र तथा बचे-खुचे घास चारे का कूड़ा पड़ा न रह जाय। गौओं का गोष्ठ सारे देवताओं का निवास-स्थान है। उसमें मल नहीं डालना चाहिए। समझदार आदमी को चाहिए कि गोष्ठ को अपने शयन करने के कमरे के समान साफ सुथरा रखें। इसे सर्दी, वायु और धूल से समान भाव से बचाये रखना चाहिए। गाय माता को अपने प्राणों के समान देखना चाहिए।
(स्कन्द पुराण—ब्रह्म० धर्मारण्य १०)

त्वं माता सर्व देवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थाणां नमस्तेऽस्तु सदानघे।

हे निष्पाप ! तुम सब देवताओं की माता, यज्ञ की कारणरूपा, और सम्पूर्ण तीर्थों की तीर्थरूपा हो। हम सदा तुम्हें नमस्कार करते हैं।

इस प्रकार सारे पुराण गो-महिमा से भरे पड़े हैं। श्रीमद्भागवत् में राजा नृग का वर्णन आया है कि उसने लाखों गायें दान में दी थीं। (स्कन्दपुराण आवन्त्यखण्ड रेवाखण्ड अ० ६३ श्लोक १०४ से ११०) में गाय का विश्व रूप आया है। पद्मपुराण सृष्टिखण्ड अ० ४८ में भी आया है।

गवां रज खुरोद्धूतं शिरसा यस्तु धारयेत्।
सर्वतीर्थ जले स्नातः सर्वपापै मुच्यते ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गोधूलि को मस्तक पर धारण करने से सब तीर्थ स्नान हो जा
है और सब पापों से छुट जाता है।

(भविष्यपुराण उत्तर० अ० १५६।१६-२०)

गाय के दोनों नेत्रों में सूर्य और चन्द्रमा, जीभ में सरस्व
दांतों में मरुत देवता हैं.........। इस प्रकार गाय सर्व-देवम
विश्व-रूपिणी देवी है।

स्कन्दपुराण अ०रे० ८३।१०८ में गोबर की महिमा लि
हुए बतलाया है कि गोमय से ही चौका लगाना चाहिये।

लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमङ्गला।
गोमयालेपनं तस्मात् कर्तव्यं पाण्डुनन्दन: ॥

गाय के गोबर में सब प्रकार का कल्याण निहित है। इस
गोबर से चौका लगाना चाहिए।

गोबर के अन्दर कीटाणु मारने के लिए कई प्रकार के ग
होते हैं।

हमारे पुराण पुस्तकों में गौ की अतीव महिमा लिखी है।
तो अति संक्षेप से दर्शाया है। केवल पुराणों में से गो महिमा
लिखा जावे तो एक बड़ा ग्रंथ रचा जा सकता है।

इति विस्तारभयेन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बौद्ध धर्म और गौ माता

बौद्ध धर्मावलम्वी लोग इस समय 'मांसभक्षण' की लहर में बहते जा रहे हैं—इस प्रवाह को देखकर कुछ लोगों का विचार यह होता जा रहा है कि बौद्ध धर्मानुयायी पहले से ही गोमांस-भक्षक रहे होंगे। परन्तु यह कल्पना नितांत असत्य है। मैं इस प्रकरण में यह दिखाने जा रहा हूं कि महात्मा बुद्ध की दृष्टि में और उनके बौद्ध-साहित्य में गाय का क्या स्थान है?

भगवान बुद्ध और गौ माता

भगवान् गौतम बुद्ध आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व इस आर्यस्थली में पैदा हुए थे। वे करुणा के अवतार थे। उनके हृदय में प्राणियों के प्रति दया भरी हुई थी। वे किसी भी प्राणी को कष्ट में देखकर चुप नहीं रह सकते थे। इस दया भाव ने ही तो उनसे घर का त्याग करवाया था। यह करुणा उन्हें बाल्यकाल से ही प्राप्त थी। गाय जैसे परोपकारी प्राणी के लिए तो उनका हृदय कैसे उपेक्षा कर सकता था? उन्होंने अपनी अमूल्य सम्मति निम्न रूप में प्रकट की थी—

इसयो पुब्बका आसुं, सञ्ञतत्ता तपस्सिनो ॥१॥
ब्रह्मचरियं च सीलं च अज्जवं मद्दवं तपं।
सोरच्चं अविहिंसं च, खन्ति चापि अवण्णयुं ॥६॥
तण्डुलं सयनं वत्थं सप्पि तेलं च याचिय।
धम्मेन समोधानेत्वा, ततो यञ्ञमकप्पयुं।
उपट्ठितस्मिं यञ्ञस्मिं, नास्सु गावो हनिंसु ते ॥१३॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यथा माता पिता भ्राता, अञ्ञे वापि च ञातका।
गावो नो परमा मित्ता, यासु जायन्ति ओसधा ॥१३॥

अन्नदा बलदा चेता, वण्णदा सुखदा तथा।
एतमत्थवसं ञत्वा नास्सु गावो हनिंसु ते ॥१४॥

अर्थ—पूर्व के ऋषि संयमी और तपस्वी थे। ब्रह्मचर्य, शी सरलता नम्रता, तप, मृदुता, करुणा और क्षमा—इन गुणों की प्रशंसा करते थे। चावल, शय्या, वस्त्र, घी, तेल की याचना करके के अनुसार उनका विभाग निकाल कर वे यज्ञ करते थे। यज्ञ उपस्थित होने पर वे गौ को मारते नहीं थे। माता, पिता, भाई अ अन्य बान्धवों के समान ही गौओं को वे अपना परम मित्र जानते उनसे औषधि निर्माण होती हैं, वे अन्न, बल, रूप और सुख देती यह जानकर वे गौओं को मारते नहीं थे।'

आगे भी लिखा है—'वे ऋषि सुकुमार, महाकाय, वर्णव और यशस्वी ब्राह्मण कर्तव्याकर्तव्य का विचार रखते हुए धर्म का आचरण करते थे। जब तक ऐसे ब्राह्मण देश में थे, तब तक प्र सुखी थी। यह प्रमाण 'ब्राह्मण धम्मिय सुत्त' में मिलते हैं।

इस कथन से स्पष्ट हो गया होगा कि गाय के प्रति भगवान् बु के हृदय में कितनी करुणा थी—वे गायों को अन्न-बल-सौन्दर्य सुख देने वाली स्वीकार करते हैं। गाय को माता, पिता और ब भाई कह रहे हैं। जिस समय इन निरीह पशुओं की हिंसा बुद्ध देखी तो कहने लगे—

अधम्मो इति पक्कंदु, यं सत्थि निपतिं गवे ॥२७॥
गौ पर शस्त्र चला, यह बड़ा भारी अधर्म हुआ।
उस समय यालु महापुरुष ने घोषणा की कि—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
एवमेसो अनुधम्मो, पोराणो विञ्ञु ग रहितो ॥३०॥

'सत्र पूर्व के ज्ञानियों ने गोहत्या की निन्दा की है। गोहत्या नीच कर्म है।'

'ब्राह्मणधम्मिय सुत्त' के उपर्युक्त वचनों से पता लगता है कि पुरातन ब्राह्म धर्म के विषय में महात्मा बुद्ध का क्या विचार था। अपने समय के स्वार्थी, धर्म-विरोधी, पाखण्डी ब्राह्मणों से वे इसलिये अलग हटते थे कि वे यज्ञों में मांस डालने पर उतारू हो गये थे। बुद्ध ने यज्ञ की हिंसा की बड़ी निन्दा की है। परन्तु गाय माता की पूजा की है। वे एक वार सारिपुत्र से कहते हैं—"जहाँ गौएं वंधा करतीं और जहाँ से अभी-अभी गौएं चरने के लिए गई होतीं, वहाँ मैं हाथ-पैरों पर चलकर छोटे बच्छड़ों का गोवर खाया करता था।"

(धर्मानन्द कौसुम्बी कृत 'भगवान् बुद्ध'—पूर्वार्द्ध)

कूटदन्त की प्रसिद्ध कथा—

(समण्ण फल सुत्त ४३—सम्युक्त में बुद्ध वचन १७६)

कूटदन्त सुत्त में यह कथा है कि गौतम बुद्ध ने कूटदन्त ब्राह्मण का यज्ञ में पशु बलि देने का विचार पलट दिया। कूटदन्त को बुद्ध जी ने यह जंचा दिया कि घी, मक्खन, दूध, चीनी और मधु से यज्ञ करना उत्तम है। पीछे कूटदन्त ब्राह्मण भिक्षु बन गया।

जातक माला (१०) में एक कथा है कि एक बार राजपुरोहित वर्षा के हेतु यज्ञ कराने के विचार से बुद्ध के पास आये। बुद्ध भगवान् ने उनसे पूछा कि यज्ञ में पशुओं की बलि देने से यदि वे स्वर्ग में जाते हैं तो याज्ञिक अपने आपको ही बलि देकर स्वर्ग क्यों नहीं जाते ?

यात्राकाल में पंचगव्य पदार्थों का सेवन बुद्धदेव जी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बतलाया करते थे। मेंढक ने एकबार उनसे पूछा, 'यात्रा में यदि अ जल न मिले तो क्या सेवन करना चहिए ?' बुद्ध ने कहा, 'दूध, द घी, मक्खन और मट्ठा पाँच गोरस ले सकते हैं।

(कित्ता पृ० १७—१

एक बार एक भिक्षु को कंवल की बीमारी हो गई। भगवा बुद्ध ने उसे गोमूत्र का काढ़ा पीने को कहा। (कित्ता १७-१

भगवान बुद्ध और सुजाता

४६ दिन तक उपवास करने पर भी गौतम को निर्वाण न मिला। सुजाता नामक युवती ने १६०० गायों को जेठी मधु के में चराकर उनके दूध से खीर बनाकर खिलाई तब उनको वास्तवि ज्ञान हुआ और वे बुद्ध बन गये।

धनञ्जय सेठ और गोदान

धनञ्जय सेठ महात्मा बुद्ध जी के एक शिष्य थे। सेठ जी अपनी पुत्री विशाखा का विवाह श्रावस्ती के मिगार सेठ के पुत्र पु वर्धन के साथ किया। धनञ्जय ने दहेज में असंख्य धन दान दिया; फिर इच्छा हुई कि कन्या को कुछ गायें भी दे दूं। उन्ह सेवकों से कहा—'जाओ, छोटा गोकुल खोल दो। कुछ सेवक एक कोस के अन्तर पर नगारा लेकर खड़े हो जाओ। १४० की जगह बीच में छोड़कर दोनों ओर आदमी खड़े हो जाओ जि गाएं इधर उधर न फैल सकें। जब सब ठीक खड़े हो जावें तो न बजा देना।' सेवकों ने ऐसा ही किया। जब गाएं एक कोस पहुं तब नगारा बजा, फिर दो कोस पर बजा—अन्त में तीन कोस फिर बजा। ३ कोस लम्बाई और १४० हाथ चौड़ाई में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इतनी भर गईं कि वे एक दूसरे से रगड़-रगड़ कर चल रही थीं। सेठ ने कहा, 'बस, दरवाजा बन्द कर दो—मेरी पुत्री को ये गायें पर्याप्त हैं।' परन्तु बन्द करते भी ६० ००० गायें, ६०,००० बैल और निकल गये। अनुमान कीजिए इनके छोटे गोकुल में कितनी गायें रही होंगी!

इस प्रकरण में हमने बुद्ध महापुरुष का गोमाता से प्रेम दिखाया है और साथ ही उस समय की गोपालन की रुचि प्रकट की है। अब महात्मा बुद्ध के पश्चात् के युग का वर्णन हम करने लगे हैं।

सम्राट अशोक के समय में गाय

चन्द्रगुप्त के पोते महाराजा अशोक का नाम इतिहास का बालक-बालक जानता है। वे कलिङ्ग के घोर युद्ध के पश्चात् पूर्ण अहिंसावादी बन गये और बौद्ध धर्म को धारण किया। वे इतने बड़े बने कि आज स्वतन्त्र भारत सरकार भी उनके आदर्श को शिरोधार्य करके उनके सिक्के की मोहर को ही चला रही है। उन्होंने कई हुक्म जारी करके प्राणी हत्या एकदम बन्द कर दी थी। अनेकों शिलाओं पर इन्होंने अपने शासन (हुक्मनामे) लिखा कर सब स्थानों पर लगाये थे—जो आज भी जूनागढ़ के समीप गिरनार के पर्वत पर देखे जाते हैं—उनका गो-सम्बन्धी भाग नीचे दिया जाता है—

गिरनार का शिलाशासन

इयं धम्मलिपी देवानां प्रियेन प्रियदासिना राजा लेखापिता।
इध न किंचि जीवं आरभिप्ता प्रजूहितव्यम्।

अर्थः—यह धर्म लिपि देवताओं के प्रिय प्रियदर्शी राजा ने लिखाई है। "यहाँ किसी भी जीव का यज्ञ नहीं होना चाहिए।" उस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

समय प्रतिदिन पाकशाला में मोर और मृग मारे जाते थे—उस
लिए भी निषेध कर दिया—

एते पित्री प्राणा पछा न आरभि सरे।

अर्थः—अब आगे ये प्राणी न मारे जायेंगे।

इस प्रकार महाराजा अशोक ने अपने राज्य में प्राणी हिंस
विल्कुल समाप्त करा दी थी।

जिस धर्म चक्र का चिन्ह आज भारत में सिक्के के रूप में च
रहा है वह अशोक का एक स्तम्भ सारनाथ में था। इस धर्म चक्र
के एक ओर गाय को तस्वीर इसलिये रखी गई है कि मेरे राज्य में
गोरक्षा हो। अशोक के शासन काल में भारत में दूध की नदियां
बहती थीं। अशोक के दादा चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में
यूनान के राजा सिल्यूकस का राजदूत मैगास्थनीज भारत में आया
उसे पीने के स्थान में पानी न मिला। सर्वत्र दुग्ध ही मिला। उस
समय के शासन प्रबन्ध के बारे में उसने बहुत लिखा है। चन्द्रगुप्त
के मन्त्री चाणक्य ने अपने कौटिल्य अर्थशास्त्र में गायों के लि
गोचर भूमि छोड़ने का विधान किया है। इन सभी बातों से पत
चलता है कि उस समय गो आदि पशुओं की बहुत वृद्धि थी।

गुप्त वंश और गाय

प्रख्यात चीनी यात्री हुएनसांग ने, ईसा की छठी शताब्दी में
होने वाले सम्राट हर्षवर्द्धन के सम्बन्ध में लिखा है—'उनके राज्य में
प्राणी हिंसा करने वाले के लिये कठोर दण्ड था। उन्होंने अपने
राज्य में मांस-भक्षण सर्वथा बन्द कर दिया था।'

गोमांस भक्षण और गोहत्या की तो बात ही क्या!

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान ४०५ ई० में राजा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में भारत आया। उसने लिखा है—'लोग अहिंसा में पूर्ण विश्वास रखते हैं। शराब-मांस-लहसुन और प्याज का प्रयोग नहीं होता। दूध की नदियाँ बहती हैं।' इस प्रकार के अनेक प्रमाण दिए जा सकते हैं—परन्तु यहाँ तो संकेत ही पर्याप्त है क्योंकि हम केवल गुप्तकाल या मौर्यकाल का ही इतिहास नहीं लिख रहे हैं।

शातवाहनों के गौ सम्बन्धो लेख

अशोक के समान दक्षिण में शातवाहनों का राज्य था। कुछ इतिहासकार इन शातवाहनों को आन्ध्रों के अन्तर्गत हो मानते हैं। उनके कुछ शिलालेखों के भी उदाहरण देखिये।

रायस—(य)...... दखिनायो दिना गावो १७०० हाथी १०। अर्थात् यज्ञ की दक्षिणा में १७०० गायें और १० हाथी दिये गये।

?...वाय...सत्रह के

......गावो २०००० (भग)

ल दसरतो यंणोय (इठो दखिन दि) ना (गावो १०००१)

(गौएं २००००) वाय सत्रह यज्ञ में दी गई। दशरात्र यज्ञ में १०००१ गायें दान दक्षिणा में दी गई।

इस प्रकार से नीचे शिला लेख में अनेकों यज्ञों की दक्षिणा लिखी है यथा—गवामयन यज्ञ में ११०१ गायें, दक्षिणायन यज्ञ में भी ११०१, सत्रातिरात्र यज्ञ में ११००, अंगिर सामयन उत्सव की गौएं २०००, दशरात्रम (ख) में १००१३ गायें दक्षिणा में दी गई हैं।

इन शिलालेखों से पता लगता है कि उस समय बड़े यज्ञ होते थे और गायें दान में दी जाती थीं। उस समय कितनी गायें थी! हमें

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बार बार सोचना पड़ेगा—वह युग कैसा सुन्दर युग था।

जैन धर्म और गौ धर्म

इतिहासकार महावीर स्वामी का जन्म समय ईसा से ६०० वर्ष पूर्व का स्वीकार करते हैं। यह महापुरुष ही जैन धर्म के संस्थापक कहलाते हैं। वैसे २४ तीर्थङ्करों में ऋषभदेव का प्रथम स्थान है और इनका सबसे बाद का। इस प्रकार से जैन धर्म बौद्ध धर्म से केवल कुछ वर्ष पुरातन है। सार यह है कि अहिंसा के प्रबल समर्थक ये दो मत एक ही समय प्रचलित हुए। हमें बौद्ध धर्म से पूर्व जैन धर्म का वर्णन करना चाहिए था—परन्तु इतिहास के विद्यार्थियों से निवेदन है कि केवल महावीर स्वामी या महात्मा बुद्ध की तुलना में यह आक्षेप ठीक था—परन्तु धर्मों का अनुगमन साथ-साथ होने से इसमें कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ेगा।

जैन धर्म अहिंसा धर्म का प्रबल पुजारी है। पहले के जैन लोग अपनी सम्पत्ति की गणना गौओं की संख्या से करते थे। गाय की पूजा करना वे अपना धर्म समझते थे। व्रज और गोकुल उनके धन के मापक थे। एक व्रज या गोकुल दश हजार गायों का होता था। विपुल गोधन के धनी दस बड़े व्यापारियों में राजगृही के महाशतक और काशी के चूलनिपिता गिने जाते थे। इनमें से हर एक के पास आठ-आठ गोकुल अर्थात् ८० हजार गायें थीं। चम्पा के कामदेव, वाराणसी के सूरदेव, काम्पिल्य के कुण्डकोलिक और आलम्भीय के चूलशतक के पास ६०-६० हजार गाएं थीं। वाजिया ग्राम के आनन्द, श्रावस्ती के नन्दिनी पिता और शालिनी पिता के पास चालीस-चालीस हजार गौएं थीं।

महाशतक की पत्नी रेवती के लिए उसके पति को ८० हजार

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
गौएं दहेज में मिली थीं। आनन्द ने जब महावीर स्वामी से श्रावक व्रत लिया तो ८ गोकुल पालने की शपथ ली थी।

ईसा की प्रथम शताब्दी में महाराष्ट्र और गुजरात पर विदेशी राजा नहपान राज्य करता था। उसकी नासिक में गुफायें हैं। बहुत सी गुफाओं के खम्भों पर गायों की प्रतिमायें हैं। (फर्ग्युसन १-१८५)

नहपान के जामाता उषवदात ने ३ लाख गायें दान में दीं। (नासिक लेख अंक १० गुफा) (लूडर्स न० ११३१)

इस दिनीक के बेटे उषवदात के विषय में अनेक शिलाओं पर भारी गोदानों का वर्णन मिलता है—यह बड़ा धार्मिक था।

उस समय के सिक्के भी यह बताते हैं कि उस समय गो पूजा अत्यधिक थी। यथा—

शातवाहनों के पुलुमायी महाराज के सिक्कों पर खड़े बैल की मूर्ति है। महारथी सिक्कों पर बैल के डील के ऊपर अर्धचन्द्र बना होता है। कुशा-वंश के प्रथम वासुदेव के सिक्कों पर शिव नन्दी हैं। गुप्तकाल के योधों के छोटे सिक्कों पर दाहिनी तरफ गतिमान नान्दी है। मौर्यवंश के अशोक सम्राट के धर्मचक्र के दाहिनी ओर गाय है। मालवों के सिक्कों पर बैठा हुआ नान्दी है। गुप्त साम्राज्य को जिन हूणों ने तहस-नहस किया उनके मिहिरकुल राजा के सिक्कों पर गतिमान वृषभ (बैल) है और "जयतु वृषभः" (वृषभ की जय हो) ये अक्षर लिखे हुए हैं।

इन सब सिक्कों पर उपरिलिखित दानदक्षिणाओं से सिद्ध होता है कि आज से डेढ़ या दो हजार वर्ष पहले के समय में देश में गायें बड़ी संख्या में पाली जाती थीं और देश में गौ का बड़ा आदर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
रखा जाता था। सिक्कों पर भी गौ महारानी का विराजित किया जाता था। जैन धर्म का प्रवर्तन ही यज्ञों में गौवध को रोकने के लिये हुआ था। जैन और बौद्धकाल स्वर्णिम काल था।

ईसाई धर्म और गौ रक्षा

ईसाई मत की प्रसिद्ध पुस्तक बाईबिल है। उसमें अनेक स्थानों पर गोवध निषेध की आज्ञा है। यथा—

I will take no bullock out of the house, for every beast of the forest is mine—and the cattle upon a thousand hills. I know all the fowls of the mountains and the wild beasts of the field are mine. If I were hungry I would not tell thee, for the world is mine and the fullness thereof. Will I eat the fiesh of bulls or drink the blood of the goats ? Off unto God thanks-giving, and pay the vows unto the Most High. And call upon me in the day of troubles, I will deliver thee and thou shall glorify me.

(Bible—Book of Psalms 50, 9 to 15)

अनुवाद—मैं न तो तेरे घर से बैल लूंगा न बकरे। क्यों कि अरण्य के सारे जीव जन्तु और हजारों पहाड़ों पर रहने वाले ग्राम पशु भी मेरे ही हैं। पहाड़ों के जितने पंछी हैं उनको मैं जानता हूं और चौगान में जितने चलते फिरते हैं सो मेरे ही हैं। यदि मैं भूखा रहता तो तुझसे न कहता क्योंकि जगत तथा जो कुछ उसमें है वह मेरा ही है। क्या सांड का मांस खाऊं अथवा बकरे का लहू पियूं। मुझ परमेश्वर को धन्यवाद रूपी बलि चढ़ा और मुझ परम प्रधान के लिये अपनी मनौतियाँ पूरी कर। और संकट के दिन मुझे पुकारना मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा…।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

He that killeth an ox is as if slew man, he that sacrificeth a lamb is as if he cut off a dog's neck."

(Isaiah chap. LXVL 3.)

"जो कोई सांड की हत्या करता है मानो उसने एक मनुष्य की हत्या कर दी और जो कोई एक भेड़ का बलिदान करता है मानो उसने एक कुत्ते का गला काट डाला।"

ईसा मसीह ने कहा था कि 'मैं पशुहिंसा दूर करने आया हूं।' एक बार वे यहूदियों के पास-ओवर त्योहार पर जेरूसलम गये। वहाँ उन्होंने मन्दिरों में बलि के हेतु गाय बैल और भेड़ों को बंधे देखा। उन्होंने रस्सी बटकर एक कोड़ा बनाया और सब को भगा दिया।' (योहान—२।२३-१५)

ईसाई धर्म में सर्वत्र मांस खाने का निषेध ही है—

"It is neither good to eat flesh nor to drink wine."

(रोमियो—अध्याय १४-२१)

'अच्छा यह है कि न तो मांस खाया जाय और न मद्य पान किया जाय।'

ईसा के समय इंग्लैंड में मांस का प्रचार न था। अंग्रेजों में मांस का भक्षण कुछ ही समय से प्रारम्भ हुआ है। ईसाई धर्म में गो पूजन का अतीव महत्व है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गाय और इस्लाम

इस्लाम शब्द अरबी के 'सलम' धातु से निकला है जिसका अ है 'किसी को दुःख न देना।' इसीलिए इस्लाम मत के प्रवर्तक हज़ मुहम्मद अत्यन्त दयालु थे। जब एक बार किसी को शाप देने के लि उनसे आग्रह किया गया तो उन्होंने साफ इन्कार कर दिया कि मैं शा देने के लिये नहीं वरन् दया दिखाने के लिये पैदा हुआ हूं।

एक दिन पैगम्बर गाढ़ी नींद में सोये हुए थे। उसी अवस में एक बिल्ली आकर उनके अचकन पर सो गई। नींद टूटने प पैगम्बर ने उसे गाढ़ी नींद में पाया। उनको बड़ी दया आई। उ बेचारी की नींद न टूटे, इसलिये उन्होंने कैंची मंगाकर अपने अचक के उस भाग को कतरवा दिया जिस पर वह सोयी हुई थी।

एक दिन एक आदमी पैगम्बर के पास आया और अपनी दू देने वाली ऊंटनी की कुर्बानी के लिए उनका हुक्म मांगने लगा। हजर ने जवाब दिया कि दाढ़ी और मूंछों को कटवा लो। यही तुम्हा सबसे बड़ी कुर्बानी है। हजरत ने घोषणा की, 'खुदा का हुक्म बहिराह (ऊंट) को मत मारो—जो न मानेंगे वे खुदा के कोप भाज बनेंगे।'

हजरत मुहम्मद के सभी आदर्श वचन अब्दुल रहमान नाम सज्जन ने 'बरकत और हरकत' नामक किताब में संकलित किये हैं उसी पुस्तक में लिखा है-'अच्छी तरह पली हुई ६० गाय से सोलह व में केवल ४५० गायें ही पैदा नहीं होती, बल्कि हजारों रुपये के दू खाद आदि भी मिलते हैं अतः गाय धन की रानी है'।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हजरत ने अपनी प्यारी स्त्री आयशा से कहा था—'गाय का दूध शरीर की शोभा और आरोग्यता बढ़ाने का साधन है।' पैगम्बर मुहम्मद ने कहा है—

'गाय की बुजुर्गी व इहतराम किया करो कि वह तमाम चौपायों की सरदार है'। (तफसीर दर मनसूर)

मुसलमान-धर्म को आरम्भ हुए १३०० वर्ष से ऊपर हुए हैं। इस सम्प्रदाय का सबसे पवित्र एवं प्राचीन ग्रन्थ कुरान है। अधिकतर मुसलमानों की क्या, सर्व साधारण की यही धारणा है कि मुस्लिम धर्म में गाय की कुर्बानी लाजमी है, परन्तु वस्तुतः बात ऐसी नहीं हैं। कुरान और विचारशील विद्वानों ने इस बात का खण्डन किया है।

(१) पामर ने कुरान के अनुवाद भाग ६ पृष्ठ ११२ में लिखा है कि 'इस्लाम ऐसे जानवरों को मारने का हुक्म नहीं देता, जो मानव जाति के रोजमर्रा के काम के लिये लाभप्रद हों।'

(२) 'सुरात ए हज' में लिखा है कि 'खुदा तुम्हारी कुर्बानी में जानवरों का मांस और लहू नहीं चाहता। वह सिर्फ तुम्हारी पवित्रता चाहता है।'

(३) गाय की कुर्बानी करना इस्लाम धर्म का नियम नहीं है।
(फतवा-ए-हुमायूनी भाग १ पृष्ठ ३६०)

(४) न तो कुरान और न अरब की प्रथा ही गौ की कुर्बानी का समर्थन करती है। (हकीम अजमल खां)

(५) गाय की कुर्बानी मुसलमानी धर्म का नियम नहीं।
(मियाँ छोटानी)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(६) मुसलमान गाय न मारें। यह 'हदीस' के खिलाफ है। (मौलाना हयात साहब, खानखाना हाली, समद सा

(७) उल्लामा जलालुद्दीन लिखते हैं 'गाय का गोश्त मर्ज उसका दूध और मक्खन शिफा है।'

(८) हजरत आयशा फरमाती हैं 'गाय का दूध दवा, मक्खन शिफा और गोश्त सरासर मर्ज है।'

(९) इमाम जाफर—'गाय का दूध दवा और मांस बीमारी है

(१०) हजरत उस्मान पहला हदीस साइस्ता में लिखते हैं—

'गोश्त खाने से परहेज करो। इसकी आदत शराब के स हानिकारक है। आदत लग जाने से छुटती नहीं।'

(११) स्वयं पैगम्बर मुहम्मद ने 'नाशियात हादी' नामक कि में कहा है कि 'गाय के दूध और घी तुम्हारी तन्दुरुस्ती के लिए जरूरी हैं। उसका गोश्त नुकसानदेह है। गाय का गोश्त बी दूध दवा और घी रसायन है।'

(१२) हजरत इबने मसऊद सहाबी अपनी किताब 'मस्त में इस सम्बन्ध में पैगम्बर की कही हुई बात को अक्षरशः इस उद्धृत करते हैं—

'अलैकुम् व अल्बानुल् बक़रे व अस्मानिहा व इय्याकुम् व लुहूमुह लवनुहा शिफ़ाउन् व समिनुहा दवाउन् व लहमुहाद आउन

'गाय का गोश्त जुकाम, कोढ़, दिमागी अमराज, सौदा जह गजयलिया वगैरह बीमारियां पैदा करता है। औरतों का हैज अजवक्त बंद कर तौलीद औलाद मुनक़िता कर देता है और हैज ब

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाने पर हजारहा मोहलक बीमारियां मुतालिक हो जाती हैं और ये बीमारियां पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली जाती हैं। इसलिये गो मांस छोड़कर गौ का दूध पीना सर्वोत्तम है।

(इब्राहीम जयपुरी)

बाबर और गाय

सत्रहवीं शताब्दी में भारत आने वाले यात्रियों ने ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया है कि गोवध करने वालों को प्राण-दण्ड दिया जाता था। वास्तव में बाबर से पहले कानूनन गोवध बन्द था। लोदी वंश में कभी गोवध नहीं हुआ। तैमूर वंश का पहला शासक बाबर हुआ। मरने के समय उसने अपने उत्तराधिकारी पुत्र हुमायूं के नाम एक पत्र लिखा था। वह पत्र उसी के हस्ताक्षर में हूबहू लिखा हुआ भोपाल नवाब साहब के पुस्तकालय में है। उसका अनुवाद सैय्यद महमूद (छपरे वाले कांग्रेस नेता) ने किया है—

'ऐ मेरे पुत्र ! भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। परमात्मा को धन्यवाद है कि उसने तुम्हारे हाथों में इस देश का शासन-सूत्र सौंपा है। तुम्हें अपने मन से धार्मिक पक्षपात को अलग कर देना चाहिए। प्रत्येक धर्म के नियम के अनुसार उनके साथ न्याय करना और विशेष कर गोहत्या से परहेज रखना, क्योंकि ऐसा करने से ही तुम भारतवासियों के हृदय पर विजय पा सकोगे और इस देश की प्रजा तुम्हारे कृतज्ञता के पाश में बंधकर तुम्हारी कृपा पात्र बन सकेगी।'—कहना नहीं होगा कि हुमायूं ने अपने पिता के उपदेश का अक्षरशः पालन किया। इससे पता चलता है बाबर कितना धार्मिक और गौ प्रेमी था।

हुमायूं को गो-मांस से घृणा

मुगल बादशाह हुमायूं के खास नौकर 'जौहर' ने हुमायूं की कुछ स्मरणीय बातें फारसी में लिखकर रखी थीं। उनका अंग्रेजी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अनुवाद मेजर चार्ल्स स्टुअर्ट ने सन् १६०४ में करके प्रकाशित कि उसके ११० वें पृष्ठ पर लिखा है—

"एक बार ईरान जाते समय हुमायूं को दिन भर में एक भी खाने का अवसर नहीं मिला। रात के समय पड़ाव पर पहुँचने उन्हें बड़े जोरों की भूख लग रही थी। उन्हें पता चला कि उनके सौतेले भाई कामरान और माँ का पड़ाव भी निकट ही है। यह जा हुमायूं ने अपने नौकरों को भेज कर कामरान के पास से कुछ भोजन मंगवाया। भोजन में कुछ साग-तरकारी और कुछ मांस पदार्थ थे। बादशाह थाल पर बैठ तो गये; किन्तु सहसा उन्हें मांस दिखाई दे गया। इस पर उद्विग्न होकर हुमायूं बोल उठा, 'हाय कामरान! पेट भरने का तेरा यही रास्ता है? अपनी पवित्र माँ को तू यही गोमांस खिलाता है? हमारे पिता की कब्र को झाड़ने बुहारने वालों तक के लिए गोमांस खाना अनुचित है। पिता जी ने जिस तरह अपने कुटुम्ब कबीले वालों का गुजर किया, क्या उसी प्रकार हम चारों पुत्र नहीं कर सकते?' ऐसे खेद पूर्ण उद्गार प्रकट करते हुए बादशाह ने उस भोजन के थाल को बगल में सरका दिया और केवल एक गिलास शरबत पीकर ही रात काटी। दूसरे दिन उन्हें भोजन मिला।"

उपर्युक्त घटना से यह सिद्ध होता है कि भारत सम्राट मुग़ल बादशाह हुमायूं गोमांस-भक्षण के कितने विरोधी थे।

अकबर का गौ प्रेम

हुमायूं के पश्चात् उसका पुत्र अकबर दिल्ली की गद्दी पर बैठा उसके शासन का पूर्ण विवरण 'आईन-ए-अकबरी' नामक बृहद् पुस्तक में है। उसका लेखक अकबर का बड़ा प्रिय पात्र अबुलफजल था

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आईन. २७, पृष्ठ ६३ में लिखा है—'सुन्दर वसुन्धरा भारत में गाय माङ्गलिक समझी जाती थी। उसकी भक्ति भाव से पूजा होती थी। इस उपकारी जीव की बदौलत विस्तृत भारत की खेती होती है और उसके द्वारा उत्पन्न अन्न, दूध, मक्खन आदि से अधिवासियों का गुजर चलता है।' इसके बैल गाड़ी खींचते, बोझा ढोते और पानी निकालते हैं। इस जीव से राज्य का बहुत बड़ा काम चलता है।' आगे चलकर २८३ वें पृष्ठ में लिखा है कि 'गोमांस निषिद्ध और उसे छूना पाप है '

आईन-ए-अकबरी के भाग १ पृष्ठ ११२-११४ में लिखा है कि—उस समय गुजरात में गाय की जोड़ी का मूल्य ६००) रुपये तक था ......गाय बीस सेर तक दूध देती थी। झुन्ड के झुन्ड गाय एकत्र करके गोपालकों को दे दी जाती थीं ताकि उनकी रक्षा हो। इस प्रकार के कारखाने का नाम गौशाला था। उसके संचालन के लिये अलग कानून बना था। अकबर की खास गोशाला थी। उसकी व्यवस्था बहुत अच्छी थी। बादशाह के एक जोड़ी गाय थी जिसका मूल्य पाँच हजार मुहर था।' अबुलफजल कहता है कि "बादशाह वैष्णव थे। भोजन के प्रारम्भ में घी और अन्त में दही लेते थे। भोजन के भी पश्चात् बोल उठते थे 'भगवान् तेरी दया।"

गोस्वामी श्री विट्ठलनाथ जी को बादशाह अकबर ने बहुत से और गाँव दिए थे। उनकी गायों को सब जगह चरने की सुविधा दी थी और उनके स्थानों के आस-पास मोर आदि पक्षियों के शिकार की मनाही कर दी थी।

बादशाह के दरबार में बड़े-बड़े विद्वान रहते थे। उनमें एक नरहरि कवि भी थे। ये विद्वान 'नव रत्न' के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हैं।' नरहरि एक दिन नीचे लिखा छप्पय कागज पर लिखकर गाय के गले बांध कर उसे दरबार में ले गये—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अरिहु दंत तृन धरइ ताहि मारत न सबल कोई।
हम सतंत तृन चरहिं वचन उच्चरहिं दीन होई॥

हिंदुहि मधुर न देहिं कटुक तुरकहिं न पियावहिं।
पय विशुद्ध अति स्रवहि बच्छ महि थंभन जावहिं॥

सुनु शाह अकब्बर! अरज यह करत गऊ जोरे करन्।
सो कौन चूक मोहिं मारियतु मुयेहु चाम सेवत चरन॥

इस कविता के सुनते ही बादशाह ने मुल्लाओं को एकत्रि कर उनका परामर्श लेकर नीचे लिखा फरमान जारी किया। 'सब मालूम रहे कि सब पशु ईश्वर के बनाये हुए हैं और सब से एक एक लाभ तो होता ही है। इन में गाय की जाति, चाहे वह मादा हो नर—अत्यन्त लाभ देनी वाली है। क्योंकि मनुष्य पशु अन्न खा जीते हैं। अन्न खेती के बिना हो नहीं सकता। खेती हल चलाने ही हो सकती है और हलों का चलाना बैलों ही पर निर्भर है। इस स्पष्ट हुआ कि समस्त संसार और पशुओं तथा मनुष्यों के जीवन आधार एक गाय जाति ही है। ऊपर लिखे कारणों से हमारी ऊं हिम्मत और साफ नियत का यह तकाजा है कि हमारे साम्राज्य गोहत्या की रसम बिल्कुल न रहे। इसलिये इस शाही फरमान देखते ही समस्त राजकर्मचारियों को इस विषय में विशेष रूप प्रयत्न करना चाहिए जिससे शाही फरमान के अनुसार कि गांव और शहर में गोहत्या का नाम और निशान तक बाकी रहे। यदि कोई आदमी इस आज्ञा का उल्लघंन करेगा और व काम को नहीं छोड़ेगा तो वह समझ ले कि उसको सुलतानी ग में, जो ईश्वरीय कोप का एक नमूना है, फंसना पड़ेगा और वह दण्ड होगा।' इसके बाद बादशाह ने हुक्म दिया कि 'हमारे ऊपर

Adv: Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

फरमान का जो उल्लंघन करेगा, उसके हाथ और पांव की अंगुलियां कटवा ली जायेंगी।' इस फरमान से तमाम राज्य में गोहत्या बन्द हो गई। फिर अकबर को नरहरि ने पद सुनाया—

नर हरि कवि न गऊ की विनती कौ सुनि,
ह्वै गये अकबर सबीह जैसे नकसी।
दीन्हां है हुक्म करवाय आम खास बीच,
बंद भयो गोवध खबरि फेरि बकसी।

इससे स्पष्ट अकबर का गो प्रेम झलकता है।

जहांगीर और गौ पालन

अकबर के लड़के जहांगीर ने पिता के फ़रमान को सर्वत्र जारी रखा। फ्रेंच यात्री डा० बर्नियर लिखते हैं कि—'अपने विस्तृत राज्य में जहांगीर ने गोवध बन्द कर दिया था। दीवाली के दिन ब्राह्मण शाही बगीचे में गाय लाते थे और इनाम पाते थे।'

'तुज़क-ए-जहाँगीरी' में लिखा है कि जानवरों के लिए उसने खास विभाग खोल रखा था, जिसमें खास-खास जगहों से गाय-बैल मंगवा कर रक्खे गये थे। नस्ल-सुधार के काम के लिए अच्छे-अच्छे जातिवन्त सांड थे। गो प्रदर्शनी होती थी और पुरस्कार दिया जाता था। गोचर भूमि छोड़ने के लिए भी फरमान जारी किया गया था।

जहांगीर के पश्चात् उसके पुत्र शाहजहां के समय भी यह प्रथा जारी रही।

बहादुर शाह और गाय

बहादुरशाह बादशाह के समय महाराजाधिराज माधवराव सिंधिया बहादुर ने बड़ी प्रार्थना की थी। बादशाह भी उनको बहुत

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानते थे। बादशाह ने मुल्लाओं को एकत्र किया और उन लोगों से राय ली कि इस्लाम-धर्म के आचार्य लोग बतावें कि इस्लाम-धर्म में गाय के बारे में हदीस शरीफ में क्या है? उस पर बादशाह के खास पीर मौलवी कुतुबुद्दीन साहब ने बतलाया कि हदीस शरीफ में चार चीजें वर्जित हैं। उनमें एक चीज यह है कि गाय को मारने वाला महापापी है—और वह कभी नहीं बख्शा जायेगा। इससे साबित हुआ कि खुदाताला ने विशेष रूप से गोहत्या वर्जित की है। इस फतवे के नीचे निम्नलिखित दस्तखत हैं।

(१) मुहम्मद शाह गाजी शाह आलम बादशाह (२) सैय्यद अताउल्ला खां फिदवी। और भी अनेक विद्वानों ने दस्तखत किये हैं।

इस फरमान के जारी होने से गोहत्या नितान्त बन्द हो गई।

मौलवी कुतुबुद्दीन पीर बादशाह हैदर अली का गाय प्रेम

हैदर अली को लोग कलियुगी विराट् कहते हैं। उसके पास अमृतमहाल जाति के साठ हजार बलवान बैल थे। उसकी विशाल गोशाला का प्रबन्ध कर्ता स्वयं उसका प्यारा पुत्र टीपू सुलतान था। टीपू सुलतान ने गौजाति की नसल-सुधार में काफी काम किया।

कबीर और गाय

इस प्रकार से कबीर सन्त ने लिख दिया है—

दिन भर रोजा राखते, रात काटते गाय।
एक खून एक बन्दगी, कैसे खुशी खुदाय॥

इस प्रकरण से हमें "इस्लाम और गाय" का पूर्ण परिचय मिल गया है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शिवाजी की गोभक्ति

एक समय शिवाजी, जब बालक थे, अपने पिता राजा शाह जी के दर्शन के लिए पूना से बीजापुर गये थे। पिताजी ने शिवाजी से एक दिन शाही दरबार चलने को कहा। परन्तु शिवाजी कहने लगे कि बाजार में जब तक कसाई गो मांस बनाना और विक्रय करना नहीं छोड़ेंगे तब तक मैं इधर उधर कहीं न जाऊंगा। इस पर शाही फ़रमान जारी हुआ था कि कोई कसाई बाजार में मांस न बेचे। परन्तु एक दिन जब शिवाजी अपने पिताजी के साथ शाही दरबार जा रहे थे तो एक कसाई अभिमान और हठवश गोमांस बेचने के लिये बाजार में आया। कहीं शिवाजी की दृष्टि उस पर पड़ गई। देखते ही उन्होंने कसाई का सर तलवार से उड़ा दिया। जब मृत कसाई के रिश्तेदार बादशाह के सामने इस मामले को लाये तो बादशाह ने उसी का अपराध घोषित करके फरियाद खारिज कर दी और एक बार फिर कसाईयों को शहर में मांस बेचने से मना कर दिया। (शिवप्रताप कृत शिवचरित्र से)

शिवाजी ने तो गो और ब्राह्मण की रक्षा हेतु ही अपनी तलवार उठाई थी। बाल्यकाल से ही उनकी गौमाता में अपार भक्ति थी।

सिक्ख सम्प्रदाय में गो-रक्षा

सिक्ख मत के अन्दर गाय की अतीव महिमा वर्णित की गई है। गुरु लोग सच्चे मातृ भक्त थे। उनका प्रधान लक्ष्य गौ और गरीब की रक्षा करना था। श्री १०८ गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने गो-रक्षार्थ श्रीमुख से प्रभुप्रार्थना में कहा था—

यदि देह आज्ञा तुर्क को खपाऊं,
गौ घात का दुःख जगत से हटाऊं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आस पूर्ण करो तुम हमारी,

मिटे कष्ट गौअन छुटे खेद भारी ॥ दशमग्रन्थी ॥

गौ का दूध ही परम पवित्र है, ऐसा श्री गुरु आद ग्रन्थ साहि की निम्नलिखित वाणी से झलकता है—

दूध कटोरे गड़वे पानी, कपला गाइ नामै दुह आनि।

आर्यशास्त्रों की तरह सिक्खों के पूज्य धर्मशास्त्री भाई गुरुदा जी ने पंचगव्य को परम पवित्र और गोहत्या को महापातक माना है तद्यथा—

गोवर गोमूत्र परम पवित्र भये। (कवित्त २०१)
बामण गाई बंस घात करारे। (वार २४ पौड़ी १६)

इन उल्लेखों से स्पष्ट भासित हो रहा है कि सिक्ख मत में का क्या स्थान है। गुरु लोग तो हाथ में तेग लेकर आजीवन रक्षा में डटे रहे।

विदेशियों की दृष्टि में गाय

अमेरिका देशवासी टेनेसी प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर मालकम आर. पेटर्सन लिखते हैं—

"महाकवि होमर ने युद्ध, वरजिल ने आयुध, होरेस ने प्रे दान्ते ने नरक और मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया। परन्तु मुझ यदि इन सब सिद्ध कवियों की सम्मिलित प्रतिभा होती और मेरे हा में हजार तारों का तानपूरा होता तथा सारा संसार श्रोता बन सुनता तो मैं अपना हृदय खोल कर गौ का गीत गाता, उसके गु

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रधानता और उसकी महिमा का गान यावच्चन्द्र दिवाकर अमर कर देता।

यदि मैं मूर्तिकार होता और संगमरमर नामक पत्थर में टांकी से अपने विचार मूर्तिमान कर सकता तो संसार की सब पत्थर की खानें छान कर विमलतम शुभ्रतम संगमरमर की पटियां ढूंढ लाता और चन्द्र ज्योत्स्ना से पुलकित, निरभ्र नील आकाश से मण्डित, किसी मनोहर वन में निर्मल जल के समीप, पक्षियों के मधुर गुञ्जारव के बीच बैठकर अपने प्रेम-धर्म के पवित्र कर्म में लग जाता। उस शीतल संगमरमर का सारा खुरदरापन अपनी छीनी से छीलकर उसे इतना कोमल बना लेता कि उसमें से मेरे मन की गौ की मूरत निकल आती। उसके विशाल करुणामय नेत्र होते, वह अपने उभरे स्तनों में भरा हुआ पुष्टिकर पेय पान कराने की प्रतीक्षा में खड़ी और प्रेम से अमृत के नेत्र वालों को सुख, आरोग्य एवं बल का आशीर्वाद देती दीख पड़ती। गौ बिना-ताज की महारानी है। उसका राज्य सारी पृथ्वी पर है। सेवा उसका विरद है और जो कुछ लेती है, उसे सौ गुना करके देती है।

यदि आज संसार की गौएं मर जायें तो कल ही मानव जाति पर भयानक सङ्कट आ पड़े। रेल की सड़कें, बैंक, कपास की फसल, इन सबके बिना हम लोग मजे में अपना काम चला सकते हैं, परन्तु गौ के बिना मानव जाति रोग, क्षय और अन्त में विनाश को प्राप्त होगी। गौ का हम वह सम्मान और स्तवन करें जिनके वह योग्य है। मुझे आशा है कि ज्यों-ज्यों हम लोग ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे, क्रूरता और स्वार्थपरता छोड़ेंगे, त्यों-त्यों उन गौओं की हत्या करना और उनका मांस खाना भी छोड़ देंगे, जो हमें बल देती, सुख पहुंचाती और हमारे बच्चों के प्राण बचाती हैं।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मि० राल्फ० ए० हेने का कथन है—

"जो व्यक्ति अपने बाल-बच्चों को दूध-मलाई और मक्ख जैसे आरोग्यवर्धक पदार्थ खाने को नहीं देता, उसे जेल में बन्द रख की जरूरत है।"

आगे वे फिर कहते हैं—

"If you want your children to grow into big stro men, give them milk and butter three times a day.'

'यदि आप अपनी सन्तानों को शक्तिशाली बनाना चाह हैं तो उन्हें गाय का दूध और मक्खन रोज तीन बार खाने को दीजि

दक्षिण भारत तथा गुजरात में आजकल दिन में कम से २५ बार चाय पिलाई जाती है—दूध तो एक बार भी नहीं मिल ६०–६५ फी सदी बच्चे तो गर्भावस्था से ही चाय के आदी हो आते हैं। सत्कार के लिए भी आज चाय पेश की जाती है। रूपी भयंकर विष से आज देश विनष्ट हो रहा है।

फ्रेंक० ओ० लोडेन लिखता है—

शताब्दियों से कथाओं और उपन्यासों में वर्णित 'यौवन उद्गम की खोज मनुष्य कर रहा है, पर उस आदर्श यौवन का नि तम सान्निध्य रखने वाला जो पदार्थ अब तक मिल सका है, वह का दुग्ध-स्तन है।'

डा० एच०डी०के० डाइरेक्टर आफ 'नेशनल इन्स्टीट्यूट रिसर्च इन डेयरिंग' (इंग्लैंड) लिखते हैं—

"राष्ट्र के स्वास्थ्य में यदि सुधार करना है तो दुग्धपान का

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दूध से बनी चीज़ों के अधिक से अधिक व्यवहार का पर्याप्त प्रचार करना चाहिए।'

प्रो० एम० जे० ऐसेनो (हारवर्ड मेडिकल स्कूल) कहते हैं—

'Milk is rich in all the known vitamins. Milk in fact is the only single article of food, that fairly represents a complete diet. Milk is unexcelled for growing children. It has no equal for the promotion of growth as nutrition.'

'दूध ही एकमात्र पदार्थ है, जो सब पौष्टिक द्रव्यों से परिपूर्ण है और जिसे हम पूर्ण भोजन कह सकते हैं। बढ़ते हुए बच्चों के लिए उत्तमता में इससे बढ़कर और कोई चीज नहीं। शरीर को ठीक तरह से बढ़ाने और पुष्ट करने में दूध की बराबरी करने वाला कोई दूसरा पदार्थ नहीं है।'

अमेरिका के प्रेसीडेंट हर्बर्ट हूवर लिखते हैं—

'श्वेत जाति के लोगों का भाग्य उनकी गायों के साथ दृढ़ रूप से संकलित है। दुग्धान्नों के बिना वे कभी भी जीवित नहीं रह सकेंगे।'

डा० ई० वी० मैक्कालम (अमेरिका) लिखते हैं:—

जिन लोगों ने कुछ नाम कमाया है, जो अत्यन्त बली और वीर हुए हैं, जिनके समाज में बालमृत्यु की संख्या बहुत घट गई है, जिन्होंने संसार में व्यापार-धन्धे पर अधिकार किया है, जो साहित्य संगीत कला का आदर करते हैं तथा जो विज्ञान और मानव बुद्धि की प्रत्येक दिशा में प्रगतिमान हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने गाय के दूध और दूध से बने पदार्थों का स्वच्छन्दता से उपयोग किया है—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री मिलो हेस्टिंग्स (रूस) लिखते हैं:—

'गाय ही सभ्य मानव समाज की धाय है। किसी भी देश सभ्यता की उन्नति का अनुमान करने के कई साधन बताये जाते हैं कहीं लोग पुस्तकों पर से ही मानव सभ्यता की कल्पना करते कहीं धर्म-मन्दिरों को ही प्रधानता दी जाती है, तो कहीं बैलों की वृ ही इसका मूल आधार बताया जाता है। किन्तु गाय द्वारा ही संस्कृ का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारी सभ्यता तो गो-प्रध सभ्यता ही है। (Ours is the cow-milking civilization)। ज गोवंश उन्नत न हो वहाँ श्वेत जाति की गुजर नहीं हो सकती।

हम चाहते हैं कि रूस में यान्त्रिक हल और गाय का विशे रूप से प्रचार हो। यदि इन दो विषयों की उन्नति करने में रूस लाभ करे तो रूस को एक स्थायी संस्कृति के प्रवर्तक का पद-गौर प्राप्त हुए बिना नहीं रह सकता। दुग्ध व्यवसाय (Dairy Industry की उन्नति के द्वारा हम आनन्द, मेधा-शक्ति और समृद्धि प्राप्त सकते हैं। मानव जीवन और सभ्यता का दूध के साथ एक विशे प्रकार का सम्बन्ध है।

यूरोप में दुग्ध व्यवसाय में अग्रणी देश डेन्मार्क, हालैंड स्विट्जरलैंड हैं। इनमें से एक देश राष्ट्र संघ का केन्द्र बना है औ दूसरा सब राष्ट्रों के न्यायालय का मुख्य स्थान है। गोवंश संस्कृ का निर्माता है या संस्कृति ही गो-वंश निर्माण करती है, यह विच का एक विषय हो सकता है, पर मेरे विचार में दोनों एक साथ रहेंगे।

ई०जी० बेनेट, स्टेट डेयरी कमिश्नर, मिसूरी (अमेरिका)—

'गाय मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ हितैषी है। तूफान, ओला, अनावृ या बाढ़ आवे और हमारी फसलों को नष्ट करके हमारी आशाओं पानी फेर दे, किन्तु फिर भी जो बचेगा, उसी से गाय हमारे लि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पौष्टिक और जीवन धारण करने वाले आहार तैयार करेगी। उन हजारों बच्चों के लिये तो गाय जीवन ही है, जो दूधरहित वर्तमान नारीत्व की रेती पर पड़े हुए हैं।

हम उसकी सिधाई, उसके सौन्दर्य तथा उसकी उपयोगिता के लिए उसे प्यार करते हैं। उसकी कृतज्ञता में कमी कभी नहीं आई। हमारे ऊपर दुर्भाग्य का हाथ तो होना ही चाहिए, क्योंकि हम लोग सालों से अपने कर्तव्य से गिर गये हैं। हम जानते हैं कि गाय हमारे एक मित्र के रूप में है. जिससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ, जो हमारी पाई-पाई चुका देती है और घर की और देश की रक्षा करती है।'

रोमांस आँफ दी काऊ

गाय मरी तो बचता कौन।
गाय बची तो मरता कौन॥

श्री वाल्टर ए० डामर ('अवर डम्ब एनीमल्स' अमेरिका)

गौ माता

'मैं गौ की प्रशंसा करूंगा, किन्तु यों ही साधारण दृष्टि से नहीं, वरन् इसलिये कि वह इसकी अधिकारिणी है और ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। मैं गाय को भगवत-सृष्टि के चर-प्राणियों में एक ऊंचे आदरणीय स्थान पर खड़ी देखना चाहूंगा। गाय से बढ़कर अन्य कोई भी मनुष्य का मित्र नहीं है और न गाय ऐसा कोई मधुर स्वभाव वाला है। अपने दीप्त, शान्त और ध्यान निमग्न नेत्रों से संसार को देखने वाली गाय के सौम्य रूप में सचमुच देवत्व भरा है। उसमें एक महानता और भव्यता है, जो ग्राम देवता के उपयुक्त है। उसमें शत प्रतिशत मातृत्व है और उसका मनुष्य-जाति से यही माता का सम्बन्ध है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मैं यह नहीं मानता कि गाय एक उदास, अबोध और व्यक्तित्व शून्य प्राणी है, किन्तु ऐसा न मानने वाले किसी संशययुक्त मनुष्य को यह मनाना भी मेरे लिए कठिन है। जब तक मनुष्य अपने पशु मित्रों के प्रति सहानुभूति पूर्ण व्यवहार न करेगा, तब तक वह उनकी अत्यन्त प्रिय मनोरम विशेषताओं के विषय में सदा अन्धेरे में ही रहेगा।'

संक्षेप से ये कुछ विदेशी विद्वानों के प्रमाण लिख गये हैं।

"इति विस्तारभयेन"

अंग्रेजों का गौ संहार और महर्षि दयानन्द का शुभ आगमन

मुसलमानी शासन काल में तो समय-समय पर गो-हत्या कानूनन बन्द होती रही, परन्तु ब्रिटिश सत्ता में गोवध भारी संख्या में प्रारम्भ हो गया। उसमें कई कारण थे। पहला कारण तो यह था कि अंग्रेज शीत देश का वासी था और पहले से ही मांस आदि का अभ्यासी था। इसकी नकल फिर देशवासियों ने भी की। अंग्रेजी सेनाओं के लिये पर्याप्त मांस प्राप्त करने के लिए गौवों का वध जोरों से प्रारम्भ हो गया।

गोहत्या का दूसरा कारण था— विदेशों से भारी मात्रा में चमड़े का व्यापार करना तथा इस देश में भी जूता आदि बनाने के लिए चमड़े की खपत।

गौ हत्या का तीसरा कारण बनावटी पाउडर तथा बनस्पति घी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

था। और चौथा कारण ट्रैक्टर तथा रसायनिक खाद था।

जिस समय ऋषिवर दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, उस समय समूचा देश अंग्रेजों के चंगुल में खूब अच्छी प्रकार से आ चुका था। यहां गो वध भारी संख्या में हो रहा था। उसको रोकने के लिये सब उपाय असमर्थ हो रहे थे। सन् १८५७ की क्रान्ति किस कारण से हुई थी ? उसे देश देख चुका था। भारतीय सैनिकों को गौ की चर्बी से लिप्त कारतूस मुख से खोलने के लिए बाधित किया जाता था। इसी पर भारतीय वीर बिगड़े और सर्वप्रथम मंगल पांडे ने इस धर्म-विरुद्ध कार्य को करने से इन्कार कर दिया। उस वीर सेनानी का बलिदान हुआ और इसी पर देश में एक भारी क्रान्ति फैल गई।

इस बात के लिखने का भाव यह है कि उस समय अंग्रेजी सरकार गोरक्षा पर तनिक भी ध्यान नहीं देती थी। ध्यान तो अलग वह तो गोवध के लिये उतारू रहती थी। मथुरा और काशी जैसे तीर्थ स्थानों पर बड़ी संख्या में गोवध होता था और वधशालाओं (बूचड़-खानों) का निर्माण हो गया था। अकेली काशी में ४ बूचड़खाने चल रहे हैं। इस देश दुर्दशा को देखकर ऋषिवर दयानन्द ने कहा कि गोवध से देश की भारी हानि हो रही है। इस बात का विचार करके वे गौरक्षा के लिए पूरे प्रयत्नशील हो गये। उन्होंने गौ के प्रति क्या किया—वह आगे लिखा जायेगा। वे गोवध को महापाप समझते थे—

महर्षि का गोवध रुकवाने का प्रयत्न

स्वामी जी ने अजमेर में अंग्रेज अधिकारी डिप्टी कमिश्नर मेजर ए० जी० डेविडसन से बातचीत करते हुए कहा—

'आप राजा हैं और प्रजा राजा के पुत्रवत् होती है। आपके शासन में मत मतान्तरों के लोग भोली प्रजा को ठग रहे हैं। आपका

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

धर्म है कि आप प्रजा की रक्षा करें।' उस अंग्रेज बहादुर का उत्तर था, 'धर्म में शासक हस्तक्षेप नहीं कर सकते।'

असिस्टेंट कमिश्नर अपटन साहब से भी स्वामी जी ने इस विषय में बातचीत की थी।

कर्नल ब्रुक गवर्नर जनरल का एजेन्ट था। यह गेरुए वस्त्र वालों से बहुत चिढ़ता था। स्वामी जी एक दिन अजमेर में वंशीलाल के उद्यान में बैठे थे कि कर्नल ब्रुक वहाँ आ निकला। दोनों आपस में मिले और वार्तालाप होने लगा। स्वामी जी ने कर्नल को अपनी दलीलों से यह मानने को बाध्य कर दिया कि गौ से अनेक जीवन-जन्तु और मनुष्य पलते हैं और गो-वध से हानि होती है। गो-वध की हानि स्वीकार करके ब्रुक कहने लगा कि गोवध रोकना मेरे वश से बाहर है, परन्तु मैं गवर्नर जनरल के नाम आपको चिट्ठी लिख कर देता हूं।

कहा जाता है महर्षि ने लाट साहब से भी कहा था कि भारतवर्ष से जाकर आप इन्डिया कौंसिल के सदस्य बनेंगे। वहाँ आप गौवध बन्द कराने का यत्न करें। कहते हैं कि लाट साहब ने यत्न करने का वचन भी दिया था।

इसी प्रकार जोन्स साहब ने महर्षि से बातचीत कर गोमांस न खाने की प्रतिज्ञा की थी।

महर्षि को विश्वास था कि अंग्रेज सरकार लोक मत का आदर करेगी और तत्काल गौवध को बंद कर देगी। महर्षि २ करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर कराकर एक निवेदन पत्र तत्कालीन महारानी विक्टोरिया के पास भेजना चाहते थे। भारत के सब प्रान्तों में जनता के हस्ताक्षरों के लिये निवेदन पत्र भेजे जा चुके थे। लाखों व्यक्तियों के

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्ताक्षर हो चुके थे। महर्षि का विचार था कि वे स्वयं इंगलैंड जाकर निवेदन पत्र पेश करेंगे। परन्तु दैव ने साथ न दिया।

देश तथा अवाक् दयनीय गायों का दौर्भाग्य था कि महर्षि का बीच में ही देहावसान हो गया और सारा काम अधूरा ही रह गया। जो निवेदनपत्र उन्होंने आर्यसमाजों, राजा-महाराजाओं तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के पास भेजा था, उसकी प्रतिलिपि इस प्रकार है:—

...... विश्व में दो ही जीवन के मूल हैं। एक अन्न और दूसरा पान। इसी अभिप्राय से आर्यवर, शिरोमणि राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओं को न आप मारते और न किसी को मारने देते थे। अब भी इन गाय, बैल, भैंस आदि को मारने और मरवाने देना नहीं चाहते। जितना राजा और प्रजा का नुकसान इनको मारने और मरवाने से होता है उतना और किसी कर्म से नहीं। इसका निर्णय गोकरुणानिधि पुस्तक में अच्छे प्रकार प्रकट कर दिया है, अर्थात् एक गाय को मारने और मरवाने से ४२०००० मनुष्यों के सुख की हानि होती है। इसलिए हम सब लोग प्रजा की हितैषिणी श्रीमती राजराजेश्वरी क्वीन विक्टोरिया की न्याय प्रणाली में जो अन्याय रूप बड़े-बड़े उपकारी गाय आदि पशुओं की हत्या होती है, इसको इनके राज्य में से प्रार्थना से छुड़वा कर अति प्रसन्न होना चाहते हैं। यह हमको पूरा निश्चय है कि विद्या, धर्म प्रजाहित प्रिय श्रीमती विक्टोरिया पार्लियामेंट सभा और सर्वोपरि प्रधान आर्यावर्तस्थ श्रीमान् गवर्नर जनरल (लाट साहब) सम्प्रति इस बड़ी हानिकारक गाय, बैलादि तथा भैंस की हत्या को उत्साह और प्रसन्नतापूर्वक बन्द करके हम सबको परम आनन्दित करें। देखिए कि उक्त गाय आदि पशुओं के मारने और मरवाने से दूध, घी और किसानों की कितनी हानि होकर प्रजा और राजा की

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation Chandigarh

हानि हो गई और नित्य प्रति अधिक होती जाती है। क्या
का यह फल और सिद्धान्त नहीं है कि जिस-जिस से अधिक उप
हो उस उसका पालन, वर्धन करना और नाश कभी न करना।

परम दयालु न्यायकारी सर्वशक्तिमान परमात्मा इस सब
जगदुपकार के काम को करने में एक-मत्य करें।"

यह पत्र उन्होंने देश के करोड़ों निवासियों से हस्ताक्षर करा
कर गो-वध बन्द करवाने के लिए गवर्नर जनरल तथा महासाम्रा
विक्टोरिया के पास भेज दिया था परन्तु । वे इंग्लैंड न जा सके
देहावसान होने के कारण यह कार्य पूरा न हो सका।

इस कार्य के लिए उन्होंने विशेष रूप से महा० रूपसिं
और ठा० नन्दकिशोरसिंह जी (जयपुर कौंसिल के मन्त्री)
व्याख्यानों द्वारा गोवध के नुकसान को विदित कराने के लिये प्रे
किया था।

गो करुणानिधि का निर्माण

गो रक्षा के हेतु स्वामी जी महाराज ने एक स्वतन्त्र पुस्तक
निर्माण किया। यह वही ग्रन्थ है जिसमें कभी ब्रिटिश सरकार
राजद्रोह की गन्ध आने लगी थी। इसमें स्वामी जी ने गोवध
महापाप एवं अतीव हानिकर सिद्ध किया है। गोमहिमा को
युक्तियों से दर्शाया है—वे ३, ४ पृष्ठ पर लिखते हैं—

'जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती
और दूसरी बीस सेर, तो प्रत्येक गाय के ग्यारह
दूध होने में कुछ भी शंका नहीं। एक गाय कम से कम

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मास और दूसरी अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती है, तो दोनों का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में १२ महीने होते हैं। इस हिसाब से बारह महीने का दूध ६६ मन हुआ। इतने दूध को औटाकर प्रति सेर में छटांक चावल और डेढ़ छटांक चीनी डालकर खीर बना खावें तो प्रत्येक पुरुष के लिये दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है। इस हिसाब से एक गाय के दूध से १६८० मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय न्यून से न्यून १० और अधिक से अधिक १८ बार ब्याती है, माध्यम १३ बार हुआ तो २५७४० मनुष्य एक गाय के जन्म भर के दूध मात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं।

इस गाय की एक पीढ़ी में छः बछिया और सात बछड़े हुए। इनमें से एक की मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है, तो भी बारह रहे। उन छः बछियों के दूध मात्र से उक्त प्रकार १५४४४० मनुष्यों का पालन हो सकता है। अब रहे ६ बैल। उनमें एक जोड़ी से दो साल में दो सौ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी ६०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती है। और उनके कार्य का मध्यमान ८ वर्ष है। इस हिसाब से ४८०० मन अन्न उत्पन्न हुआ। इतने अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन में गिने तो २५६०००, (दो लाख छप्पन हजार) मनुष्यों का एक बार भोजन होता है। दूध और अन्न को मिलाकर देखने से निश्चय है कि ४१०४४० मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब छः गायों की पीढ़ी दर पीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जाये तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और इसके मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी (८०) मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं।

देखो, तुच्छ लाभ के लिये लाखों प्राणियों को मार असंख्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं ?

ऋषि का ईश्वर को उपालम्भ

हे मांसाहारियो ! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं ? हे परमेश्वर क्यों इन पशुओं पर (जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं) दया न करता ? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है ? क्या इनके लिए तेरी न सभा बन्द हो गई है ? क्यों इनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं और उनकी पुकार नहीं सुनता ? क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं दयाप्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दो को दूर नहीं करता ? जिससे ये इन बुरे कर्मों से बचें।

(ऋषि दयान

(गो क० निधि पृष्ठ ८

ऋषि-वचनामृत

(१) जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आ पशु नहीं मारे जाते थे।

(२) जब से गौ आदि पशुओं को मारने वाले विदेशी इस में आ कर राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः दुखों की बढ़ती हो जाती है।

(३) गो आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का नाश जाता है।

(४) न्याय पुस्तक में गोवध निषेध की व्यवस्था होनी चाहि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(५) इन पशुओं की हत्या करने वाले को सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानियेगा।

(६) तुम्हारा तन मन धन गाय आदि की रक्षा रूप परोपकार में न लगे तो किस काम का ?

ऋषि दयानन्द जी ने गो कृष्यादि रक्षिणी सभा और गोशालाओं का निर्माण करके गोरक्षा का एक वास्तविक पग बढ़ाया। उनके कर-कमलों द्वारा खोली गई रेवाड़ी की गोशाला सब से पुरातन है और सदैव जनता को गोरक्षा के लिए अपना अमर सन्देश सुनाती रहेगी। ऋषि ने गो रक्षा के लिए एक क्रान्ति को जन्म दिया है और उसी हलचल से लोगों को एक खुला एवं निर्भीकता का सन्देश प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् 'गोरक्षा' स्वतन्त्रता आन्दोलन का एक अंग बन गया। समय-समय पर आन्दोलन भी चले। आज कई स्थानों में गोवध समाप्त हो गया है। यह सब श्रेय ऋषि दयानन्द को है। इस ऋषि ने ऐसे भंयकर समय में गौ की पुकार सुनी थी, जबकि उसका कोई रखवाला नहीं था। भगवान् ने उन मौन पशुओं के लिए सच्चे गोपाल दयानन्द को भेजा और उस भारत माता के सुपूत ने अंग्रेजी सरकार का तख्ता उलट दिया। देश रक्षा, वेद रक्षा, चरित्र रक्षा एवं गोरक्षा की अनेक भीषण धर्म क्रान्तियां मचा कर अपने को भारत माता के चरणों में भेंट कर दिया। राष्ट्र यज्ञ में उस युग प्रवर्तक की आहुति पड़ने से राष्ट्र अग्नि उद्दीप्त हो उठी, जागृत हो उठी। ऋषि का बलिदान खाली न गया—उसके पश्चात् उनके सन्देश वाहकों ने आकर इस राष्ट्र देव को अपनी भेंट चढ़ायीं और देश को स्वतन्त्र कराया।

महात्मा गांधी और गौरक्षा

(१) गो वध और मनुष्य वध एक समान हैं।
मैं इसे स्वराज्य से भी बड़ा मानता हूं ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(२) जब तक हम गाय को बचाने का उपाय ढूंढ नहीं निकालते तब तक स्वराज्य को अर्थ हीन कहा जावेगा।

(३) देश की सुख समृद्धि गौ और उसकी सन्तान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है। गो रक्षा मुझे बहुत प्रिय है। क्योंकि गाय का धर्म मूर्तिमान कविता है। गाय की रक्षा करना ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है। मुझ से कोई पूछे कि हिन्दू धर्म का सबसे बड़ा बाह्य रूप क्या है तो मैं गो रक्षा बताऊंगा। मुझे वर्षों से दीख रहा है कि हम हिन्दू धर्म को भूल गये हैं। हिन्दू धर्म भी तब तक ही रहेगा जब तक गाय की रक्षा करने वाले हिन्दू हैं।

(४) "मेरे आंसू"—गो रक्षा आज जिस ढंग से हो रही है, उसे देख कर मेरा हृदय एकान्त में रोता है। रोना मुझे पसन्द नहीं। कोई रुदन करता है तो मुझे दुःख होता है। क्योंकि हमें भारी बलिदान करना है और भारी बलिदान करने वाले रोयें क्यों ? तो भी मेरा हृदय आजकल के गोवध के अनर्थ से रोता है।

सन १९२४–२५ में महात्मा जी ने बेलगांव कांग्रेस अधिवेशन के साथ साथ 'गो-रक्षा मंडल' का भी अधिवेशन किया। महात्मा जी दोनों अधिवेशनों के प्रधान बनाये गये। उसी समय गो-रक्षा मंडल का विधान बना कर कार्य आरम्भ कराया।

सन १९४१ में महात्मा गांधी जी ने जब गायों की बुरी हालत देखी तो रचनात्मक कार्य के लिये गो-सेवा स्थापित करके उसका भार अपने प्रिय साथी श्री जमना लाल बजाज को दिया था। इस प्रकार महात्मा गांधी जी बहुत बड़े गो-सेवक थे और उन्होंने गोरक्षा के लिये आजीवन संघर्ष किया।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

महात्मा मदनमोहन जी मालवीय का गो प्रेम

यदि हम गौओं की रक्षा करेंगे तो गौएं भी हमारी रक्षा करेंगी। गांव की आवश्यक्ता के अनुसार प्रत्येक घर में तथा प्रत्येक घरों के समूह में एक गोशाला होनी चाहिये।

'अधिक दूध उत्पन्न करो और खूब दूध पियो' आन्दोलन सारे देश में छिड़ जाना चाहिये।

पंडित मदन मोहन जी मालवीय ने अखिल भारतीय गो-रक्षा प्रचार कार्यालय की स्थापना की। मालवीय जी की अन्तिम इच्छा थी कि स्वराज्य की घोषणा में गोवध निषेध का जिक्र किया जाय।

श्री विनोबा भावे के विचार

हिन्दुस्तान किसानों का मुल्क है। खेती का शोध भी हिन्दुस्तान में ही हुआ। गाय बैलों की अच्छी हिफाजत पर हिन्दुस्तान की खेती निर्भर है। हिन्दुस्तानी सभ्यता का नाम ही गो सेवा है। लेकिन आज गाय की हालत हिन्दुस्तान में उन देशों से कहीं अधिक खराब है जिन्होंने गो सेवा का नाम नहीं लिया था। हमने नाम तो लिया पर कार्य नहीं किया। जो हुआ सो हुआ। लेकिन अब तो चेतें!

गोविन्दबल्लभ जी पंत का सन्देश

गो सेवा और गो वंश की उन्नति भारतीय संस्कृति के अभिन्न अङ्ग हैं। वेद पुराण, धर्मशास्त्र, इतिहास आदि सभी ग्रंथों में गोमाता की महिमा गाई गई है। हिन्दू समाज में हजारों वर्षों से गो का स्थान जननी—माता के तुल्य माना गया है। गाय को कामधेनु और सुरभि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

की पदवी प्राप्त है। गाय के दूध के बराबर बलदायी और हितकारी कोई अन्य खाद्य पदार्थ संसार में नहीं है। पाश्चात्य सभी वैज्ञानिकों का भी अब यह निश्चित मत है कि गाय के दूध के प्रयोग से मनुष्य जितना हृष्ट-पुष्ट और दीर्घजीवी हो सकता है, उतना और किसी प्रकार के भोजन से नहीं हो सकता।

इस युग में भी सब तरह के वैज्ञानिक आविष्कारों के होने पर भी हमारे देश में सभी धर्मावलम्बियों के सामाजिक और आर्थिक जीवन का प्रधान आधार गोवंश ही है। ऐसी अवस्था में सभी भारत-वासियों को गोवंश के ह्रास और अवनति को रोकने और उसकी वृद्धि और उन्नति के उपायों को कार्यान्वित करने में सहयोग देना चाहिए। हमारी तो प्रत्येक धार्मिक और आर्थिक, इहलौकिक और पारलौकिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए यह नितान्त परमावश्यक है।

डा० राजेन्द्रप्रसाद की गौ के प्रति श्रद्धा

भारतवर्ष में गोपालन सनातन धर्म है। आज भी हिन्दू, सिक्ख, जैन इत्यादि सभी गोपालन को अपना धर्म समझते हैं।

कोई ऐसा उपाय सोच निकाला जावे, जिससे सच्ची गो-रक्षा हो सके और अपंग तथा बेकार हुए जानवरों की हत्या भी न हो सके।

गोवंश की नस्ल सुधारी जाय। गोचरभूमि का प्रबन्ध किया जावे।

कांग्रेस और गो रक्षा

सन् १९२१ की गोपाष्टमी को दिल्ली के पाटौदी हाउस दरियागंज में प्रसिद्ध नेता लाला लाजपतराय की प्रधानता में सम्मेलन हुआ। हकीम अजमलखां साहब स्वागताध्यक्ष थे। महात्मा गांधी जी, पण्डित

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
मोतीलाल नेहरू तथा देश के प्राय: सभी मान्य नेता इस सम्मेलन में शामिल हुए। सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ कि जब तक अंग्रेजी सरकार गोवध बन्द न करे उससे सहयोग न किया जाय। वृन्दावन में भी गो सम्मेलन करके कांग्रेस के गण्यमान्य नेताओं ने ऐसा ही प्रस्ताव पास किया था। गोवध के हेतु को ही पकड़कर कांग्रेस ने अंग्रेजों का अधिक विरोध किया। ये सब कांग्रेसी जनता को यह विश्वास दिलाया करते थे कि हमारे हाथ में राज्य आते ही गोवध बन्द हो जावेगा। जैसे बाल गंगाधर तिलक ने कहा था कि "जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तो ५ मिनट में एक कलम से गोवध निषेध कानून पास कर देंगे।"

परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्त होने के पश्चात् भी गोवध बड़े जोरों से जारी है। इस स्वतन्त्र देश के भाल पर गोवध जैसा बड़ा कलङ्क क्यों ?

कांग्रेस और गो वध

इस समय देश में गोवध दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सन् १९४९ से ५० तक १४४ लाख रुपये की हड्डियां और ७७४ लाख रुपये की खालें विदेशों में गई थीं। सन् १९५०-५१ में २३० लाख रुपये की हड्डियां और दस करोड़ रुपये से भी अधिक की खालें विदेश भेजी गईं। खालों की निकासी का व्यापार इतना आगे बढ़ा कि आज भारत गाय की खाल निर्यात करने में संसार में सर्वप्रथम है। पंजाब के सरकारी महकमा दस्तकारी के श्री रोशनलाल आनन्द की जाँच के अनुसार तो एक करोड़ से अधिक पशुओं की खालें सालाना विदेशों को जाती रही हैं। सन् १९५२-५३ की सरकारी वार्षिक रिपोर्ट में सरकार स्वयं स्वीकार करती है कि देहली से हवाई जहाज द्वारा ३४५२०७ रुपये की खालें विदेशों को गईं। अगस्त सन् ५२ से
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

फरवरी सन् ५३ तक केवल कलकत्ते से १५,६६,८७० रुपये की
बाहर भेजी गई। इस प्रकार अन्य शहरों से भी बहुत बड़ी संख्या
खालें भेजी गई थीं। सन् ५३ की अपेक्षा आज और भी अधिक गो
किया जा रहा है। इसी प्रकार गोवध चलता रहा तो बहुत
समय में गोवंश समाप्त हो जायेगा।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् जिस समय भारत के कुछ प्रा
ने गोवध बन्द किया उस समय श्री जवाहरलाल जी की सम्मति
इस कांग्रेस सरकार ने एक गुप्त सरक्यूलर समस्त प्रदेशों की सरकार
को भेजा था, उसका भाव यह था कि प्रत्येक प्रान्तीय सरकार गो
को कानूनन बन्द करने के प्रश्न पर पुनः गम्भीरतापूर्वक विचार
क्योंकि इससे चमड़े के व्यापार को बड़ा भारी धक्का लगे
जिससे करोड़ों रुपये की देश को हानि होगी।" यह निर्देश
सरकार का है जो अपने को गांधी जी के सिद्धान्तानुसार किसी
लक्ष्य की प्राप्ति के निमित्त घृणित, हिंसक एवं अमानुषिक उपायों
प्रयोग की घोर विरोधी है।

इतना ही नहीं, इस सम्बन्ध में श्री नेहरू जी के विचार औ
भी अशोभनीय हैं। ३१-१-४८ को नेहरू जी की अध्यक्षता
एक राष्ट्रीय योजना कमेटी बनी और उसकी रिपोर्ट के पृष्ठ २३
लिखा गया कि "लोगों के भोजन की आदतों और धार्मिक भावना
में क्रान्ति करके फालतू पशुओं को भोजन के रूप में प्रयोग करा
जाय या इसी काम के लिए उन्हें पड़ौसी देशों में भेज दिया जावे
अधिक क्या लिखें, जो मुसलमान और अंग्रेज न कर सके
काम अब कांग्रेस सरकार कर रही है—अर्थात् गोवंश का समूल नाश

गोमेध का सच्चा अर्थ

कुछ लोग गोवध करते हुए कहा करते हैं कि गोमेध यज्ञ
वेदों से चला आ रहा है। सब ऋषि लोग गो मांस खाते आये हैं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जवाहरलाल और विनोबा तक का भी ऐसा ही विचार है। परन्तु सबने ऐसा मानने में बड़ी भूल की है—गोमेध का सच्चा अर्थ प्रकार से है—

'मेधृ मेधा हिंसनयोः संगमे च"

यह पाणिनी धातु-पाठ का प्रमाण है और कोष में भी 'मेध' तु के जानना, निन्दा करना, परस्पर मिलना, वध करना—इतने अर्थ ये हैं। मेधा (बुद्धि) की वृद्धि जिस प्रकार हो सके वैसा प्रयत्न रना चाहिये। हिंसा तथा संगतिकरण में प्रयोग इस मेधृ धातु का । इसीलिए पितृमेध यज्ञ में पिता के साथ संगतिकरण का प्रयोजन । पितृ मेध में पिता का वध तो किया नहीं जासकता क्योंकि पितृ-ध तो प्रतिदिन करने का कर्तव्य है। यदि एक दिन वध कर दिया तो अगले दिन कैसे करेगा ? इसी प्रकार गृहमेध में घर का नाश नहीं या जा सकता। गृह मेध यज्ञ का अर्थ गृह सेवा है। इसी प्रकार मेध से गो सेवा अभिषितार्थ है, न कि गोवध। क्योंकि गो का म ही "अघ्न्या" और "अदिति" है जिसका अर्थ ही न मारने योग्य । अतः वेद स्पष्ट करता है कि—

मुग्धा देवा उत शुना यजन्त, उत गोरङ्गैः पुरुधा यजन्त ॥

(अथर्व० ७।५।५)

"मूर्ख याजक कुत्ते से यज्ञ करते हैं और गायों के अंगों से नेक प्रकार के यज्ञ करते हैं।"

यहाँ पर गौ मांस से यज्ञ करने वालों को मूर्ख याजक कहा या है।" गोवध का कारण—वेद के अर्थ को न जानना।

दाहरण- शकमयं धूममारादपश्यं, विषूवता पर एनावरेण।

उक्षाणं पृश्निमपचन्त धीराः, तानि धर्माणि प्रथमान्यासन ॥

(ऋग्वेद १।१६४।४३)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्थः—मैंने कंडों के धुएं को पास में ही देखा और चारों ओ
फैले हुए इस धुएँ से मैंने अग्नि भी देख ली है। वहां बुद्धिम
(उक्षाणं) सोम को (पृश्नि अपचन्त) गाय के दूध में पकाते हैं।

यहाँ (उक्षा) पद से सोम का ग्रहण होता है। यह सा
आचार्य का मत है। पर दूसरे विदेशी विद्वानों का मत है कि
'उक्षा' पद से बैल का और पृश्नि पद से गाय का ग्रहण करना चाहि
इन विदेशियों ने अर्थों का अनर्थ कर डाला।

इस प्रकार से जो लोग वेद और वैदिक साहित्य को अच्छे
प्रकार से नहीं समझते वे वेद से गोवध सिद्ध करते हैं। आज
श्री जगजीवन राम मन्त्री भारतीय सरकार भी ऐसा ही दावा करते हैं
परन्तु इस विषय में गो भक्त विद्वानों के साथ कोई भी शास्त्रार्थ क
को तैयार नहीं है !

हमारे ऋषियों ने गोमेध का अर्थ गोसेवा, पृथ्वी की र
इन्द्रिय दमन आदि किया। गो के अर्थ इन्द्रिय, पृथ्वी आदि भी हो
हैं। परन्तु इस रहस्य को ये लाल बुझक्कड़ कैसे जानें ?

अश्वमेध, अजामेध का भी अर्थ ये नहीं जानते। अश्वमेध
अर्थ घोड़े को मारकर यज्ञ करना नहीं है। 'अश्वं वै राष्ट्रं' ऐ
शतपथ ब्राह्मण में कहा है। राष्ट्र की रक्षा करना अश्वमेध का ता
है।

अजा मेध का अर्थ बकरों को मार कर यज्ञ करना नहीं है
अजा नाम प्रकृति का है। प्रकृति का विज्ञान प्राप्त करना ही अजा
यज्ञ होता है।

पृथ्वी पर जब भ्रष्टाचार छा जाता था उस समय बड़े

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यज्ञों का विधान था। विश्व के भ्रष्टाचार को दूर करने के हेतु जो यज्ञ किया जाता था उसको गोमेध यज्ञ कहते थे। राष्ट्र की वृद्धि अथवा राष्ट्र के पापाचार को दूर करने के लिये जो बड़े-बड़े यज्ञ होते थे उन्हे अश्वमेध यज्ञ कहा जाता था।

पुरातनकाल में गोवध, अश्व वध, अजावध नहीं होता था और न ही वैदिक साहित्य में इसका विधान है।

स्वर्णभूमि श्मशान बन जायेगी

(कविवर मैथिलीशरण गुप्त—भारत भारती से)

दांतों तले तृण दबा कर हैं दीन गायें कह रहीं—
हम पशु तथा तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही ?
हमने तुम्हें मां की तरह है दूध पीने को दिया,
दे कर कसाई को हमें तुमने हमारा वध किया।
क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं, बलहीन हैं,
मारो कि पालो कुछ करो तुम हम सदैव अधीन हैं।
प्रभु के यहाँ से भी कदाचित् आज हम असहाय हैं,
इससे अधिक अब क्या कहें—हा ! हम तुम्हारी गाय हैं।
जारी रहा क्रम यदि यहाँ यों ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत-भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायेगी,
यह स्वर्ण भारतभूमि बस, मरघट-मही बन जायेगी।'

गो-गीत (राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त)

गाय कहूं या तुझको माय ?
अयि आबाल-वृद्ध हम सबकी जीवन भर की धाय।
तेरा मूत्र और गोबर भी पावे, सो तर जाय।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

घर ही नहीं, खेत की भी तू सबकी एक सहाय।
न्योछावर है उस पशुता पर यह नरता निरुपाय,
आ हम दोनों आज पुकारें—कहाँ कन्हैया हाय !

आयुर्वेद और गोमाता—गौ दुग्ध अमृत है

संसार के सब नर नारी यह अभिलाषा रखते हैं कि अमृत नाम की वस्तु हमें मिल जावे और उसके सेवन से हम अमर हो जावें। सब का दृढ़ विश्वास है कि अमृत सेवन से दुःख का विघात हो जाता है, बूढ़े व्यक्ति पुनः जवान बनते हैं, बालक पहलवान बनते हैं और निर्बल व बीमार स्वस्थ बन जाते हैं। अमृत की खोज में सब ही मनुष्य व्याप्त हैं। ऐसे खोजियों के लिये अब यहाँ पर उस अमृत के स्रोत का वर्णन किया जाता है।

"अमृतं वै गवां क्षीरमित्याह त्रिदशाधिपः।
(महाभारत अनु० अ० ६६ श्लो० ४६)

'गौओं का दूध ही अमृत है, यह देवराज इन्द्र ने कहा है।'

आयुर्वेद के ग्रन्थ राजनिघण्टु में पीयूष और अमृत दोनों नाम गो दुग्ध के लिखे हैं......

"क्षीरं पीयूषमूधस्यं दुग्धं स्तन्यं पयोऽमृतम्।"

अर्थः—क्षीर, पीयूष, ऊधस्य, दुग्ध, स्तन्य, पय और अमृत ये सात नाम राजनिघण्टु में दुग्ध के लिखे गये हैं। क्षरित होकर प्राप्त होता है इसलिये इसे क्षीर कहते हैं। बछड़े और अपने स्वामी के प्रेम के कारण गो माता का दूध ऊध (ओड़ा) में भर जाता है, ऊध में रहने के कारण से ही ऊधस्य इसका नाम पड़ा है। दोह कर निकाला जाता है—इसलिये दुग्ध कहते हैं। स्तनों के द्वारा प्राप्त होता है तथा जिन माताओं के स्तनों में दूध नहीं रहता उनके स्तनों में गो-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दुग्ध के सेवन से दूध बढ़ता है, अतः इसका नाम स्तन्य है। पीया जाता है तथा शरीर को बढ़ाता है—अतः पय कहते हैं। गो दुग्ध के सेवन से मनुष्य की आयु बढ़ती है—वह मृत्यु को भी परे धकेल देता है और अमर कर देता है—इसलिये दूध को पीयूष और अमृत कहा जाता है।

गो दुग्ध के दश गुण

स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्ष्ण पिच्छिलम्।
गुरु मन्दं प्रसन्नं च गव्यं दश गुणं पयः॥
(चरक सूत्र स्थान अ० २७ श्लोक २१४)

गाय का दूध १—स्वादु (मीठा) २—शीत (ठण्डा) ३—कोमल ४—स्नेहयुक्त और घृत वाला, ५—गाढ़ा, ६—चिकना, ७—चिपचिपा, ८—कुछ भारी. ९—देर से बिगड़ने वाला, १०—निर्मल।

इससे पता लगता है कि गोदूध सब गुणों का भण्डार है।

महर्षि धन्वन्तरि जी इन गुणों की पुष्टि करते हैं—

तत्त्वनेकौषधिरस प्रसादं प्राणदं गुरु।
मधुरं पिच्छिलं शीतं स्निग्धं श्लक्ष्णं सरं मृदु॥
सर्व प्राणभृतां तस्मात् सात्म्यं क्षीरमिहोच्यते॥
(सुश्रुत संहिता सूत्र स्थान अ० ४५ श्लो० ४८)

अर्थः - दूध अनेक औषधियों का रस है, सब द्रव्यों में निर्मल, प्राण अर्थात् जीवन देने वाला, भारी, मधुर, चिपचिपा, शीतल, स्निग्ध, चिकना, रेचक और कोमल आदि दश गुणों वाला है।

सब प्राणियों के लिये सुखदायी है।

महर्षि धन्वन्तरि जी लिखते हैं कि……

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पथ्यं रसायनं बल्यं हृद्यं मेध्यं गवां पयः ।
आयुष्यं पुंस्त्वकृद्वातरक्तपित्तविकार नुत् ।।(धन्वन्तरीय निघण्टु)

गौ का दूध सब रोगों व अवस्थाओं में सेवन करने योग्य वा लाभदायक, रसायन, बलकारक, हृदय के लिए हितकारक, बुद्धिवर्धक, आयुवर्धक, पुरुषत्व शक्तिवर्धक, वातनाशक, तथा रक्त पित्त के विकारों वा रोगों का नाश करने वाला है।

राजनिघण्टु में नरहरि ने गो दुग्ध के गुण इस प्रकार लिखे हैं—

गव्यं क्षीरं पथ्यमत्यन्तरुच्यं स्वादु स्निग्धं वातपित्तामयघ्नम्।
कान्ति प्रज्ञा बुद्धि मेधाङ्गपुष्टि धत्ते स्पष्टं वीर्य वृद्धि विधत्ते ॥

अर्थः—स्वादु (मधुर), स्निग्ध, पित्त, वातरोग नाशक, कान्ति (तेज), प्रज्ञा, बुद्धि और मेधा को बढ़ाता, इन सबको तथा शरीर के सब अङ्गों को पुष्ट करता है, यह स्पष्ट वा सबको प्रत्यक्ष है कि यह वीर्य-वृद्धि भली भांति करता है।

भाव प्रकाश निघण्टु में लिखा है—

दोषधातु मल स्रोतः किञ्चित्क्लेदकरं गुरु।
जरा समस्त रोगाणां शान्ति कृत्सेविनां सदा ॥

गाय का दूध रसरक्तादि सात धातुओं. वात, पित्त, कफ इन तीनों दोषों, मल मूत्र आदि तथा स्रोत अर्थात् नस नाड़ियों को किञ्चित् क्लेदकारक अर्थात् कुछ गीला करने वाला, अर्थात् इन सबको स्नेहयुक्त रखता है। जो सदैव इसका सेवन करते हैं उनके पास बुढ़ापा नहीं फटकता। गोदुग्ध का सेवनसब रोगों को शान्त करने वाला है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

महर्षि धन्वन्तरि जी लिखते हैं—

गवां सितानां वाताघ्नं कृष्णानां पित्तनाशनम् ।
कफघ्नं रक्त वर्णानां गो दुग्धं च त्रिधा स्मृतम् ॥

अर्थ—श्वेत रंग की गायों का दूध वात रोग नाशक, काली गायों का पित्त रोग नाशक और लाल वर्ण गायों का कफ रोग नाशक होता है।

गो दूध का सेवन किस प्रकार करना चाहिए ?

हमारे शास्त्रकार कहते हैं "धारोष्णं शस्यते गव्यम्"

धारोष्ण के गुण

गाय के धारोष्ण दूध का ही सेवन प्रशंसनीय है—

धारोष्णं गोपयो बल्यं लघु शीतं सुधा समम् ।
दीपनं च त्रिदोषघ्नं तद्धारा शिशिर त्यजेत् ॥

अर्थ:—गाय का धारोष्ण दूध बल देने वाला, पचने में हल्का शीतल, अमृत के समान गुणकारी, जठराग्नि को बढ़ाने वाला और त्रिदोषनाशक है। ठंडा होने पर गाय के दूध में ये गुण नहीं रहते और बहुत देर पड़ा रहने पर तो दूध में गुण के स्थान पर अनेक दोष आ जाते हैं। ऐसी अवस्था में दूध को गर्म करके ही प्रयोग में लाना चाहिये। कितना भी करो, जो गुण धारोष्ण दूध में हैं वे गर्म किए हुए दूध में नहीं होते। यथार्थ बात तो यह है कि जिस समय दूध निकाला जाता है वह इतना उष्ण होता है—जितनी उष्णता चाहिए और मधुर भी उतना ही होता है जितना मनुष्य को चाहिए। आजकल लोग दूध

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

को बिगाड़ कर पीते हैं। अग्नि पर उबालने से कितने ही गुण दूध के जल जाते हैं और मीठा डालने से कितने ही दुर्गुण उसमें आ जाते हैं। इस प्रकार का दूध पूरा उत्तेजक हो जाता है। गर्म दूध तो ब्रह्मचर्य का महान् शत्रु है ही। इसलिये सौभाग्यशाली वे ही मनुष्य हैं जिन्हें गोमाता का धारोष्ण दूध पीने को मिलता है। भैंस, बकरी-भेड़ आदि का दूध गर्म करके ही पीने का विधान है।

खट्टा, फटा हुआ, बासी, दुर्गन्धयुक्त एवं खारी दूध कभी नहीं पीना चाहिए। इतना ही नहीं, खट्टे एवं लवणयुक्त भोजन के साथ भी दूध नहीं पीना चाहिये, क्योंकि इससे बुद्धि का नाश और कुष्ठ (कोढ़) आदि भयंकर रोग होते हैं।

शास्त्रकारों ने सायंकाल के दूध के बारे में लिखा है—

वदन्ति पेयं निशि केवलं पयो भोज्यं न तेनेह सहौदनादिकम्।
भवेदजीर्णं न शयीत शर्वरीं क्षीरस्य पीतस्य न शेषमुत्सृजेत्॥

अर्थ:—"सांयकाल केवल दूध ही पीना चाहिये, उसके साथ और कुछ चावल आदि नहीं खाना चाहिए। रात्रि को भोजन करने से अजीर्ण और अनिद्रा (नींद न आना) का रोग लग जाता है। दूध कभी झूठा नहीं छोड़ना चाहिए।"

स्वप्नदोष आदि धातु रोग ऐसे ही भोजन-भट्टों को पकड़ा करता है। रात्रि का दूध शयन करने से दो तीन घन्टे पूर्व ही पीना चाहिए अन्यथा हानि करता है। यह नियम विद्या-प्रेमियों, ब्रह्मचर्य प्रेमियों को श्रद्धापूर्वक स्मरण कर लेना चाहिए। दूध को कभी भी कप या गिलास में डालकर नहीं पीना चाहिए अपितु थाली या बेला में पीना चाहिए। इसका लाभ पीने वाले स्वयं अनुभव करेंगे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

व्यवस्थापक एस० बी० डेयरी, दिनापुर गो दूध के विषय में लिखते हैं:—

"मनुष्य के लिए अमूल्य रत्न है। इसके दूध से बल, बुद्धि, आयु बढ़ती है और लोग निरोग रहते हैं।"

हाफकिन्स यूनिवर्सिटी के डाक्टर ई.बी. मैकालम ने पर्याप्त अन्वेषण के बाद लिखा है—

"Milk is the one food for which there is no effective substitute."

अर्थ:—दूध एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जिसका स्थान अन्य कोई वस्तु नहीं ले सकती।

लार्ड लिनलिथगो लिखते हैं—

"प्रत्येक बालक का आरोग्य—केवल आरोग्य ही नहीं, प्रत्युत बुद्धि उसके द्वारा पिये हुए दूध के परिमाण और प्रकार पर अवलम्बित है।" ईसाट्वीड लिखते हैं—

अपनी सन्तान का हार्दिक कल्याण चाहने वाले माता-पिता को अपने लड़के-लड़कियों को कभी भैंस का दूध न पिलाना चाहिए। भैंस का दूध मनुष्य के लिए उपयोगी पेय नहीं है।

इसीलिए कश्यप ऋषि ने कश्यप संहिता में लिख दिया—'क्षीरात्परं नास्ति च जीवनीयम्'—गो दूध से बढ़कर कोई जीवन बढ़ाने वाला आहार नहीं है।"

कश्यप संहिता बहुत पुरातन ग्रन्थ है। इसमें 'भोजन कल्प' नाम का एक अध्याय है—उसमें गो दूध की बहुत बड़ी महिमा गाई गई है—यथा (गवां क्षीरं रसायनम्) गो दुग्ध रसायन (औषधि)

Arya Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। गाय के विषय में ऋषि ने कह दिया है कि "गावः प्रतिष्ठः स चराचरस्य" गाय इस विश्व चराचर की प्रतिष्ठा (आधार) है।

गो दूध एक अत्यन्त अद्भुत अमृत है। दूध में जादु भरा है। इस अमृत के सेवन से जग के पाप, ताप एवं शाप शांत हो जाते हैं और सर्वत्र सुख-सम्पत्ति-स्वास्थ्य का साम्राज्य छा जाता है। इसलिये गौ माता को काम धेनु कहा गया है।

गो दुग्ध चिकित्सा

गो दुग्ध औषधियों में भी अनेकों स्थानों पर काम आता है। किस-किस रोग में कैसा दूध सेवन किया जाता है—यह सब इस लेख को पढ़ कर लाभ उठावें।

ज्वर और दूध

जीर्ण ज्वरे कफे क्षीणे क्षीरं स्यादमृतोपमम्।
तदेव तरुणे पीतं विषवद् हन्ति मानवम्॥

'पुराने ज्वर, कफ और निर्बलता में दूध अमृत के समान है और वही दूध नए ज्वर में पिया हुआ विष के समान मनुष्य को मार देता है।"

संग्रहणी और दूध

संग्रहणी का रोग जब पुराना हो जावे और रोगी निर्बल हो तो दुग्धवटि नाम की औषधि जो गाय के दूध के साथ खरल करके बनाई जाती है, जिसका सेवन गो दूध के साथ कराते हैं। जल के स्थान पर भी और भोजन के स्थान पर भी गो दूध का ही सेवन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
कराते हैं। जो रोगी २ छटांक दूध नहीं पचा सकता था—वह इसके सेवन से १० सेर दूध पचा लेता है। गो दूध जादू के समान प्रभाव करता है।

मूर्छा, हिस्टीरिया, अपस्मार आदि रोग

आध सेर दूध और आध सेर पानी दोनों को मिलाकर अग्नि पर चढ़ाओ। इसमें अश्वगन्ध नागोरी ६ माशे, शितावर ६ माशे डाल दें और इतना पकायें कि दूध शेष रह जावे। उसे मल कर और छान कर मिश्री मिलाकर पीवें।

पाण्डुरोग:—गाय के दूध में सोंठ का चूर्ण १ माशे से ६ माशे तक मिलाकर पीने से कामला पाण्डु रोगादि नष्ट हो जाते हैं।

अजीर्ण—अफारा रोग

जिनको दूध नहीं पचता और जिनको दूध पीने से अफारा हो जाता है उनके लिये दूध में ३ भाग जल डालकर, १ तोला सोंठ और १ तोला पीपल डालकर औटावें। जल के जल जाने पर उसे खूब तरड़ावें। तदनन्तर सेवन से ठीक रहेगा।

कुछ प्रयोग—

(१) गाय के दूध में गोघृत मिला कर पीने से धतूरे का विष दूर हो जाता है।

(२) जंगली काँटेदार चुलाई की जड़ घोटकर गोदूध के साथ पिलाने से सब रोग दूर होते हैं।

(३) गोघृत और दूध दोनों मिलाकर पर्याप्त मात्रा में पिलाने से भांग का नशा दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(४) चौलाई की जड़ को जल के साथ पीस कर टिकिया बनावें उससे चौगुना गाय का घी लें और गाय के घी से चौगुना गाय का दूध लें। सब को मिला कर कलई वाले पात्र में मन्द अग्नि से पकावें। जब केवल घी रह जाये तो सब निथार कर छान लें। इसमें एक तोले से दो तोले तक प्रतिदिन सेवन करने से चूहों का विष दूर हो जाता है।

(५) धतूरे की जड़ ६ माशे से एक तोले तक रगड़ छानकर दूध के साथ घोट कर पिलाने से उन्मत्त (बावला) कुत्ते का विष दूर हो जाता है।

(६) घी और दूध मिलाकर पिलाने से सब प्रकार के विष दूर होते हैं।

(७) तुलसी के पत्ते १ तोला, काली मिर्च १ माशा, पीपल २ माशे इन तीनों को कूट पीसकर १ पाव जल में उबालें। आधा रहने पर मल और छान कर थोड़ा गर्म किया हुआ गो दुग्ध १ छटांक मिलावें तथा ½ छटांक मिश्री डालकर पिलाने से विषम ज्वर (मलेरिया) दूर होता है।

(८) वात रोग में केवल दूध का सेवन किया जाय और जल एवं भोजन छोड़ दिया जाय तो वातरोग समूल नष्ट हो जाता है।

व्यायाम शील, श्वास रोग वाले, थके हुए, सूखे हुए, राजयक्ष्मा वाले, जीर्ण ज्वर वाले, मानसिक रोग वाले, उन्माद वाले, संग्रहणी, पाण्डुरोग, बवासीर, रक्तपित्त, अतिसार, योनिरोग गर्भस्राव आदि रोगों में गो दूध का विधान किया है।

गो घृत चिकित्सा

महर्षि धन्वतरि जी महाराज ने गो घृत के गुण इस प्रकार

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

से लिखे हैं—

शस्तं धी स्मृति मेधाग्नि बलायुः शुक्र चक्षुषाम्।
बाल वृद्ध प्रजा कान्ति सौकुमार्य स्थिरार्थिनाम् ॥१४५॥
क्षतक्षीण परीसर्प शस्त्राग्निग्लपितात्मानाम्।
विपाके मधुरं शीतं वातपित्त विषापहम्।
चक्षुष्यं बल्यमग्नयं च गव्यं सर्पिर्गुणोत्तरम् ॥१४६॥

(धन्वन्तरीय निघण्टौ षष्ठो वर्गः)

अर्थात्—गाय का घृत स्मरणशक्ति, मेधा (धारणावती बुद्धि), जठराग्नि बल आयु वीर्य, नेत्रज्योति, बालक बूढ़े, प्रजा, (सन्तान), कान्ति, तथा युवावस्था की स्थिरता के लिए लाभदायक है। गाय का घृत पाक में मधुर और शीतल है। वातरोगों, पित्तरोगों तथा सब प्रकार के जहरों को नष्ट करने वाला है। निर्बल, परीसर्प रोग तथा शस्त्र और अग्नि से पीड़ितों के लिए लाभदायक है। नेत्र ज्योति-वर्धक है। अत्यन्त बलवर्धक और सबसे अधिक गुण वाला है।

श्री नरहरि अपने राजनिघण्टु में कुछ अधिक लिखते हैं:—

गाय का घी वात श्लेष्महारक श्रम निवारक, हृदय को हित-कारी व शरीर को स्थिरता देने वाला है।

आगे भी लिखते हैं कि—(राजनिघण्टु पंचदशो वर्गः)

"गव्यं हव्यतमं घृतं बहुगुणं भोग्यं भवेद् भाग्यतः ॥२०४॥

'गौ का घी हवन करने के लिए सर्वश्रेष्ठ और बहुत गुणयुक्त है, यह बहुत बड़े सौभाग्यशाली मनुष्य को ही मिलता है।'

गो नवनीत (मक्खन) के गुण

महर्षि धन्वन्तरि जी महाराज मक्खन के गुण इस प्रकार

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लिखते हैं—

नवनीतं नवं हृद्यं ग्राहि रोचन दीपनम् ।
क्षयारुच्यर्दितप्लीह ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥२३०॥
चक्षुष्यं शिशिरं स्निग्धं वृष्यं जीवन बृंहणम् ।
क्षीरोद्भवं हिमं ग्राहि रक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ॥२३१॥
स्मृतिक्षुधाग्नि शुक्रोजः कफमेदो विवर्धनम् ॥
वातपित्त विषोन्मादशोथ लक्ष्मी ज्वरापहम् ॥२३२॥
सर्व स्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥२३३॥

(धन्वन्तरीय निघण्टौ षष्ठो वर्गः)

अर्थः—मक्खन हृदय के लिये हितकर है, संग्राही है, रोचक अर्थात् रुचिकारक है, जठराग्नि को तेज करता है। तपेदिक, अरुचि, लकवा, प्लीहा (तिल्ली), संग्रहणी, अर्श (बवासीर) आदि विकारों को नष्ट करता है। नेत्र के लिए हितकारी है। शीतल और स्निग्ध है, बलदायक है। जीवन अर्थात् आयु बढ़ाने वाला है। दूध से उत्पन्न हुआ यह नवनीत शीतलग्राही है। रक्त पित्त तथा चक्षु रोगों को नष्ट करने वाला है। स्मरण शक्ति, क्षुधा, जठराग्नि, शुक्र, कान्ति बढ़ाने वाला है। वात-पित्त के रोगों तथा सब प्रकार के विषयों को दूर करता है। उन्माद, शोथ और ज्वर को दूर करके कान्ति बढ़ाता है। सब घृतों में उत्तम है। रस और पाक में शीतल और मधुर है।

इसके कुछ प्रयोगः—

(१) बराबर नागकेसर और नवनीत में मिलाकर खिलाया जावे तो बवासीर का खून आना बन्द हो जाता है। रक्त पित्त रोग को दूर करने में श्रेष्ठ है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(२) नवनीत में थोड़ी मिश्री मिलाकर खिलाने से गर्भाशय के रोग दूर करता है। सन्तान दाता है।

(३) सर्प के काट खाने पर जब खून बहने लगता है तो मक्खन और नागकेशर के सेवन करने से खून बन्द हो जाता है।

वातार्श (बादी बवासीर) पर गोघृत—

(४) जिमीकन्द एक कन्द होता है. इसे गीली मिट्टी में लपेट भाड़ में देवें। जब मिट्टी लाल हो जाय तो यह पक जाता है। पुनः मिट्टी उतार दें और कन्द का छिलका भी उतार देवें। पुनः इस कन्द के टुकड़े-टुकड़े करके घी में भून लें। इसको एक तोले से दो तोले तक गो दुग्ध के साथ सेवन करें। कुछ दिन के बाद बादी बवासीर दूर हो जायेगा।

(५) वादी बवासीर के मस्से ठीक होने का जादू भरा प्रयोगः— प्याज भूभल में इस प्रकार भूनें कि वे आधे भुन जायें। पुनः उसका छिलका उतार कर कुण्डी-डण्डे से खूब रगड़कर चटनी सी बना कर और घी में भूनें। टिकिया गर्म-गर्म बाँधें।

(६) पाण्डु (कामला) रोग पर गोघृतः—त्रिफले का रस वा काढ़ा २ तोले लेकर ६ माशे घी, १ तोला शहद मिला कर सेवन करो।

(७) हरी हल्दी का रस २ तोला या चूर्ण २ तोला लेकर उसमें ६ माशे गोघृत, १ तोला शहद मिला कर सेवन करने से पाण्डुरोग समाप्त होगा।

(८) थोड़ा सा गर्म करके गोघृत पीने से धतूरे का विष दूर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(९) गोघृत ५ तोले, सोंठ १ तोला दोनों को मिला कर खाने से भांग का नशा उतर जाता है।

(१०) गोघृत गर्म करके कई बार पीने से अफीम का नशा उतर जाता है।

इस प्रकार गो घृत से आयुर्वेद में सैकड़ों प्रकार के घृत तैयार किये जाते हैं। जैसे ब्राह्मी घृत, फल घृत, त्रिफलादि घृत, अमृत घृत आदि।

इन सबका वर्णन करें तो एक मोटी पुस्तक बन जावे। संक्षेप में इतना ही लिखा जाता है कि गोघृत सब रोगों की एक दवा है।

गोमय चिकित्सा

गाय के गोबर से चौका लगाने से जहाँ पवित्रता आती है वहाँ अनेक रोगों का भी संहार होता है। इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० जी० ई० बीगेंड लिखते हैं—"गोबर से तपेदिक, मलेरिया, और हैजे के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

मद्रास के प्रसिद्ध डा० कीग का कहना है कि गाय के गोबर में हैजे के किटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है। मिर्गी, हिस्टीरिया, मस्तकभ्रम, मूर्छा, खुजली, चकत्ते, पित्त, जले हुए, कोढ़ और फोड़े फुन्सियों में गोबर अतीव लाभदायक है।

(१) गाय के गोबर को सारे शरीर में मलकर धूप में बैठने से खुजली आदि चर्म रोगों की निवृत्ति होती है।

(२) पेट में छोटे-छोटे कृमि हो जावें तो गाय के गोबर में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

राख २ तो०, १० तोले जल में मिलाकर वस्त्र से छानकर ३ दिन तक सायं प्रातः पीने से कृमि मर जाते हैं।

(३) गोबर की भस्म से दांत साफ होते हैं और मसूड़ों की पीड़ा दूर होती है।

(४) मृत गर्भ को बाहर निकालने के लिए गाय के दूध में गाय के गोबर का रस मिलाकर पिलाना चाहिए।

(५) गोबर की राख को कपड़ छान कर चेचक (माता) के घावों में भरने से ठीक हो जाते हैं। यही सरल सस्ता उपाय है।

(६) गोबर के रस में पीसकर फिटकरी मिलाई जाय और उसे मुख की फुन्सियों (मुहासों) पर लगाया जावे तो जादू का काम देता है। शीघ्र लाभ होता है।

(७) पित्त प्रकृति के सर्प के काटने पर जो सूजन आ जाती है वह गाय के गोबर से दूर होती है। सर्प के काटने पर जब रोगी बेहोश हो जाता है जिसे लोग मरा हुआ समझते हैं, उसे गोबर में दबा कर रखा जावे तो ठीक हो जाता है।

(८) कैथ के रस को गोबर के रस में मिला कर कुछ मधु मिला कर चाटा जावे तो चूहों का विष दूर हो जाता है।

(९) गाय के गोबर में जमाल घोटा आदि अनेक विष शुद्ध कर अमृत बनाये जाते हैं।

(१०) डा० मैकफर्सन ने दो वर्ष तक गोबर का अध्ययन एवं परीक्षण करके 'न्यूयार्क टाइम्स' में घोषणा की है कि गोबर से बढ़कर

Arvind Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जरासीम (कीटाणु) नाशक दूसरा उपयुक्त द्रव्य नहीं है।

इस गोबर को यदि फसल में डाला जाये तो भूमि सो उगलती है। अतः स्कन्द पुराण में कह दिया है—

लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमङ्गला।
गोमयालेपनं तस्मात् कर्तव्यं पाण्डुनन्दन॥

अर्थात्—गोबर में परम पवित्र कल्याण करने वाली लक्ष्मी वा करती है। गोमाता के सब पदार्थ अमृत हैं। गोमय भी गुणों की खान है।

गोमूत्र के लाभ

गोमाता वास्तव में गुणों की भण्डार है। घृत और दुग्ध तो अमृत हैं ही—परन्तु गो माता का तो मूत्र भी अमृत के तुल्य है।

गोमूत्र के गुण धन्वन्तरि जी महाराज लिखते हैं—

गोमूत्रं तिक्तोष्णं सक्षारं लेखनम सरम।
लघ्वग्निदीपनं मेध्यं पित्तजं कफवातजित्॥

अर्थात् गोमूत्र तिक्त, उष्ण क्षार से युक्त तथा नेत्र के फोले को काटने वाला और दस्तावर है। जठराग्नि को दीपन करने वाला, मेधा बुद्धिवर्धक, पित्तकारक तथा कफ, वातनाशक है।

भावप्रकाश निघण्टु के रचयिता पं० भाव मिश्र जी ने भी गोमूत्र के गुण निम्न प्रकार से लिखे हैं—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गोमूत्र शूल, गुल्म, उदर रोग. अफारा, खुजली, नेत्र तथा मुख सम्बन्धी रोग, कुष्ठ भेद, वात, आम, वस्ति सम्बन्धी रोग, खाँसी, श्वास, शोथ, पाण्डु रोग को नष्ट करने वाला होता है।

गोमूत्र के कुछ आयुर्वेदिक प्रयोग यहाँ दिये जाते हैं—

(१) पीपल बड़ा गोमूत्र में घिस कर बच्चों को पिलाने से तिल्ली आदि रोग दूर होते हैं।

(२) यकृत (जिगर):—जिस समय जिगर अधिक बढ़ गया हो और हर समय पीड़ा रहती हो—उस समय गोमूत्र को गर्म करके इसमें ऊनी वस्त्र या फलालेन का भाग उसमें भिगोकर जिगर को बार-बार-बार सेकें। इससे पर्याप्त लाभ होता है।

(३) गोमूत्र १ तोला, नागकेसर १ तोला, पीपल १ तोला, सौंठ १ तोला। पिछली तीनों औषधियों को बारीक चूर्ण करके गोमूत्र में मिला लें। इसमें से ३ माशे औषध ६ माशे शहद में मिलाकर प्रतिदिन प्रातःकाल रोगी को चटावें। इससे जिगर के सब रोग दूर होते हैं।

(४) केवल गोमूत्र को छानकर रोगी को पिलाने से जिगर में काफी लाभ होता है।

(५) सैंधा नमक और राई समान भाग लेकर चूर्ण बना दो माशे की मात्रा में गोमूत्र के साथ लेने से जिगर और तिल्ली रोग नष्ट हो जाते हैं।

(६) लहसुन, पीपलामूल, हरड़, सबको समान भाग लेकर सब इकट्ठी कूट, कपड़ छानकर नींबू के रस में या जल में घोटकर १-१ माशे की गोलियाँ बना, १-१ गोली प्रातः सायं गोमूत्र के साथ खाने से जिगर, तिल्ली के रोग नष्ट हो जाते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(७) बाम्बी की मिट्टी को गोमूत्र में घोलकर लेप करने से चींटी या मक्खी के काटे हुए को तुरन्त लाभ होता है। जहरीली मक्खी और भिरड़ आदि के काटने पर भी लाभ करता है।

(८) मीठा तेलिया शुद्ध, सुहागा, सफेद, काली मिर्च, नीला थोथा शुद्ध, इन चारों वस्तुओं को सम तोल लेकर बारीक पीस लें और बन्दाल के रस में खरल करके एक-एक माशे की गोलियाँ बनायें, आवश्यकता पड़ने पर गोमूत्र के साथ प्रयोग करें! इससे सब प्रकार के रोग उतर जाते हैं। यहाँ तक कि विषैले सांप का भी विष उतर जाता है।

(९) शिरीष का छिलका जड़, पत्ते, बीज इन सबको गोमूत्र में पीसकर मालिश करने से सब प्रकार के विषों का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

(१०) गोमूत्र के कान में डालने से कर्णशूल आदि रोग भी दूर हो जाते हैं।

(११) कफ रोग पर—केवल गोमूत्र पिलावें।

(१२) रेचन के लिए—जितनी बार रेचन देना हो उतनी बार गोमूत्र कपड़े में निचोड़ कर पिलाना चाहिए।

(१३) उदर रोग पर—गोमूत्र में शक्कर और बारीक नमक बराबर-बराबर डालकर पिलावें। या गोमूत्र में राई और सेंधा नमक डालकर पिलाना चाहिए।

(१४) बच्चों के उदर रोग पर—गोमूत्र में हल्दी डालकर दोनों समय पिलावें।

(१५) पाण्डु रोग पर—प्रतिदिन सबेरे शक्ति के अनुसार गो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मूत्र वस्त्र से छानकर रोग के न्यूनाधिक जोर के अनुसार २१ या ४२ दिन तक सेवन करावें।

(१६) कान बहने पर—गरम गोमूत्र से धोवें।

(१७) स्त्रियों के प्रसूति रोग होने के बाद या शरीर में सूजन आगया हो तो गोमूत्र रोज दिन में दो बार चार-चार तोले पिलावें।

(१८) मूत्रकृच्छ्र के ऊपर—रोज सवेरे दो तोला गोमूत्र जल में मिलाकर पिलाना चाहिये।

(१९) आँखों में दाह, सुस्ती, कब्जियत, और अरुचि के ऊपर—गोमूत्र में थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलाना चाहिए।

(२०) सफेद दाग और चकत्ते के ऊपर—हरताल पत्र, बावची तथा माल कांगनी गोमूत्र में दिन भर भिगोकर पीछे खरल करके बटोर करके छाया में डाल दें। बाद को नींबू के रस में घिस कर लेपन करें।

(२१) पेट के कृमियों पर—इस बीमारी का इलाज गोमूत्र से बढ़कर और कुछ नहीं। २ तोले गोमूत्र चने के बराबर डीकामाली के साथ मिलाकर प्रातःकाल पिलाया जावे तो सात दिन के अन्दर २ कृमि समाप्त हो जायेंगे।

इस गोमूत्र से सोना, चांदी, ताम्र, अभ्रक, सीसा, कलई आदि धातुओं को शोधा जाता है। इन्हें शुद्ध करके बड़ी-बड़ी कीमती भस्में बनाई जाती हैं जो अनेक प्रकार के रोगों में रामबाण हैं। मृतप्रायः रोगियों को भी जीवन दान करती हैं। कुचिला, बच्छनाग, जमालगोटा, धतूरा, गूगल आदि विषों को शुद्ध करने के लिये गोमूत्र एक कारण है। गोमूत्र तो आयुर्वेद का प्राण है। वैज्ञानिक रीति से गोमूत्र में फास्फेट, पोटाश, लवण, हाइड्रोजन, यूरिया, यूरिक एसिड होते हैं। जिन दिनों में गोमाता दूध देती है—उन दिनों में मूत्र

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

में लैक्टोज विद्यमान रहता है। यह हृदय और मस्तिष्क के रोगों में बड़ा काम आता है। आठ मास की गर्भवती गाय के मूत्र से हारमोन्ज तैयार किये जाते हैं—जिनसे पार्क-डेविस जैसी कम्पनियां लाखों रुपया कमा रही हैं।

बिहार राज्य गोशाला संघ के मन्त्री श्री धर्मपाल सिंह की रिपोर्ट बिहार सरकार ने प्रकाशित कराई है—पृष्ठ २४ पर लिखा है कि साल भर में १ गाय २२४७ पौंड गोमूत्र देती है। इससे ३० सेर नाइट्रोजन, ३२ सेर फास्फेट, ९८ सेर पोटास पैदा होता है जिसका बाजारी मूल्य ५००) रुपये है। इस प्रकार हमें पता लग गया कि गोमूत्र कितनी लाभदायक वस्तु है।

गाय की दही का उपयोग

स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्धनम।
वातापहं पवित्रं च दधि गव्यं रुचिप्रदम्॥

अर्थः—गाय का दही स्निग्ध, पाक में मधुर, जठराग्नि दीपक, बलवर्धक, वातविनाशक, परम पवित्र, रुचिकारक, शीतल और आम नाशक है। आगे भी—

गाय की दही अरुचि, पीनस, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, शीत ज्वर, विषम ज्वर, बवासीर और संग्रहणी रोग में हितकारी है।

(१) हल्दी का चूर्ण १ तोला, ८ तोले गोदधि में मिलाकर कुछ दिन के सेवन करने से पाण्डु कमलादि रोग समूल नष्ट हो जाते हैं।

(२) अधबिलोई दही के साथ गंगाधर चूर्ण प्रयोग करने से भयंकर अतिसार के दस्त भी रुक जाते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(३) आम के वृक्ष का कोमल ६ माशे छिलका पीसकर दही में ने से सब प्रकार के अतिसार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(४) यदि कोई भूलकर जमालगोटा खा जाय तो गोदही के ठ्ठे में मिश्री और धनिये का चूर्ण मिलाकर बार-बार पिलाने से जमालघोटे के कारण से लगे वमन और दस्त बन्द हो जाते हैं।

(५) दही में देशी शक्कर मिलाकर सायंकाल खाने से जुकाम नजला तुरन्त नष्ट हो जाता है।

(६) दही से सिर धोने से मस्तिष्क को ठण्ड पहुंचती है। बालों की जड़ें दृढ़ होती हैं। बाल देर तक काले रहते हैं।

(७) अजीर्ण जनित विषूचिका पर—गाय का दही या छाछ समान भाग पानी मिला कर सेवन करें।

(८) तृषा तथा दाह पर—पुरानी ईंट धोकर आग में डालें—लाल होने पर उसे दही में डालें और फिर उस दही को थोड़ा-थोड़ा करके खिलाओ।

(९) कनेर के विष पर गाय की दही शक्कर डालकर पिलाओ।

(१०) आधा शीशी—दही और भात सूर्योदय से पहले ३ रोज तक सेवन करो।

(११) सूजन - व्रण की पीड़ा और दाह के ऊपर—दही को कपड़े में बाँधकर लटका दो—उसे दर्द वाली जगह पर बाँधने से लाभ होता है।

(१२) सर्प के विष पर दही, मधु, मक्खन, ३-३ तोला तथा

Arya Vidya Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पीपल, सोंठ, काली मिर्च, बच और सेंधा नमक सब सम लेकर बारीक चूर्ण बना लें। ३ तोले एक बार में पिलावें। वमन न हो तो ३ तोले दूसरी बार, तीसरी बार। तीन बार में वमन-विरेचन होकर विष से मुक्ति मिल जावेगी।

इस प्रकार दधि में अनेक गुण हैं—विस्तार भय से संक्षेप से ही दर्शाये हैं।

तक्र की महिमा

गो तक्र की महिमा निराली ही है। आयुर्वेद भी इसकी बड़ाई करता २ थक गया और इसे अमृत की पदवी देकर सन्तोष धारण किया। फिर हम कौन हैं? जो इसके गुणों का बखान कर सकते हैं। जो भाग्यशाली इस अमृत रस को विधि से घूंट-घूंट कर पीयेगा—उसे इसके गुणों का साक्षात्कार होगा और वह फिर इसके गुणों का विस्तार संसार में करेगा—

राजनिघण्टु के कर्ता नरहरि जी लिखते हैं—

न तक्र सेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः।
यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः॥

अर्थात् गाय का तक्र सेवन करने वाला मनुष्य कदापि रोग से ग्रस्त नहीं हो सकता और तक्र से नष्ट हुए रोग पुनः उत्पन्नः नहीं होते। यथा देवताओं के सुख के लिये अमृत है तथा इस मर्त्यलोक में मनुष्यों के लिये तक्र अमृत तुल्य हैं।

धन्वन्तरि जी महाराज लिखते हैं—

गव्यं त्रिदोषशमनं पथ्ये श्रेष्ठं तदुच्यते।
दीपनं रुचि कृन्मेध्यमर्शोदरविकारजित्॥

(धन्वन्तरीय निघण्टु)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गाय का तक्र त्रिदोषनाशक, पचने में स्वादु, स्वादु रस से युक्त, का, ऊष्ण वीर्य; मूत्रकृच्छ रोग का नाश करने वाला कषैला, खट्टा अग्नि दीपक है। गो तक्र खट्टेपन से वात का, मधुर पन से पित्त तथा कषैलेपन से कफ का नाश करने से त्रिदोषनाशक कहलाता । गो तक्र स्वादिष्टग्राही. प्रमेह अर्श, (बवासीर) पाण्डु, ग्रहणी, कोष्ठवद्धता, भगन्दर, प्लीहा (तिल्ली), गुल्म (गोला), श्वेत ष्ठ, कृमि, घी का अजीर्ण, विष ज्वर और शूल आदि अनेकों रोगों को ट करता है। पथ्यों में उत्तम जठराग्नि को प्रदीप करने वाला, रुचि रक और मेधा बुद्धि वर्धक है। रक्त शोधक और वीर्य वर्धक है। छ पीने से भोजन शीघ्र पचता है। और आंतें शुद्ध हो जाती हैं। रणः संस्कृत के किसी कवि ने कहा है कि 'भोजनान्ते किं पेयम्" ांत भोजन के पश्चात् क्या पीना चाहिए तो उत्तर दिया है 'तक्रम्" तक्र पीना चाहिए। आगे गो तक्र के कुछ लाभदायक प्रयोग लिखे णते हैं :—

(१) वात रोग में:—खट्टा तक्र सोंठ तथा सैंधा नमक के साथ म है।

(२) पित्त में:—शक्कर मिला हुआ मधुर तक्र लाभप्रद है।

(३) कफ में:—सोंठ और पीपलि युक्त तक्र ठीक है।

(४) गाय की दही के मट्ठे को प्रर्याप्त मात्रा में पीने से भांग नशा उतर जाता है।

(५) संग्रहणी, अतिसार, और बवासीर पर, गोतक्र अति लाभ क है। रक्त शुद्ध होकर बल पुष्टि, और वर्ण सरस होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
४० दिन तक केवल गो तक्र पीने से कठिन से कठिन संग्रहणी और उदर रोग मिट जाते हैं।

(६) कोष्ठ बद्धता होने पर छाछ में अजवाइन और विड नमक मलाकर पिलाने से पूर्ण होता है।

(७) कांच चूर्ण खाने पर गोतक्र पिलाना चाहिए।

(८) कनेर के विष पर भी गोतक्र शक्कर मिलाकर पिलाना चाहिए।

(६) वायु पर पीपल और नमक मिलाकर छाछ पीनी चाहिए।

(१०) दाह के ऊपर—गाय की छाछ में कपड़ा भिगोकर उससे रोगी के शरीर का स्पर्श करता रहे इससे दाह का नाश होता है।

(११) संग्रहणी के ऊपर–गाय की छाछ में २ तोला सफेद मूसली पीसकर डाले और छाछ भात का पथ्य दे। अथवा

(१२) गाय की छाछ में सोंठ और छोटी पीपल का चूर्ण डालकर पिलावें। संग्रहणी रोग के लिए छाछ बहुत लाभदायक है।

क्षय-दौर्बल्य, मूर्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त में तक्र न पीवें।

इस प्रकार संक्षेप से हमने यहां तक्र का जादू लिखा है। विस्तार करें तो एक बड़ा ग्रन्थ लिखा जावे। घर में गाय रखें और लाभ उठायें।

एक अद्भुत योग–पंचगव्य

आयुर्वेद का सबसे महत्वपूर्ण जादू भरा यह नुसखा है। यह विचित्र योग सब वात रोगों को शान्त करता है। पेट की आंतड़ियों

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

को साफ और शक्ति शालिनी बनाता है। दिमाग की कमी को दूर करता है। मेधा वर्धक है। अपस्मार-मृगी तथा समस्त रोगों की एक दवा है।

विधि:—गाय का दूध आधा सेर, गोघृत आधा सेर, गोदही आधा सेर, गोमूत्र आधा सेर, (कई बार कपड़े से छानकर), गोबर रस आधा सेर, ये पांच चीजें लेनी।

गोबर रस की विधि:—१ सेर गोबर और एक सेर पानी मिला कर अग्नि पर इतना उबालें कि पानी समाप्त हो जावे। इस शेष गोबर को कपड़ छान करलें। आधा सेर गोमय रस निकल आयेगा। अब इन पांचों वस्तुओं को एक कढ़ाई में अग्नि पर चढ़ा दें। इतना उबालें कि केवल गोघृत शेष रह जावे। बस इस आधा सेर पंचगव्य को शीशी या किसी पात्र में सुरक्षित रख लें।

सेवन विधि:— १ तोला एक समय में लेना।
इसके सेवन से वर्षों के रोगी स्वस्थ हो उठेंगे।

बालक पहलवान और बूढ़े जवान हो जायेंगे। उदर सम्बन्धि एवं मस्तिष्क सम्बन्धि रोग नहीं रहेगा। ये गायों के पांच पदार्थ अमृत हैं। इन्हें पंचामृत कहा जाता है। सेवन करो और भाग्य का परदा खोलो।

दूध घी का भाव—प्राचीन काल से आज तक

प्राचीन काल में अर्थात् रामायण काल से पहले और महाभारत तक इस देश में दूध घी वेचने की प्रथा ही नहीं थी। सब लोग गोदान किया करते थे। राजा लोग तो लाख-लाख गायें दान में दिया करते थे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यदि उस समय इनके भाव निर्धारित होते तो राजा का दिवाला निकल जाता। उस समय इस आर्यवर्त की भूमि में इतनी गायें थीं कि लोग सब गायों का दूध भी नहीं निकालते थे। गोचर भूमियां बहुत अधिक छुटी हुई थीं और सब सैंकड़ों गायें रखते थे। अन्न भी लोग बहुत कम खाते थे। हमें इतिहास के पृष्ठों पर घी का भाव कौटिल्य अर्थशास्त्र में ही मिलता है जो ईसा से पूर्व चौथी शताब्दी का कहा जाता है। उस समय के भाव निम्न थे—

मौर्यकाल में घी बारह आने मन था। अलाउद्दीन खिलजी के शासन में १२६७ ई० में १ रुपये का। मुस्लिम सत्ता में भाव बढ़े और मुहम्मद तुगलक के समय इब्नबतूता ने अपनी भारत यात्रा नामक पुस्तक में घी का भाव १ रु० ७ आने मन लिखा है। आईने अकबरी में अकबर के समय अर्थात १६ वीं शताब्दी का भाव मिलता है—५) मन। सन् १८१० में घी सात आने सेर था। सन् १६३६ में घी काभाव ५०) मन और दूध ५) मन था। सन् १६४३ में १४०) मन घी का भाव और २५) मन दूध का भाव हो गया।

आज १६६६ ई० में घी का भाव ५२०) मन है। और वह भी आधा डालडा। इसी प्रकार भाव बढ़ता चला गया तो घी स्वप्न की वस्तु रह जायेगी। आज भारत का स्वास्थ्य इसी कारण से दिन प्रति दिन गिरता जा रहा है। आज डालडे का गोल्डन चान्स 'Golden chance' है। बनस्पति घी खा-२ कर लोग नपुंसक बनते जा रहे हैं। हमारे प्रधान मंत्री जवाहरलाल भी डालडा की बड़ाई करते थे। भारत की जनता बर्बाद हो रही है और हमारे स्वार्थी नेता और धन के प्रलोभी डाक्टर चाय और डालडा की बड़ाई करते-२ नहीं थकते। इसी बनावटी घी ने भारत की बढ़िया गायों की नस्लें भी समाप्त कर दी हैं। दिन दहाड़े गो माता पर पैना छुरा चल रहा है। १ करोड़ ३७ लाख

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गायें प्रतिवर्ष मारी जाती हैं। चौंतीस सहस्र गायें प्रति दिन कसाई की तलवार से समाप्त हो रही हैं। महाभारत काल में इस देश में ४० करोड़ गायें थीं और आज से १० वर्ष पहले १३ करोड़ गायें यहां थी। परन्तु आज सन् ६६ में २ करोड़ भी नहीं बच रही हैं। इतना गो वंश का नाश होने पर भी हम जीवित रहना चाहते हैं। लाला लाजपतराय ने ऐसी हालत देखकर कहा था:— "जब से गायें और बैल बड़ी निष्ठुरता से मारे जाने लगे हैं तब से हमें भारी चिन्ता है कि हमारे बालक कैसे जीवित रहेंगे ?

अब देश के कर्णधार स्वयं इस गोहत्या का परिणाम विचारें।

गो गरिमा

मेरी प्यारी गैय्या मैय्या, मैं तुझ पर बलिहार,
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।
माता तो दो चार साल ही दूध पिलाने पाती।
पर आजन्म मनुष्य को तू गौ माता दूध पिलाती।
क्षमा, शीलता, दया, स्नेह की तू प्रतिमा साकार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार ॥१॥

तेरे ही सुत जग के हित अन्न उत्पन्न करते हैं।
करके अथक परिश्रम केवल घास फूस चरते हैं।
तिस पर खाते हैं अपने तन पर डंडों की मार॥
मैया मैं तुझ पर बलिहार ॥२।

पंच गव्य के बिना मनुज कब स्वस्थ सबल पावन हो।
तेरे गोरस बिना निपट निस्स्वाद सकल भोजन हो।
संस्कार उत्सव यज्ञादिक तुझ बिन सब निस्सार।
मैया मैं तुझ पर बलिहार ॥३॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेदों ने भी परम पावनी तू अघ्न्या बतलाई ।
तुझे चराते फिर प्रेम से बन बन कृष्ण कन्हाई ।
नृप दिलीप पाण्डव, विराट, थे तेरे भक्त अपार ।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार ॥४॥

तेरे भक्त अनेकों हैं मुस्लिम अंग्रेज ईसाई ।
दयानन्द ऋषि, गांधी ने तेरी गुण गरिमा गाई ।
कोटि, कोटि, हिन्दू जन करते तेरी जय जयकार ।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार ।५॥

महावीर स्वामी, गौतम, प्रणवीर प्रताप, शिवाजी ।
करते रहे सदा गौ रक्षा लगा जान की बाज़ी ।
नानक गुरू गोविन्द के हृदय में था तेरे प्रति प्यार ।
मैया मैं तुझ पर बलिहार ॥६॥

सन् सत्तावन में तेरे हित कितने मरे सिपाही ।
तेरी रक्षा हित झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ।
गौ बधिकों पर टूट पड़ी ले कर में तलवार ।
मैया मैं तुझ पर बलिहार ॥७॥

करें स्नेह श्रद्धा से भारतवासी पालन तेरा ।
हो धन धान्य अमित उखड़े भय रोग शोक का डेरा ।
यत्र, तत्र, सर्वत्र शान्ति सुख का होवे संचार ।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार ॥८॥

तेरी महिमा का वर्णन किस विधि 'प्रकाश' कर पाये ।
अनन्त विस्तृत सागर, गागर में किस भांति समाये ।
इस मानव मण्डल पर तेरे हैं अगणित उपकार ।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार ॥९॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मैं मन वचन कर्म से सेवा तेरी सदा करूंगा।
तेरे लिए जिऊंगा माता तेरे लिये मरूंगा।
तेरा नाश न होने दूंगा लिया यही व्रतधार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार ॥१०॥

बन्दे-गो मातरम्

लेखक : शोभाराम कविरत्न

विश्व की जननी विभव-विस्तारिणी गोमातरम्।
शक्ति, सन्तति, सौख्य प्रद दुःखदारिणी गोमातरम् ॥
ईश की तू देन अनुपम, वन्दनीया विश्व की।
निःस्वार्थ, निर्मल, लोक की उपकारिणी गोमातरम ॥
विश्व भी बनता नहीं तब, धेनु जो होती नहीं।
कह रहे हैं वेद वसुधा-धारिणी गोमातरम् ॥
लोक क्यों परलोक में भी, तू सहायक बन रही।
हैं सिद्धियां तेरी सदा अनुसारिणी गोमातरम् ॥
चैन से कैसे रहेंगे, जो सताते मां तुझे।
हर्ष वर्धक भक्त की भयहारिणी गोमातरम ॥
प्रेम से पलती जहां, श्री फूलती फलती वहां।
निर्बलों में बल अतुल संचारिणी गोमातरम् ॥

भारतीय संस्कृति और गो माता की रक्षा का अभियान

"गावो हि विश्वस्य मातरः" गाय विश्व की माता है। सृष्टि के प्रभात से लेकर आज तक सभी महापुरुषों ने और सर्व साधारण जनता ने गाय को 'माता' की पदवी से सुशोभित किया है। 'गौर्मे माता वृषभः पितामे' 'गाय मेरी माता है और बैल पिता है' यह आदर्श आर्य संस्कृति के अनुयायियों के रोम-रोम में ओत-प्रोत है। सब

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भारतवासी वेद का वन्दन करते हैं और वेद को ही सर्व प्रथम का ग्रन्थ स्वीकार करते हैं। वेद के आदेश को अपौरुषेय समझकर प्रमाण मानते हैं और मन-वचन-कर्म से वेदाज्ञा का पालन करते हैं। सारे वेद मुक्त कण्ठ से गोमाता की महिमा गा रहे हैं। इस कारण से भी भारतीयों के लिए गो पूजा का स्थान है।

हमारी आर्य संस्कृति इस भावना से पूर्ण है कि—

'यद् गृहे दु:खिता गाव: स याति नरके नर:"

अर्थात् जिसके घर में गायें दु:खी हैं वह मनुष्य नरक में जाता है। इस लिये इस शस्य श्यामला आर्य वसुन्धरा पर बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राट गोपालन करना अपना धर्म समझते थे। चक्रवर्ती राजे महाराजे गो रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि देने के लिये उद्यत रहते थे। महाराजा दिलीप ने गो माता की रक्षा के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी। आजीवन राम ने कामधेनु की पूजा सिखलाई। महर्षि वशिष्ठ ने अपनी कामधेनु को सर्वस्व समझा। गायों और यज्ञों की रक्षा के लिए राजर्षि विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को भिक्षा में मांग लिया और वन में ले जाकर ताड़का का वध कराया। इस ऋषियों की भूमि पर भगवान् श्री कृष्ण ने गायें चराईं और गोपाल की पदवी पाई। गाय की रक्षा के लिए वीर शिवाजी ने अपनी दुष्टदमनी तलवार उठाई और जीवन भर लड़ाई की। महाराणा प्रताप ने जगंलों को छान डाला। महात्मा बुद्ध ने राज्य पर लात मारी और आजीवन गो रक्षार्थ प्रचार किया। अकबर, हुमायू, बहादुरशाह, बाबर, टीपू सुलतान, झज्जर के नवाब आदि मुसलमान शासकों ने भी गौ की कीमत को समझा। जिस समय तक भारत भूमि में गो पालन ठीक रूप से होता था उस समय वीरता घर २ में विचरती थी। परन्तु आज दुग्ध और घी के अभाव में हम निस्तेज होते जा रहे हैं। आज से २०० वर्ष पूर्व यहां अंग्रेज आया और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उसी की बदौलत इस ऋषियों की भूमि में जोरों से गो संहार प्रारम्भ हुआ। आज गोरा अंग्रेज तो चला गया है परन्तु काला अंग्रेज अभी शेष है। इसी कारण से आज भी इस देव भूमि में गो वध भारी संख्या में हो रहा है। गो माता आज भी पुकार २ कर कह रही है—हे दूध पीने वालो ! मेरी रक्षा करो। परन्तु पाश्चात्य संस्कृति की भोगवादी मदिरा का पान करने वाले इस आर्तनाद को कब सुन सकते हैं ? इन फैशन परस्तों तथा इन्द्रियों के गुलामों को गोमाता के वध करने में भी लज्जा नहीं आती। ये भोगवादी नास्तिक जो गाय को यह कह कर मारते हैं कि 'Cow has no soul' (गाय के अन्दर आत्मा नहीं है), कभी गाय न रहने पर अपने माता पिताओं को भी यही कह कर मारेंगे क्या ? ओ भोग वादी राक्षसो ! देखो तो सहो वह गाय का दूध-मुहा बच्चा, जिस के भोले चेहरे को देख कर पत्थर भी पिंघल सकता है, आज अपनी माता की गोदी को छोड़ कर तरे बटुवे, चप्पल बूट, तथा पेटियां बनाने के निमित्त अपना बलिदान कर रहा है। ओ दरिन्दे ! तूने उन भेड़ियों को भी मात कर दिया जो शिशुओं पर दया कर देते हैं। गुलामी तथा पाश्चात्य सभ्यता की जंजीरों में जकड़े हुए काले अंग्रेज ! तुम अपने गुरुओं का ही अनुभव याद कर लो देखो, राल्फ़. ए हेन लखता है—

Where the cow is kept and cared for, Civilization advances, The cow is one of the greatest blessings to the human race अर्थात जहां गोपालन होता है वहां सभ्यता का विनाश होता है। गाय मानवीय जगत के लिए ईश्वर की बड़ी देन है।'

गोघातियो ! पिशाचो !! बूटों के पूजारियों !!! सब अपने मार्ग को बदलो। तुम उस देश के वासी हो जहां पानी मांगने पर दूध मिलता था। इस देश में पहले दूध घी की नदियां बहती थीं। पर आज मांस भक्षक लोगों की दया से १॥) सेर दूध का भाव है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५२५) मन घी प्राप्त नहीं होता। यही अवस्था रही तो दूध घी के इंजेक्शन लगा करेंगे। घृत दुग्ध बोतलों में रहा करेगा। महर्षि दयानन्द के सन्देश को सुनो और दशों दिशाओं में सुना दो कि 'गो आदि पशुओं के नाश से राजा-प्रजा दोनों का नाश होता है।'

याद करो महाभारत के उस वाक्य को जो युधिष्ठिर ने आज से साढ़े पांच हजार वर्ष पहले कहा था कि 'मातरः सर्वभूतानां गावः सर्व सुखप्रदाः'-'प्राणिमात्र के लिये गायें माता के समान हैं और सुखों के देने वाली हैं।' आज से हम व्रत कर लें कि चमड़े से बनी चीजों का उपयोग न करेंगे। वनस्पति घी और चाय का व्यवहार न करेंगे। ये दोनों चीजें ब्रह्मचर्य की महान् शत्रु हैं। गोदूध और गोघृत खाने का नियम लेवें। यदि हम गोरक्षा का प्रण करेंगे तो अपने आपको और समाज को सुखी बना सकेंगे। गायें हैं तो हम हैं-ऐसा हमें निश्चय कर लेना चाहिये। अब समय आ गया है कि गोरक्षा में हम प्राणपण से जुट जायें। गायें हमारा ऐश्वर्य है। गायें जीवन है। गायें ब्रह्मचारी के ब्रह्मचर्य का मूलाधार है। गायें भारतीय संस्कृति का स्रोत है। गायें हमारी माताएं हैं।

गावो मे अग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

भारतीय संस्कृति का आदेश था कि—

मेरे आगे भी गायें हों, पीछे भी गायें हों, मेरे मस्तिष्क और हृदय में भी गायों का साम्राज्य हो और हर समय मैं गायों के बीच में रहूं।

परन्तु आज हमने अपनी संस्कृति और धर्म को छोड़ दिया। इस कारण से हमारा यह आदर्श भी बदल गया। आज हमारा आदर्श है—

कुक्कुटा मे अग्रत सन्तु मीनाः सन्तु पृष्ठतः।
अण्डानि मे सर्वतः सन्तु शुनां मध्ये वसाम्यहम्॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्थात्—"मुर्गे मेरे आगे हों, मछलियां मेरे पीछे हों, अण्डे मेरे चारों ओर हों और कुत्तों के बीच में मैं रहूं।"

आज गोदूध की बजाय अण्डे और मांस खाना अधिक श्रेष्ठ माना जाता है। अण्डों के प्रचारक अण्डों में विटामिन और प्रोटीन बहुत अधिक मात्रा में होने का दावा करते हैं और लोगों को भ्रमित करते हैं। आजकल के लोगों की हालत भी बड़ी विचित्र है—इन्हें विटामिन और प्रोटीन का नाम सुनादो—बस फिर ये अन्ट-सन्ट अभक्ष्य वस्तु को भी खाने के लिये उद्यत हो जाते हैं परन्तु कोई यह सोचने का कष्ट नहीं करता कि अण्डों में विटामिन कहां से आ गये ? मुर्गी गन्दगी या नासिका का श्लेष्मा (सिनक) खाती है फिर उसके अण्डे में कहां से ताकत आ गई ?

दुनिया के लोगो ! जरा सोचो और विचारो। तुम कहां जा रहे हो ? तुम स्वयं नरक में जा रहे हो और दूसरों को भी नरक में ले जा रहे हो।

अब समय आ गया है कि पाश्चात्य सभ्यता को समूल उखेड़ कर फेंक दिया जाये और इसके स्थान पर भारतीय सांस्कृति की स्थापना की जाये। भारतीय सांस्कृति की रक्षा किये बिना देश सुखी एवं समृद्ध नहीं हो सकेगा। ऋषियों के इस देश की पावन धरती पर दिन निकलते ही तीस हजार गायों की गर्दन पर छुरी फेर दी जाती है। जिस देश में इस प्रकार गोमाता का खून बहाया जाता हो, गो भक्तों पर गोलियां चलाई जाती हों, उन्हें जेल में डाल कर तरह-तरह की यातनायें दी जाती हों, गोमांस का खुला व्यापार हो, गो माता रो रही हो उस देश का विनाश हुए बिना नहीं रह सकता।

नीतिकारों की भविष्यवाणी है—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च व्यतिक्रमः ।
त्रीणि तत्र प्रवर्त्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥

"जहां गोमाता जैसी पूज्यों की पूजा न होती हो वहां अकाल, महामारी और शत्रुओं के आक्रमण निरन्तर होते हैं ।"

हमारे देश की भी यही अवस्था है । जब तक देश के ऊपर पापाचारी कांग्रेस अथवा किसी भी गोघातियों का राज्य रहेगा तब तक देश में इसी प्रकार से अकाल, भ्रष्टाचार और हा-हाकार मचा रहेगा। अपने ही शासन में गोमाता की रक्षा के लिए लोगों को सत्याग्रह करना पड़े और जेल जाना पड़े यह महान् आश्चर्य की बात है ।

गोमाता की रक्षा के लिए सत्याग्रह और शांत प्रदर्शनों को सरकार की ओर से राज्य के मद में आकर कुचल दिया जाये यह और भी दुःख का विषय है । ७ नवम्बर सन् १९६६ को गोमाता की रक्षा हेतु हुआ अभूतपूर्व शांत प्रदर्शन भी बुरी तरह से दबाया गया। बच्चों, स्त्रियों, वृद्धों और साधु सन्तों को भी गोली से उड़ाया गया, लाठियों से पीटा गया, अश्रु गैसों से मूर्छित किया गया । १० लाख गोभक्त जनता का इस प्रकार से अपमान किया गया । गोरक्षा सत्याग्रह में ६० हजार नर नारी जेल गये परन्तु फिर भी इस भ्रष्टाचारी गोघाती सरकार के कान पर ज्यों तक नहीं रेंगी । सच बात तो यह है कि आज दिन दहाड़े भारतीय संस्कृति और धर्म नष्ट किया जा रहे है। राम कृष्ण के इस देश को ईसाइस्तान बनाने का प्रोग्राम रात-दिन धूआंधार चल रहा है । शिखा-सूत्र धड़ाधड़ उतारे जा रहे हैं, भारतीय वेषभूषा का बाईकाट हो रहा है, ईश्वर की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं, वेदों का पठन पाठन समाप्त किया जा रहा है, यज्ञों को व्यर्थ बतलाया जा रहा है, सिनेमा के नंगे नाचों में सदाचार धक् धक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करके जल रहा है, नगरों-ग्रामों के चौराहों पर सिनेमा के एक्टर और एक्ट्रैसों के अश्लील चित्र लगाकर देश के युवकों का विनाश किया जा रहा है। रेडियों के गन्दे गानों ने चरित्र पर बिल्कुल पानी फेर दिया है, रही सही कमी सहशिक्षा पूरी कर रही है, बीड़ी सिग्रेट और शराब की नई नई फैक्ट्रियां खुल रही हैं और सरकार अपना कोष बढ़ाने में लगी हैं। अण्डे माँस का खुला प्रचार हो रहा है, गोमाता का दिन दहाड़े संहार हो रहा है, सतीत्व लुट रहे हैं, भ्रूण हत्याएं हो रही हैं, लूप का प्रचार गर्म है, सर्वत्र भ्रष्टाचार, कदाचार, पापाचार का महा-ताण्डव हो रहा है। भारत का भविष्य अन्धकारमय नजर आता है। देश का भाग्य डूबना चाहता है। क्या कहें और क्या लिखें:—

हर डाल पर उल्लू बैठा है,
अंजामे गुलिस्तां क्या होगा ?

जो देश सब देशों का गुरू था, जिस देश ने सारे संसार को सदाचार का सन्देश दिया था, जिसको सारा संसार पूजता था, हा ! हा !! आज वही नीचे गिर गया !

समय की पुकार है कि देश, जाति, और धर्म की पुनः रक्षा की जाये। जिस धर्म की ऋषियों ने विष के प्याले पीकर, गोलियां खाकर, पेट में छुरे खाकर रक्षा की, जिस गो माता की महापुरुषों ने अपना बलिदान देकर रक्षा की—क्या वह हमारे देखते-२ समाप्त कर दिये जायेंगे ? यदि ऐसा हो रहा है तो हमारे जैसा कायर और कमजोर कौन होगा ?

क्या भारत माता की रक्षा के लिए हम अपने जीवन का उत्सर्ग नहीं कर सकते ? क्या आज वीरता और साहस भारत से विदा हो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चुके हैं ? क्या हमें गोमाता से प्यार नहीं रहा ? यदि है तो बताओ कौन वेदों की रक्षा करेगा ? कौन है वह जो मैदान में आकर वेद विरोधियों से टक्कर लेगा ? कौन मातृ भूमि के उद्धार के लिए अपना शीश चढ़ायेगा ? कौन है वह जो वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए अपने जीवन को स्वाहा करेगा ? कौन है वह जो गोमाता के प्राण बचाने के लिए अपने प्राण अर्पण करेगा ? कौन वह है जो भृष्टाचार का डट कर सामना करेगा ? कौन सुभाष, शेखर, बिस्मिल, भगत, लेखराम, श्रद्धानन्द की तरह हंसते २ अपना बलिदान देगा ? यह धधकता प्रश्न है। कौन इस का उत्तर देगा ?

समय की ललकार है कि नवयुवक क्रान्ति की मशाल हाथ में लेकर आगे आयें और नव जागृति का शंखनाद बजायें और अपने स्वार्थों का परित्याग करें। नौकरी जैसी तुच्छ भावनाओं पर लात मारें और देश के उत्थान का बीड़ा उठायें। आज की 'हा नौकरी' के भयंकर प्रमाद को देख कर भारत माता पुकार रही है:—

नौकरी इस राक्षसी के फन्द में ऐसे फंसे।
निज भाव भाषा भेष तज कर जा रहे नीचे धंसे॥
हा ! राक्षसी के हाथ में निज रत्न जीवन दे दिया।
वह भूमि रोती रह गई जिसने तुम्हें पैदा किया॥

आज ऋषियों की भूमि पर अत्याचार, पापाचार; गोसंहार का साम्राज्य छाया है। इसे मिटाने के लिए और भारत मां की रक्षा लिए एक संघर्ष का बिगुल बज गया है। क्रान्ति का अभियान प्रारम्भ हो गया है। यह एक लम्बी लड़ाई लड़नी है। इसके लिये तरुणों की एक बड़ी सेना बनानी है। आर्य युवक संगठन की एक विशाल योजना बन गई है। इसमें कौन २ अपना नाम लिखायेगा ? क्या इस के लिए आप तैयार हैं ? गांव-गांव में; नगर-नगर में; प्रान्त-प्रान्त में सदाचारी युवकों

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

की परिषद् बनानी हैं। सदाचारी व्यक्तियों का संगठन करना है। इस के लिए आप तैयार हो जायें और अपना नाम शीघ्र भेज देवें।

आर्य संस्कृति की आपको रक्षा करनी है। यदि आर्य संस्कृति बचेगी तो राष्ट्र बचेगा। यदि आर्य संस्कृति मिटेगी तो राष्ट्र भी मिट जायेगा। आज तुम्हारे जीवन की आहुति वैदिक यज्ञ कुण्ड में पड़ जानी चाहिये। इस आर्य सेना के बनाये बिना देश से पापाचार नष्ट नहीं हो सकता है। कम से कम एक लाख सदाचारी, लगन शील, त्यागी तपस्वी युवक चाहियें। क्या आप अपने जीवन की भेंट वैदिक धर्म को चढ़ायेंगे ? मैं इसका उत्तर चाहता हूं ? देखें, कौन उत्तर देता है।

भरा नहीं जो भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

भारत के लालो ! वैदिक धर्म के पुजारियो !! इस पावन धरती पर खड़े होकर आज ही प्रतिज्ञा करो कि हम मिट जायेंगे परन्तु इस धरती पर गोमाता का रक्त नहीं बहने देंगे। हम बलिदान हो जायेंगे परन्तु संसार से वैदिक संस्कृति को नहीं मिटने देंगे या हम उन को मिटा देंगे जो भारतीय संस्कृति को मिटाना चाहते हैं।

अत: उठो वीरो ! वेद माता का आदेश सुनो—

उत्तिष्ठ सं नह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह।
सर्पा इतरजना रक्षास्यमित्राननुधावत॥ अथर्व० ११।१०।१

"उठो वीरो, कमर कस लो; झण्डे हाथों में पकड़ लो। जो भुजंग हैं, पराये हैं, राक्षस हैं, वैरी हैं उन पर धावा बोल दो।" आगे वीर फिर गर्जना करके कहता है—

"यदि नो गां हंसि तत्वा सीसेन विध्यामो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"यदि तू मेरी गाय को मारता है तो याद रख मैं तुझे सीसे की गोली से वेध दूंगा।"

ठीक भी है—

आज गाय के प्राण बचाने हम न चले तो कौन चलेगा ?
दानवता पाश्चात्य संस्कृति को हम न दलेंगे कौन दलेगा ?

नव क्रान्ति के इस अभियान को आप हमारी तरह तन मन धन न्यौछावर करके सफल कीजिए और अन्त में सब मिल कर कहिये—

हंसती हुई मंजिलें करती हैं इशारे।
आगे ही आगे कदम बढ़ते जायेंगे हमारे ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल

का परिचय

सर्व सज्जनों को विदित हो कि गंगा के पावन तीर्थ धाम शुक्रताल में वैदिक धर्म के प्रचार और योग साधना प्रशिक्षण के लिए वैदिक योगाश्रम एक प्रमुख महत्व पूर्ण संस्था है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्थान प्राचीन काल से सुविख्यात रहा है। आज भी यह स्थान जनता की श्रद्धा का मुख्य केन्द्र बना हुआ है। मुंजफ्फरनगर जिले का तो यह सर्वोत्तम स्थान माना जाता है। बाहर से आने वाला कोई भी आदमी अपनी यात्रा उस समय तक अधूरी मानता है जिस समय तक इस स्थान को न देख ले। इसके कारण हैं:-प्रथम सुरसरी भागीरथी गंगा का पावन तट दर्शकों को आकर्षित करता है। गंगा स्नान के अभिलाषी जन तथा सुख शान्ति के जिज्ञासु बड़ी दूर-दूर से हजारों लाखों की संख्या में यहां आते हैं। वास्तव में यह एक शान्ति का धाम है। एक ओर गंगा बह रही है, दूसरी ओर गंगा का घोर घना जंगल है। बीच के अरण्य में साधु महात्माओं के सुन्दर सुन्दर आश्रम हैं। मूर्ति पूजा और पौराणिकता का तो यह तीर्थ गढ़ है ही। इसी गढ़ में वैदिक योगाश्रम की सजीली ओ३म् पताका भी फहरा रही है और वैदिक धर्म का, आर्य संस्कृति का पावन संदेश सुना रही है। इस तीर्थ स्थान पर आने वाला कोई भी यात्री वैदिक योगाश्रम के दर्शनों से वंचित नहीं रह पाता क्योंकि यह आप का प्रिय आश्रम सबसे प्रथम विद्यमान है। शुक्रताल तीर्थस्थान में प्रविष्ट होने के लिए आश्रम के द्वार पर से ही होकर जाना पड़ता है।

CC-0. Arya Samaj Foundation / Chaman Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जितने नर नारी इस पुण्य भूमि में आते हैं उनके कानों में सबसे पह वेद मन्त्रों की ध्वनि पड़ती है और यहां से लौटते समय भी वेदों क सन्देश ही सुनाई पड़ता है।

जलवायु की दृष्टि से यह स्थान अति पवित्र है। नगरों के विषाक्त वातावरण, गन्दे नालों और मिलों के दूषित धूम्र से यह स्था पर्याप्त दूर है। तपस्या के लिए एक अद्वितीय तपोभूमि है। साधना के लिए ऐसा स्थान मिलना दुर्लभ है। दूर-दूर से यहां साधक योग साधन करने के लिए आते रहते हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी यहां एक बार तीन दिन की समाधि लगाई थी।

पक्की सड़क बिजली, डाकखाना, पुलिस चौकी आदि सभी आधुनिक साधन यहां प्राप्त हैं। आश्रम के द्वार पर ही बस, रिक्शा, टां आदि उपलब्ध होते हैं। मुजफ्फरनगर से यहां प्रतिदिन बसें आती हैं। यातायात के लिऐ यहां कोई कष्ट नहीं है।

आश्रम की स्वामिनी रजिस्टर्ड कार्य कारिणी सभा है जिसक वार्षिक निर्वाचन होता है। आश्रम के साधारण सदस्यों का शुल्क २५) वार्षिक है, आजीवन सदस्यों का शुल्क १०१) मात्र है, १०००) एक मुश्त देने वाले हितैषी (Benefactor) सदस्य कहलाते हैं, दो सहस्र रुपये एक मुश्त देने वाले या आश्रम में भवन बनवाने वाले संरक्षक (Patron) सदस्य कहलाते हैं। और ५०००) एक मुश्त या दो वर्ष के भीतर देने वाले धर्म-रक्षक सदस्य माने जाते हैं।

आश्रम के विशेष आकर्षण

(१) योगासन, प्राणायाम तथा योगसाधन का प्रशिक्षण दिया जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(२) प्रतिदिन यज्ञ-संध्या तथा सत्संग-उपदेश होता है।

(३) वेद-शास्त्रों के पठन पाठन की सुन्दर व्यवस्था है। युवक छात्रों के लिए उपदेशक महाविद्यालय है।

(४) औषध उपचार के लिए धर्मार्थ औषधालय भी है।

(५) वैदिक साहित्य के अनुशीलन के लिए वैदिक पुस्तकालय है और प्रचारार्थ सस्ता साहित्य भी यहां से उपलब्ध होता है।

(६) माताओं के लिये भी ठहरने और साधना स्वाध्याय की व्यवस्था है।

(७) वर्ष में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर, साधना शिविर और आर्य महा सम्मेलन आदि का आयोजन होता रहता है। कार्तिक शुदी दशमी से कार्तिक पूर्णिमा तक गंगा स्नान के मेले के अवसर पर प्रत्येक वर्ष आश्रम का वार्षिक महोत्सव होता है।

(८) आश्रम में व्यक्तिगत कुटियाएं भी बनाई जा सकती हैं।

इस प्रकार यह आश्रम वैदिक संस्कृति की रक्षा में रात दिन जुटा हुआ है और प्रभु प्राप्ति के पावन पथ से भटके हुए मानवों को सच्ची राह दिखा रहा है। साधना प्रेमियों के लिए तो यह एक केन्द्र बन गया है। योग जिज्ञासु यहां से विशेष लाभ उठा सकते हैं। वान-प्रस्थी तथा सन्यासी महानुभाव भी यहां उपदेशक बनने की सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

अन्त में सब महानुभावों से प्रार्थना है कि इस आश्रम से लाभ उठायें और इस की उन्नति में तन, मन और धन से सहयोग करें।

निवेदक :

ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक

संस्थापक-वैदिक योगाश्रम,

शुकताल, [मुज़फ्फ़रनगर] उ. प्र.

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल में

गुरुकुल महाविद्यालय

सर्व सज्जनों को यह जानकर हर्ष होगा कि वैदिक योगाश्रम शुक्रताल जिला मुजफ्फरनगर में वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिये उपदेशक महाविद्यालय तथा गुरुकुल प्रारम्भ हो गया है जिसमें वेदशास्त्र, उपनिषद्, व्याकरण, संस्कृत साहित्य एवं सब धर्मों का पठन पाठन कराया जायेगा। गुरुकुल में १२ वर्ष का बालक प्रविष्ट हो सकेगा परन्तु उपदेशक महाविद्यालय में दसवीं श्रेणी उत्तीर्ण युवक छात्र ही प्रवेश पा सकेंगे।

गुरुकुल महाविद्यालय में श्री मद्दयानन्द आर्ष विद्या-पीठ की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य की परीक्षाएं हुआ करेंगी। इन परीक्षाओं का गुरुकुल महाविद्यालय केन्द्र स्वीकृत हो गया है

श्री ब्रह्मचारी देव मित्र जी शास्त्री, एम॰ ए., विद्या भास्कर, गुरुकुल महाविद्यालय के आचार्य हैं और उनके सहयोगी व्याकरण महाभाष्य के विद्वान श्री ब्रह्मचारी याज्ञवल्क्य जी हैं। प्रवेश प्रारम्भ हो गया है अतः गुरुकुल प्रेमी महानुभाव अपने बालकों को भेजने में शीघ्रता करें। प्रवेश नियम आश्रम से पत्र व्यवहार करके मंगायें।

नोटः—गुरुकुल में जीवन निर्माण एवं सदाचार पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

भजन मण्डली

आश्रम की ओर से श्री शंकर पाल जी आर्य की भजन मण्डली प्रचारार्थ नियुक्त कर दी गई है। प्रचारक मण्डली को उत्सव विवाह आदि संस्कारों में भी बुलाया जा सकता है। मण्डली के इच्छुक आश्रम से पत्र व्यवहार करें।

निवेदक :

ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आर्य समाज के नियम

-सब सत्य विद्या, और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

-ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना, सब आर्यों का परम धर्म है।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वथा उद्यत रहना चाहिये।

सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

सब से प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लेखक की दो अन्य अनमोल पुस्तकें

१—ब्रह्मचर्य सन्देश [मूल्य ५० पैसे

लेखक—ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक
वैदिक योगाश्रम शुक्रताल
जिला मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

'ब्रह्मचर्य प्रेमियों के लिये अमूल्य पुस्तक है। एक बार पढ़ लेने के बाद हृदय सागर में ब्रह्मचर्य की तरल तरङ्गें तरङ्गित हो उठती हैं। भारत के नवयुवक और नवयुवतियों को इस पुस्तक से जीवन की सच्ची राह मिलेगी।

२—भारतीय संस्कृति और यज्ञोपवीत

यज्ञोपवीत के ऊपर एक अभूतपूर्व पुस्तक है। यज्ञोपवीत क्यों पहनें? यज्ञोपवीत का क्या अर्थ है? यज्ञोपवीत का वेद शास्त्र में क्या महत्व है? भारतीय संस्कृति और यज्ञोपवीत का क्या सम्बन्ध है—इत्यादि पचास से अधिक विषयों का स्पष्टीकरण पुस्तक में है। उपदेशक के लिए भारतीय संस्कृति, यज्ञ और यज्ञोपवीत पर बोलने के लिए कम से कम एक मास की सामग्री है। इस पुस्तक को पढ़कर प्रत्येक भारतीय वैदिक संस्कृति के आगे नतमस्तक हो जाता है। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक ने झंकार प्रेस मुजफ्फरनगर में मुद्रित कराकर वैदिक योगाश्रम शुक्रताल से प्रकाशित किया।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida